Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उड़ जा रे पंछी महाविदेहमें

● धरणेन्द्रसागर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प. पू. आचार्यदेव श्री श्री १००८ मद्विजय वल्लभसूरीश्वरजो
महाराज साहेब के समुदाय के प. पू. विदुषी सा.
श्री कल्याणश्रीजी म. सा. की सुशिष्या

जन्म
वि.सं. १९८०
जोधपुर

दीक्षा
१९९५
जोधपुर

बडी दीक्षा
वि सं. २०००
वरकाणातीर्थ

स्वर्गवास
२०३५
जोधपुर

शान्त स्वभावी प.पू. श्री सम्पतश्रीजी म. स.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उड जा रे पंछी महाविदेह मै

संग्राहक

धरणेन्द्र

प्रेरक

संपत्श्रीजी की प्रेरणा से

बखारोंकी धर्मशाळा, जोधपुर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

	वीराब्दाः	विक्रमसंवत्सरम्	ख्रिस्तिसन्
प्रारब्धम्-समाप्तम्	२५०५	२०३५	१९७९

© लेखक के स्वाधीन

प्रेरक : संपत्श्रीजी
बखारोंकी धर्मशाळा, जोधपुर (राजस्थान)

प्रकाशयिति : श्रीसीमंधरस्वामि जिन मंदिर खातु,
नेशनल हाईवे रोड, महेसाणा

मुद्रक : के. भीखालाल भावसार
श्री स्वामिनारायण मुद्रण मंदिर
४६, भावसार सोसायटी,
नया वाडज, अहमदाबाद-१६.

प्रतयः—एकसहस्रः... मूल्यममूल्यम्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अप्राप्तनी प्राप्ति काजे

मोर मेह रवि कमळ जिम,
चंद्र चकोर हसंत;
तिम दूरेथी अम मनह,
तुम समरण विकसंत''
मनमंदिर मोरे आवीए.....

ओ मारा हैयाना हार ! प्राणाधार ! त्रिभुवनबंधु ! करुणासिन्धु ! पनोता परमेश्वर ! पधारो पधारो, आप आ दासना मनमंदिरमां पधारो. आप सत्वरे पधारो. ओ परमकृपालु ! अमारी आ एक अरज अवधारो, आप अमारा मनमंदिरमां पधारो.

ओ अतिशयवंता अरिहंत ! आप सत्वर अमारा मनमंदिरमां पगलीयां करी एने पावन करवा कृपा करो.

ओ भुवनगुरु भगवंत ! शुं आ दासनी आटली पण अरज उर नहि धराय ? मान्य नहि थाय !

अप्राप्तनी प्राप्ति काजे मनुष्य युगना उगम काळथी प्रयत्नशील रह्यो छे, अने रहेवानो छे. ए दुर्लभने सुलभ करवा मागे छे अने अलभ्यने लभ्य करवा मांगे छे.

अप्राप्त पदार्थ बे प्रकारना होई शके : एक तो आत्माने उपयोगी उपकारक अने बीजा आत्माने अनुपयोगी (संसारने उपयोगी) आत्माने उपयोगी तत्त्वो आम तो एक नहीं अनेक छे, पण सर्वमां शिरोमणि छे 'परमात्मा'.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आत्माने उपयोगी तत्त्वोमां परमात्मतत्त्वनी जे प्रधानता छे, ते बीजा कोईनी होई शके नहीं. शुं कहो छो ? हां...हां...आ एक नक्कर सत्य हकीकत छे. जुओने परम + आत्मा = परमात्मा. आम परमात्मा शब्दथी आ वात सूचित थई जाय छे, केम के आत्मा उपरथी ज ए शब्द बनाववामां आव्यो छे. वास्तवमां तो परमात्म दशावाळो आत्मा ज 'आत्मा' शब्दने लायक छे ते विनानो आत्मा ए 'आत्मा' शब्दने लायक गणी शकाय नहीं, तेम छतां, मेघमाळाथी आच्छादित (ढंकायेलो) एवो सूर्य, मेघमाळाना रसाळानी विदाय पछीना समयनी अपेक्षाओ जेम सूर्य कहेवाय छे अथवा तो माटीमां मळेलुं पण सुवर्ण शुद्ध सुवर्ण थवानी अपेक्षाओ जेम सुवर्ण कहेवाय छे. तेवी ज रीते आत्मा पण भविष्यमां प्राप्त थनारी (परोक्ष मटी प्रत्यक्ष थनारी) परमात्म दशानी अपेक्षाने लक्ष्यमां राखीने आत्मा कहेवाय छे—'आत्मा' शब्दने लायक गणाय छे.

आत्मा ओ प्रकाशनो एक नानकडो किरण बराबर छे, परमात्म-दशा ए अफाट प्रकाशनो पुंज छे. परमात्म दशा ओज आत्मानुं रहस्य छे—तत्त्व छे–ओनुं सर्वस्व छे. चंद्रने जोतां ज जेम सागरनां नीर उछाळा मारे छे ते ज रीते परमात्मानां (बिंबनां) दर्शन थतां ज आत्मा पागल बनीने नाची ऊठवो जोईए, केम के जेम चंद्रनी उत्पत्तिनो सागर साथे संबंध मनाय छे, तेम परमात्मदशाने। पण आत्मानी जोडे संबंध छे ते सबंध ओवो तो गाढ छे, के जाणे क्षीर–नीर अने दूध-साकर के पछी तेथीय वधारे.

"आतम परमातम पद पावे, जो परमातम शुं लय लावे" चिदानंदजी महाराजना आ शब्दो छे, पण ओ परमात्मा वसे छे क्यां ? नाम-स्थापना द्रव्यनिक्षेपाओथी तो ए परमात्मा अहीं आपणा भरतक्षेत्रमां मळे पण भावनिक्षेपोवाळा अरिहंत परमात्मानो साक्षात्कार तो 'महाविदेहनी' मुसाफरी विना हालमां कयांय शक्य ज नथी.

त्रण निक्षेपा (भेदो) तो भरतनी भूमि पर प्राप्त थाय पण चतुर्थ भावनिक्षेपो तो अहीं सर्वथा अप्राप्त छे अने एनी जे उपकारकता छे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ते चारेय निक्षेपाओमां खरेखर उत्कृष्ट कोटीनी छे, माटे ज अप्राप्त परमतत्त्वनी प्राप्ति काजे भरतक्षेत्रनो भाविक भक्त घणी वार तलपापड बनतो होय छे.

पण ए 'अप्राप्त' तो बीजी वार 'अप्राप्त'मां रहेलुं छे, केमके अप्राप्त छे 'साक्षात् अरिहंत परमात्मा' अने ए पाछा वसे छे अप्राप्त एवा महाविदेहनी मांह्य महाविदेह छे अत्यंत दूर, एवी मुसाफरी छे जोखमोथी भरपूर पण भक्त तो बनेलो छे भगवंतना विरहमां चकचूर. सती-शिरोमणि सत्यकीना नंदनने ए नयणे निहाळी भले न शके पण अेना मनमंदिरमां पधारवा तेडुं शाने न आपी शके.

ओ सत्यकी राणीना नंद ! अमारा मनमंदिरमां अेक वार पधारी आप अमने आपो आनंद. ओ राजवी शिरोमणि श्री श्रेयांस महाराजाना कुल गगनमां चांद समान ! मनमंदिरमां पधारतां अमे आपनुं करीशुं अनेरुं बहुमान. आप तो मान-अपमानथी रहित छो, पण ओ देवाधिदेव स्वामिसीमंधर ! छतां अमे तो अमारा भावना झराने ए रीते सफळ करशुं ज खरेखर....."

अमारा देशमां आपना जेवा ज्ञानी-केवलज्ञानीओनो विरह छे हडहडतो, अमने अमारी मुशीबतोमांथी मार्ग नथी ज जडतो. जुओ : आ सेवकनो चहेरो छे रडतो, अेने आप केम अेम राखो छो रडतो ?"

"मेरुगिरि लेखिणी आभ कागळ करुं,
क्षीर सागर तणां दूध खडिया भरुं;
तुम्ह मिळवातणा स्वामी ! संदेशडा,
इंद्र पण लिखीय न शके अछे एवडा....."

बीजा विहरमाण विश्वाधार विभुओ आपनाथीय आगळ छे, भक्त तो 'सीमन्धर'मां पागल छे. "दया करो देव ! मारी स्वीकारोने सेव..."

भक्तने तो प्रभुनुं 'नयन प्रत्यक्ष'-साक्षात् दर्शन जोईअे छे, जाणे के, पोते भरतक्षेत्रने विकराळ पचमकाळनो, बाह्य अने अभ्यंतर उभय रीते

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

એક અતિવામન સ્વરૂપવાળો માનવી હોવા છતાં મહાવિદેહના વતની મહિમાવંતા ५०० धनुष प्रमाण कायावाळा अत्यन्त विराट स्वरूपी परम-तारक परमात्मा सीमन्धरस्वामीना चरणांभोजने, पोताना श्रावण भादरवाना वरसादने याद करावतां, परम हर्षना अश्रुओथी झरतां लोचनोथी साक्षात् नवडावतो न होय ? पण ओ परिस्थिति प्रगट थाय एना पहेला, एना मनमां ओ प्रभुनुं 'मानस प्रत्यक्ष' कोई अजब–गजबनुं एवुं थाय छे के न पूछो वात.

मारा मनभां सीमन्धर, मारा तनमां सीमन्धर,
मारा वचनमां सीमन्धर, मारी मतिमां सीमन्धर,
मारा भोजनमां सीमन्धर, मारा पानमां सोमन्धर,
मने बधे ज देखाय सीमन्धर,
मने बीजुं क्यांय कशुं ज न देखाय सिवाय एक सीमन्धर.
आकाशमांय सीमन्धर अने अवनीमांय सीमन्धर
ऊंघतां य सीमन्धर अने जागतां य सीमन्धर
शब्दमां य सीमन्धर अने शून्यमां य सीमन्धर
जडमांय सीमन्धर अने चेतनमां य सीमन्धर
प्रतिमामां सोमन्धर अने व्यक्ति व्यक्तिमां य सीमन्धर
सोमन्धरना भक्तमां य सोमन्धर,
यावत् सीमन्धरना
भक्तना भक्तमां य सीमन्धर
मारा हृदयना धबकारे धबकारमां सीमन्धर
अने नाडीना झंकारे झंकारमां य सीमन्धर,
बस बधे एक सीमन्धर ज सीमन्धर
'सीमन्धर'नो चाले छे अजपा जाप,
एमां खपी जाय वधा पाप अने चाल्या जाय सघळा संताप....

अवन्तिना राजकुमार कामगजेन्द्रने प्रेरणा अने प्रकाश आपनार ए प्रभु पोते भले ज 'सीमन्धर' (सीम = मर्यादा तेने धारण करे ते) होय,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पण एमना दासनुं उपरोक्त रटण तो पछी अ-सीमन्धर (अमर्याद) ज होय. त्यार बाद एनोय जो काभगजेन्द्रादिनी जेम कोई महाभाग्यनो योग होय. तो ए महामोंघा प्रभुनो साक्षात्कार पण थाय.

शुं आपणे पण केाई अेवा महाभाग्यशाळी कोई दि थई शकीअे खरा ? ही.. ही...ही...केवुं हसवुं आवे तेवी आ वात छे? छे ने ? क्यां आपणा जेवा परम पामरो अने क्यां अे परमेश्वर अने तेमनुं मिलन महाविदेहना महेमान शे थई शकाय ? न जइ शकाय आकाशमार्गे के न जइ शकाय अवनीमार्गे, पूर्व महर्षिओए अे ज वातने एमनां काव्योमां खूब ललकारी छे हो...आ रह्यां ते काव्यो—

"हुं तो भरतने छेडले, प्रभुजी कांई विदेह मोझार हो मुणिंद
डुंगर वच्चे दरिया घणा, कांई कोश तो कांई हजार हो मुणिंद
श्री सीमन्धर साहिबा..."

—वाचक रामविजयजी

"दुर्गम म्होटा डुंगरा म्हारा व्हालाजी,
नदी नाळानो नहि पार जईने कहेजो म्हारा व्हालाजी;
घांटीनी आंटी घणी म्हारा व्हालाजी,
अटवी पंथ अपार जईने कहेजो म्हारा व्हालाजी."

—वाचक उदयरत्नजी

"महाविदेहे रे स्वामी तुमे वसो, पांख नहि मुज पास,
किण पेरे आवी पाप आलोईअे ! मनमां रह्यो विमास"

—अज्ञातकर्तृक

"साहेब सुखदुःखनी वातो म्हारे अति घणी,
साहेब कोण आगळ कहुं नाथ ?
साहेब केवलज्ञानी प्रभु जो मळे,
साहेब तो थाउ हुं रे सनाथ...एक वार मळोने मारा साहिबा.

—आ. श्री. ज्ञानविमळसूरिजी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आवी विकट परिस्थितिने ध्यानमां लइ घणा भक्तवर्योओ तोरजनीना राजा श्री चंद्र जोडे ज पोताना प्राणाधार प्रभुने प्रेमभर्यो संदेशो पाठव्यो :

"कहेजो वंदन जाय दधिसुत ! कहेजो,
महाविदेहमां स्वामी मेरो जय जय त्रिभुवनराय दधिसुत."

—न्यायसागरजी

"सुणो चंदाजी ! सीमन्धर परमातम पासे जाजो,
मुज विनतडी, प्रेम धरीने अेणी पेरे तुम संभळावजो."

—श्री पद्मविजयजी

"चंद्रदेवता ! एक हमारी अरज चितमे धरनाजी,
सीमंधर जिनवरको वंदन खूब विदित तुम करनाजी"

(लेखक पोते)

आम छतां चंद्रदेवता प्रभुने प्रेमभर्यो संदेशो पाठवे एनी खातरी शी ? अेटले केटलाक भक्तोअे तो प्रभु साक्षात न मळे तो कांई नहि पण सर्व रीते तेमना अर्थ शणगारेला पोताना मनमंदिरमां तो अवश्य पधारवा विनंती करी.

"मनमंदिर मोरे आवीए, श्री सीमंधर भगवंत रे,
करुणाकर ठाकुर माहरा, भयभंजन तु भगवंत रे
मनमंदिर मोरे आवीए."

—नयविमळजी

पण अेक भक्तकवि तो एमनाथीय चार डगला आगळ वधी गया अने खुद प्रभुने साक्षात् भरतक्षेत्रमां ज पधारी जवा तेमज तेओश्री अहीं पधारता पोताने सर्वसंगनो त्याग करी ए 'सत्यकी सुत' स्वामीना चरणकमळमां सर्वविरति चारित्र लेवानुं पण विनंतिना रूपमां जणाव्यु.

"श्री सीमंधर जग घणी, आ भरते आवो;
करुणावंत करुणा करी अमने वंदावो."

—कविवर्य श्री भाण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वृषभलंछनधारी श्रीयुत् सीमंधरस्वामिजी भरतवासीओनां मात्र वंदनीय ज छे अेम नहीं, दूरथी दूर रह्या होवा छतां अनंतानंत उपकारी पण छो केमके श्री रायपसेणी, श्री औपपातिक, श्रीज्ञातांधर्मकथा तेम ज श्री उपासकदशांग इत्यादि कैंक आगमोनी वाणी प्रमाणे अनेकानेक भव्य आत्माओ के जेमणे जन्मग्रहण तेमज अद्वितीय आराधना भरतक्षेत्रमां करी छे छतां तेओ मुक्तिपुरीनी भहेमानगीरी तो अे महाविदेहना वासी श्री सीमन्धर साहेबना चरणकमळमां साक्षात् भ्रमर बन्या पछी ज पाम्या या पामवाना छे.

आवा अनंतानंत उपकारी उक्त अप्राप्त प्रभुने प्राप्त करवाना कोड कोने न जागे ! पण अेमने प्राप्त करवानी कोरी वातोथी तो वखत जाय. कांई अंतरनी इच्छा पूरी न ज थाय. तो पछी अंतरनी इच्छा पूरी थाय शी रीते ? अेना माटे तो उत्कट साधना अने आराधना जोईअे, अनन्य भक्ति जोईए. अनन्य भक्ति करतां शक्ति-अशक्तिनी वातो वेगथी छोडी देवी जोइए. अनन्य भक्ति केरो विधि श्री लक्ष्मीसूरीश्वरजी महाराजे श्री सीमंधर स्वामीना चैत्यवंदनमां जणाव्यो छे (जे आ ज पुस्तकमां अन्यत्र आपेल छे) जरूर पढे तो अेनाथी पण आगळ वेघडकपणे वधवुं जोईए. शुं आपणने कोईने पण अेवी झंखना जागती नथी के एक वार पण अे देवाधिदेव परमतारक परमात्मा भावजिनेश्वरने प्रत्यक्ष रूपमां भेटीअे नहि के परोक्ष रूपे.

श्री सीमन्धरस्वामी भगवंतने प्रगटपणे भेटवाना कामने आपणे बधा जेटलुं कपरुं मानीए छीअे तेटलुं ते नथी ए एक नक्कर सत्य हकीकत छे. अथवा तो तेटलुं कपरुं होय तोय भले पण तो पछी ते बधाना माटे नहि, परंतु प्रमादग्रस्त, विलासग्रस्त भयग्रस्त, निःसत्त्वताग्रस्त जीवोने माटे छे. जेमनामां सावधानी, विलासितानो अभाव, सात्त्विकतानो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सद्भाव, मनमां अजब श्रद्धा तेमज तनमां गजब पुरुषार्थ होय तेमना माटे ते अथवा अन्य पण तेवुं काम कोई काळे कपरुं थई शके नहीं. एनां प्रमाणो तो एटलां बधां छे के जे गण्यां गणाय नहीं, वीण्यां वीणाय नहीं तोय विश्वना सग्रहालयमां समाय छे.

गमे तेम हो ए परमप्रभुनी प्रगट प्राप्ति भले जरा आगळनी वात होय तो पण अहीं रह्यां रह्यां आपनी अनन्यभक्ति करी शकाय छे, ते कोईनाथी नकारी शकाय तेम नथी. पहेला 'मनमंदिर'ने अपूर्व रीते दया-क्षमा-भक्ति-प्रीति-मैत्री-मृदुता इत्यादि गुणरूप रंगबेरंगी रंगो तेम ज चित्रविचित्र चित्रोथी आबेहूब शणगारीने त्रिभुवननाथ श्री प्रभु सीमंधर स्वामीजीने त्यां पधारवा भावभर्युं आमंत्रण नहि, निमंत्रण आपीए. भावनानी पींछीथी हृदयपट पर प्रभुनी नयनरम्य छबीने उपसावी तेमनी अनुपम उपासना करीए. १०० क्रोड एटले १ अबज जेटली विराट संख्यानो जेमना साधु भगवंतोनो परिवार छे, तेटली ज संख्यामां जेमां साध्वीजी-ओनो परिवार छे १० लाख जेटला केवळी भगवंतोनो परिवार शोभा-यात्राने वधु शोभाय राखे छे. यावत संख्यातीत (असंख्य) श्रावक श्राविकाओ जेमना शासनने वफादार रहीने स्वजन्मने सार्थक करी रह्या छे ते पुडरीकिणीपुरीना पति श्रीसीमन्धरस्वामिजी जयवंता वर्तो.

पुक्लावती विजयमां जे विजय वर्तावे छे ते विश्ववंद्य विभु सीमन्धर छे, बीजी पण विजयोमां विजय वर्तावतां विश्ववंद्य विहरमाण विभुओ पण सीमन्धर छे. श्रेयांस महाराजाना जे लाडकवाया छे ते स्वामि सीमन्धर छे. नाभि आदि महाराजाओना जेओ लाडकवाया छे तेओ पण स्वामि सीमन्धर छे. महासती सत्यकीजीना जे नयनदीपक छे ते स्वामि सीमन्धर छे, महासती त्रिशलाजी आदिना जेओ नयनदीपक छे तेओ पण बधा स्वामिसीमन्धर छे.-आम व्यापक दृष्टिथी ध्यानसृष्टि थतां तेमज 'सविजीव करूं शासनरसी'ना परिणाम प्रगटतां ध्याता पोते पण सीमंधर बनी शके छे. दूर-सुदूर रहीने अनन्य भक्तिपूर्वक श्री सीमन्धरजीने जेओ भजे छे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेओ आ भवमां नहीं, तो आगामी भवमां पण श्री सीमन्धरश्रीने प्रगटपणे भेटी शके छे. अनुभवीओनां वेण छे के द्रव्य–भाव बन्नेनी अपेक्षित अनन्य भक्तिनो संयोग सधातां आ क्षेत्र अने आ काळमां पण वहाला सीमन्धर-जीनुं समवसरण सहित स्वप्नदर्शन तो सुपेरे थई शके छे.

आवी ज कोई अनन्यभक्ति द्वारा अप्राप्तनी प्राप्ति काजे तरफडतां प. पू. आ भगवंत श्री कल्याणसागरसूरीश्वरजीना सुप्रयासनी आ एक पुनरावृत्ति छे. "श्री सीमन्धरस्वामी स्तवनादि समुच्चय" श्री सत्यकीर्तिनंदन विभुविषयक प्राचीन–अर्वाचीन प्राप्य–अप्राप्य जेटलुं पण साहित्य मळे ते एकत्र करी स्व–परना परम कल्याणमां कारणभूत थवानी तेओश्रीनी भैत्रीभावनानुं आ प्रकाशनमां दिव्यदर्शन थाय छे. पूज्यश्रीए पत्रमां जणाव्युं हतुं के "जेम बने तेम परमतारकश्रीना अनन्तानन्त गुणो तथा उपकारोनुं तादृश चित्र प्रस्तावनामां खडुं थाय ते रीते लखवानुं लक्ष्यमां लेशो." पण आ पामर जीवनी एवी तो शक्ति क्यांथी होय के जेथी तथा प्रकारनुं 'तादृशचित्र' खडुं करवामां तेने सफळता सांपडे ! तेम छतां ते दिशामां यत्किंचित करवा आ एक निष्फळ प्रयास कर्यो छे, ए दृष्टिए के आचार्य भगवंतने कदाच कंईक पण संतोषनी प्राप्ति आ शब्दोनी हारमाळाथी थाय.

अहा...भक्तिनी शक्तिनी बधानी आगळ कई रीते पण करवी अभिव्यक्ति ? 'महेसाणामां स्वामी सीमन्धर' शब्दोथी 'सकलतीर्थवंदना' स्तवनमां जेनी नोंध लेवाई छे ते विराटकाय अने समग्र एशियाखंडमां अजोड एवुं 'श्री सीमन्धरस्वामी जिनमंदिर' बहारनी दुनियाने भले आरसपहाणना एक पिंडरूपे जणाय, पण वास्तवमां तो अे पूज्यश्रीना हृदय हिमालयमांथी खळ खळ खळ करती अने कोई सीमंधर महासागरनी दिशामां अविरत वहेती भक्ति गंगाना प्रगाढ फेणोनो पिंड भावनानो कोई जीवंत झरो होय अेम ज भावुकोने मन भासे छे 'त्यारे सीमन्धर शोभा तरंग' (सीमन्धरस्वामिजीनो महिमा दर्शावतो एक सार्थ प्राचीन गुजराती

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रससभर रास)नुं प्रकाशन पण ए भक्तिरक्त हैया प्रत्ये अत्यंत अनुमोदना जगाड्या विना रहेतुं नथी.

जेम कळा ए कलानिधि (चंद्र)नी तेमज प्रभा ए प्रभाकर(सूर्य)नी शोभा छे तेम प्रस्तावना ए ग्रंथनी शोभा छे. सदर ग्रंथमां एकला श्री स्वामी संबंधी ज विपुल साहित्य छे जेमां सवा सो गाथाना अने साडा त्रणसो गाथानां गजबनाक स्तवनो तेमज 'श्रीशोभातरंग आदि महत्त्वनां छे. उपरांत २० विरहमाण जिननी पूजाओ तेमज स्तवनेा, श्रीशीलरत्न सूरीश्वरजीकृत चमत्कारपूर्ण रचनावाळी संस्कृत चैत्यवंदन चोविशी, नवपद-जीनां चैत्यवंदनो यावत् विमळाचळजी अने वर्तमान चोविशीना बधा भगवंतोनां स्तवनेा पण साथे आपीने आ ग्रंथने खूब ज उपयोगी बनाववामां आव्यो छे.

आजकाल नवसर्जन(?)ना नवां नवां पुस्तको थोकबंध भावमां बहार पडे छे त्यारे पूर्वाचार्योनेा आवा प्राचीन अने बहुमूल्य साहित्यने अेकत्र करी प्रकाशित करवानी मंद जेवी जणाती प्रवृत्ति माटे अंतरमां अहोभाव जागृत थया वगर रहेतो नथी. विशेष करीने प्राचीन धुरंधर जैनाचार्यो रचित संस्कृत-प्राकृतिक दुर्गम साहित्य (के जेमांनु केटलुंक ता जीर्णप्राय अवस्थामां छे) प्रगट करवानी खास जरूरियात छे आटलुं सामयिक सूचन अस्थाने गणाशे नहीं.

प्रान्ते प्रस्तुत ग्रन्थ सौने अप्राप्त (परमात्मा अने परमपदनी) प्राप्तिकाजे खूब खूब उपयोगी निवडो एवी मंगलकामना सेवी विरमुं छुं.

"जाणतां के अजाणतां, जे जिनवचन विरुद्ध;
कह्युं कांई तेनो हजो, 'मिच्छामि दुकडं' शुद्ध"

—आ.दे. श्री महेन्द्रसूरीश्वर चरणांभोज भृंग

श्री सिद्धाचल शणगार जैन टूंक घंटीपाग प्रतिष्ठा दिन (सं. २०३४ फागण सुद ४ ने रविवार)

मुनि मणिप्रभविजय (रत्नपुंज)
तखतगढ, मंगल भुवन, पालीताणा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री वीर संवत २४९८ना द्वितीय वैशाख सुदि ६ ने गुरुवारे शुभ मुहूर्ते परम पूज्यपाद आचार्यदेव श्री कैलाससागरसूरीश्वरजी महाराज-श्रीना शुभ सानिध्यमां महेसाणा नगरे श्री पुंडरीकिणी महानगरीमां अनन्तानन्त परमतारक देवाधिदेव श्री सीमन्धरस्वामिना आत्मानी अंजनशलाका प्रतिष्ठाना पुण्य प्रसंगे—

सकारादि सकारप्रारम्भक स्तुतिचक्र

सद्भावे समरो सदा, श्री सीमंधर सुनाथ
स्वर्ण शरीरे शोभता, शिवपुरनो संगाथ,
सर्वसत्त्व सुंहकरू, शासन स्थापे जिनराज
सयोगीना स्थानके, शासनना शिरताज. (१)
सद्गुण सिन्धु सेवीए, शुचि सर्वांग शरीर.
सागरवर समता तणा, स्वर्णाचल समधीर
शशिकरवत् सुशीतल सूर्य समान सतेज
शचीपति सुरगण सेवना, सारे सर्व सहेज. (२)
श्याम सुगंधित स्वामिनो, समुप्रमाण शरीर
स्वामिना सुनयनथी, सदा स्रवे समक्षीर
सुखवाणी शुभवदनथी, शमवे, सहु संताप.
समवसरणे सांभळे, सर्व समय सावधान. (३)
समवसरणे शोभता, सातिशय शुभसोह.
सर्वघाति संहारिया सर्वोतम संजोग.
सुप्रतिहारज स्वामिने, सेवे सुरनर नाथ.
सकल सत्त्व (विश्व) शिवकरूं समचतुरख संस्थान (४)
सत्यकी सुत सोहमणो, श्री श्रेयांस सुजात
सांप्रत समये सर्वना, संशय संहरनार
सविज्ञाता सविदंसणी स्थापक संघ सल्हाण.
सूरिसागरकैलासजी, शिष्यनुं सत्कल्याण. (५)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दो शब्द

मुनि प्रवर श्री धरणेन्द्रसागरजी महाराज साहब द्वारा संग्रहित "उड जा रे पंछी महाविदेह में" पुस्तक के संबंध में दो शब्द लिखने का निर्देश प्राप्त कर स्वयं को सौभाग्यशाली समझता हूं। मुनि प्रवर ने हिन्दी भाषा में निरंतर प्रातः स्मरणीय श्री सीमन्धरस्वामी की आराधना पर उक्त पुस्तक तैयार कर अेक महत्ती आवश्यकता की प्राप्ति की है।

श्री सीमन्धरस्वामी परमात्मा का जन्म महाविदेहक्षेत्र के पूर्व विदेह प्रदेश में पुष्कलावत विजय के पुंडरिकगिरि नगर में वर्तमान चौवीसी में सत्रहवें तीर्थंकर श्री कुंथ नाथ और अठारहवें श्री अरनाथ के मध्यकाल में हुआ और बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत और इक्कीसवें श्री नमीनाथ के मध्यकाळ में दीक्षा हुई। आपके पूज्य पिताश्री मातुश्री व भार्या का क्रमशः श्री श्रेयांसकुमार, सत्यकी, और रुकमणी है!, श्री सीमन्धरस्वामी की शिष्यपरंपरा में चौरासी गणधर, दसलाख केवली, अेक सौ करोड साधु, अेक सौ करोड साध्वी, और असंख्य श्रावक, श्राविकाओं का विशाल जन-समुदाय है! श्रीसीमन्धरस्वामी की निर्धारित आयु चौरासी लक्ष पूर्व की है, अतः उन्हे भावी चौबीसी में तीर्थंकर उदय और पेढाल के काल में मोक्षप्राप्ति हुई।

आचार्य भगवंत श्री लक्ष्मीसागरसूरिजी का अभिमत है कि श्रद्धालु आत्म द्वारा श्री सीमन्धरस्वामी की विधिपूर्वक आराधना करने पर उनकी मन स्थिति निर्धारित होती है, ऐसी आत्मा की जन्म महाविदेह क्षेत्र में होने की संभावना रहती है, जहां आठ वर्ष की अल्पायु में चरित्र-ग्रहण कर मोक्ष मार्ग की आराधना की जाती है! शास्त्रो के अनुसार जाधुनिक पंचम काल में मोक्षप्राप्ति महाविदेह क्षेत्र में जन्म के बिना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

असंभव है ! अतः श्री सीमन्धरस्वामी की आराधना का महत्त्व हम आसानी से समज सकते है, यही कारण है प्रातः प्रतिकमण में हम चंद्र के माध्यम से प्रतिदिन अपनी विनंती श्री सीमन्धरस्वामी के पास पहुचाते हैं ।

परम पूज्य आचार्य भगवंत श्री कैलाससागरसूरिजी, श्री कल्याणसागर सूरिजी अेवं श्री पद्मसागरसूरिजी के शिष्य मुनिराज श्री धरणेन्द्रसागरजी का इस वर्ष का चातुर्मास जोधपुर हो रहा है ! विद्वान होने के साथ साथ आप अपने महान गुरुओं की परंपरा में अच्छे व्याख्यान कर तथा विषयवस्तु को सरल भाषा में समझाने की कला में निपुण हैं । चातुर्मास हेतु आपके जोधपुर प्रवेश के कुछ दिनों पश्चात् ही वीर संवत २५०५ मिती वैशाख कृजीण १४ तदनुसार दिनांक २५ अप्रैल १९७९ बुधवार को बालब्रह्मचारी पूज्य साध्वी श्री संपत श्री देवलोक हुई । विदुषी साध्वी श्री संपतजी चालीस वर्ष से निर्मल चारित्र की आराधना करने वाली शांत मूर्ति थी । जिन्होंने स्व और पर के कल्याण में अपने संपूर्ण जीवन को समर्पित किया था । पवित्र गंगा नदी की भांति उनका उपकार अनेक स्थानों पर रहा परंतु जैसे गंगा का उपकार काशी पर विशेष है । साध्वीका जोधपुर पर विशेष उपकार रहा ।

आपकी निश्रा में रातानाडा क्षेत्र में भव्य जिनमंदिर एंव उपाश्रय का निर्माण हुआ जिससे उस क्षेत्र के श्रावक श्राविकाओं को धर्म आराधना करने का अेक सुन्दर केन्द्र प्राप्त हुआ । आप ही के सदुपदेश से शहर के मुख्य कपडा बाजार में प्रथम तीर्थंकर आदीश्वर भगवान का मंदिर निर्मित हुआ तथा लखारा की सडक पर स्थित पुराने उपाश्रय को नवीन रूप प्राप्त हुवा तथा उपर के क्षेत्र में मंदिर का भी निर्माण हुआ ।

पूज्य मुनिराज श्री धरणेन्द्रसागरजी महाराजसाहेब द्वारा श्री सीमन्धर स्वामी पर संग्रहित उक्त पुस्तिका को पूज्य साध्वीजी का

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्मारिका स्वरूप प्रकाशित करवाई जा रही है ! और इसी कारण इसका नामकरण "उडजा रे पंछी महाविदेह में" रखा गया है ।

अतः शासनदेव से कर वह प्रार्थना है कि दिवंगत साध्वीजी श्री संपतजी को आत्मा महाविदेहक्षेत्र में जल लेकर श्री सीमंधर स्वामी के पास चारित्र ग्रहण कर अनुक्रम से मोक्षमार्ग की आराधक बनी ।

यह भी शुभ कामना है कि पुस्तक का पठन-पाठन करनेवाले श्रद्धालु भविक जीव इसका अधिकाधिक लाभ प्राप्त कर अपने जीवन को कृतार्थ करे ।

प्रो. अमृतलाल गांधी

अध्यक्ष

श्री मेहनाग पार्श्वनाथ जैन तीर्थ

जोधपुर

अक्षयतृतीया

दि० २ अप्रिल, १९७९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
अमृत आराधनामां आवश्यक सूचनाओ	२
कुम्भ स्थापन विधिः	६
दीपक स्थापन विधिः	८
घृतमन्त्रः	९
दीपक प्रगटाववानो मन्त्रः	९
अग्निशुद्धिमन्त्रः	९
कुम्भ विसर्जन विधिः	१०
अखंड दीपक विसर्जनविधि	१०
आराधनविधिक्रम	१०
श्री सीमन्धर स्वामिजिनस्तुति	११
चैत्यवंदनविधि	१२
स्तुति—चैत्यवंदन	१३
चतारिमंगलं—चत्तारि लोगुत्तमा	१५
चतारि सरणं एवज्जामि	१६
बार खमासमणना दुहा	१८
मांगलिक काव्यो	२५
श्री जिनेन्द्र स्तुति	२७
आटलु तो आपजे	३०
षोऽशप्रकाशः	३१
सप्तदशप्रकाशः	३२
श्री सीमन्धरस्वामिजिन चैत्यवंदन	३३
विंशति विहरमाळ जिन चैत्यवंदन	४०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विषय	पृष्ठ
श्री सीमन्धरजिन स्तुतिओ	४२
श्री ,, स्तवन	६७
विशतिविहरमाळ स्तवन	६८
त्रिकाल जिन ,,	६९
विंशति जिन ,,	६१
सीमन्धरस्वामिनोऽष्टकम्	७०
सीमन्धरस्वामि स्तोत्र	७९
,, स्तवन	७८–७९–८३
विहरमानजिन स्तोत्रम्	९३–१९१
सीमन्धरस्वामि लेख–१	१८२
,, ढाळ	१८८–९९९
सीमन्धरजिननी पत्र रुपे विनती	२०९
,, ढाळ	२०८
युगमन्धर जिनस्तवन	२२०
अनंतवीर्य स्वामिजन	२२२
विशविहरमान ,,	२२४
सीमन्धर श्री वृद्धस्तवन	२२५
सीमन्धर युगन्धर स्तवन	२२९
,, जिनवर	२३२
विशविरहमान	२३८
श्री जिनमंदिर स्तोत्र	२४०

*

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अचिन्त्यचिन्तामणिकल्पभूत अनन्तानन्त परम-उपकारक, परमतारक, परमकारुणिक, परमसुश्रद्धेय, परमसुगृहीतनामधेय, परम-सुभगभागधेय, त्रिकालाबाधिताखिच्छिन्नज्ञानसन्तान परमप्रभावशाळी, सकलसमीहितपूरक देवाधिदेव श्री सोमन्धरस्वामिजी परमात्मानो मंत्रनो १००००० (एक लाख) जाप परमोल्लासितभावे पूर्ण करनारनी भवस्थितिनो निर्णय थाय अथवा महाविदेहक्षेत्रमां जन्म पामी आठमा वर्षे चारित्र अंगीकार करीने नवमा वर्षे केवळज्ञानी बनी शके.

परम पूज्यपाद आचार्यश्री लक्ष्मीसूरीश्वरजीमहाराज अनन्तानन्त परमतारकश्रीना चैत्यवन्दनमां ए ज वातनो निर्देश करे छे के-

आ भरते पण कोई जीव, सुलभबोधि जेह;
जाप जपे तुज नामनो, लाख संख्याए तेह.
भवस्थिति निर्णय तस हुवे, अथवा ध्यान पसाहे;
उपजी विदेह केवळ लहे, नवमें वरस उत्साहे.

अनन्तानन्त परमतारकश्रीना अनन्तप्रभावे प्रतिबोध पामी देवाधिदेवना तारक सुहस्ते दीक्षित थनेल ८४ गणधर महाराजओ, दशलाख केवळज्ञानि-महाराजाओ अने सो सो क्रोड पूज्य साधु-साध्वीजी महाराजाओना अति विराट परिवारे विचरी महाविदेहक्षेत्रनी भूमिने पावन करी, विश्व उपर अनन्त उपकारनो पुष्करावर्त महामेघ निरन्तर वर्षावी रह्या छे. श्रावक श्राविकानी तो कोई सीमा ज नथी एवा अचिन्त्य अनन्तपरमप्रभाव छे देवाधिदेवनो.

दशलाख केवळी जेहने, सो कोडी मुनिस्वामी;
साधवी सो कोडी कह्या, श्रावक संख्या न पामी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सन्मित्र पूज्य मुनि श्री कर्पूरविजयजी महाराजना शिष्यरत्न पन्यास श्री ललितविजयजी महाराजे 'कर्पूर काव्य-कल्लोल'मां अनन्तानन्त परमतारकश्रीना परमपवित्र श्रीमुखे सम्यक्त्व तेमज सम्यक्त्व पूर्वक व्रतादि ग्रहण करनार श्रावक श्राविकाओनी संख्या नवसो नवसो क्रोडनी छे.

परमउज्जवलमहामहिमावन्त अनन्तानन्त परमतारक-श्रीनुं आराधन करता मेघधाराओ सिंचायेल कदंब पुष्पनी जेम साडा त्रण क्रोड रोमराजी विकस्वर बने. असंख्य आत्मा प्रदेशोमां अनन्तानन्त परमतारक क्षीर नीर, दुग्ध शर्करा, पुष्प सुवास, तुषार धवल के चन्द्र चन्द्रिकानी जेम ओतप्रोत बने श्वासोच्छवास अने रोमे रोमथी सीमन्धर ! सीमन्धर ! सीमन्धर ! अेवो अनाहत महानाद नीकळे, तो ज अनन्तानन्त परमतारकश्रीनुं यत्किंचित् आराधन कर्युं गणाय. परम उत्कट-भावे आराधन करतां आत्मा अनन्तपरमतारक तीर्थङ्कर गोत्रनो" पण बन्ध करी शके.

अमृत आराधनामां आवश्यक सूचनाओ

(१) आरंभ समारंभनो सर्वथा त्याग. अत्युल्लसित भावे सामूहिक चैत्यवंदन करवुं. बार दिवसनां संलग्न आराधनमां शक्य प्रयासे परिमित द्रव्योथी नव दिवस एकासणां करवां, अने त्रण दिवस उपवास करवा. उपवासनी शक्ति न होय, तो त्रण आयंबिल करवा, आयंबिलनी पण शक्ति न होय, तो बार दिवसना ऐकासणामां—

(२) लीळा शाकभाजी अने फळोनो त्याग.

(३) अणिशुद्ध अखंड ब्रह्मचर्य पाळवुं.

(४) विकथान सर्वथा त्याग.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(५) निरंतर अनन्तानन्त परमतारकश्रीना ध्याननी मग्नता.

(६) शक्य प्रयासे अनन्तानन्त परमतारकश्रीना मन्त्रनो एक लाख जाप पूर्ण करवो. संयोगवशात् जाप पूर्ण न थयो होय, तो लाख जाप पूर्ण थाय त्यां सुधी प्रतिदिन अल्पात्यल्प पांच जपमाळा गणवो. लाख जाप पूर्ण थया पछी प्रतिदिन अल्पात्यल्प एक माळा गणवी.

(७) आराधन काळमां जाप माटे प्रतिदिन एक ज स्थान राखवुं, एक स्थाननी अनुकूळता न होय, तो बे त्रण नियत स्थान राखवां,

(८) प्रथम दिवसे जे शुद्ध श्वेत वस्त्रोथी जाप कर्यो होय, ते ज वस्त्रोथी बारे दिवस जाप करवो.

(९) आसन श्वेत राखवुं.

(१०) चंदननी स्फटिक अथवा शुद्ध श्वेत सूत्रनी गूंथेली प्रतिष्ठित जपमाळा राखवी

(११) जपनो समय दिवसमां बे त्रण वार नियत राखवो.

(१२) दिवसे पूर्व दिशा समक्ष अने रात्रिए दक्षिण दिशा समक्ष बेसीने आराधना अने जाप करवो. ईशान खूणा समक्ष बेसवानी अनुकूळता होय, तो अहोनिश ईशान खूणा समक्ष बेसीने आराधना अने जाप करवो.

(१३) बेसवानुं आसन शुद्ध श्वेत ऊननुं राखवुं.

(१४) आराधना अने जाप माटे अनन्तानन्त परमतारकश्रीना प्रतिमाजी होय, तो ते, न होय तो कोई पण अनन्तानन्त परमतारकश्रीना प्रतिमाजी, अने तेनी पण अनुकूळता न होय, तो अनन्तानन्त परमतारकश्रीना चित्रपटनी त्रण वार नमस्कार महामन्त्र गणिने स्थापना करवी.

(१५) अत्युल्लसितभावे सामूहिक आराधन करवुं.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१६) बार दिवसना संलग्न आराधनमां नव दिवस प्रासुक जळ, रोटली, मगनी दाळ, तथा दूध आ चार द्रव्यथी एकासणा करवा अने छेल्ला त्रण दिवस उपवास करवा. जे आराधकथी उपवास न थता होय तेणे छेल्ला त्रण दिवस आयंबिल करवा.

अनन्तानन्त परमतारकश्रीनो चित्रपट स्थापन करतां पहेलां भूमिशुद्धि प्रमुखना मन्त्रोथी भूमि अंग वस्त्रादि अभिमन्त्रित करवा.

'नमोऽर्हत्' कहीने निम्नलिखित मन्त्र बोलतां दक्षिणावर्तना क्रमे वासक्षेप करवा पूर्वक भूमि शुद्धि करवी. ऐ रीते मन्त्र बोलीने बीजी अने त्रीजी वार वासक्षेपथी भूमिशुद्धि करवी.

भूमिशुद्धिमन्त्र : ॐ भूरसि ! भूतधात्रि सर्वभूतहिते ! भूमिशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ।। थाळी वगाडवी.

पछी 'नमोऽर्हत्' कहीने निम्नलिखित मन्त्र बोलतां अंजलिमां सर्व तीर्थोनुं पवित्र जळ छे एवुं संकल्पिने मस्तकथी अभिषेक करी पगना तळिया सुधी स्नान करीने पवित्र बनुं छुं, एवो संकल्प करवो.

शरीरशुद्धि : ॐ अमले विमले सर्व तीर्थजले पां पां वां वां अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा ।। थाळी वगाडवी.

पछी "नमोऽर्हत्" कहीने निम्न लिखित मन्त्र बोलतां वस्त्र उपर हाथ फेरवतां वस्त्रशुद्धि करवी.

वस्त्रशुद्धिमन्त्रः ॐ क्ष्वीं क्ष्वीं पां पां वस्त्रशुद्धिं करु करु स्वाहा ।। थाळी वगाडवी

अनन्तानन्त परमतारक देवाधिदेवथी प्रतिबोधायेल नवसो नवसो क्रोड. परंतु कुलपरम्पराथी चाल्यो आवतो परमाराधक श्रावक श्राविकावर्ग अतिविशाळ होवाथी 'श्रावक संख्या न पामी' अने 'नवसो क्राड' ए बन्ने उक्तिओ युक्तियुक्त सुसंगत छे.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पछी 'नमोऽर्हत्' कहीने निम्न लिखित मन्त्र बोलतां वासक्षेप करवा. पूर्वक पत्र पुष्पफळ अष्टगन्धादिधूप तेमज केसर चंदनादिनां द्रवो अधिवासित करवां.

पत्रपुष्पादीनामधिवासनामन्त्रः—ॐ वनस्पतियो ! वनस्पतिकाया एकेन्द्रिया जीवा निरवद्यार्हत् पूजायां निरव्यर्थाः सन्तु, निष्पापाः सन्तु निरपायाः सन्तु, सद्गतयः सन्तु नमेऽस्तु संघट्टन हिंसापापमर्हदर्चने स्वाहा ॥ थाळी वगाडवी.

पछी 'नमोऽर्हत्' कहीने निम्नलिखित मन्त्र बोलतां वासक्षेप करवापूर्वक जळ अभिमन्त्रित करवुं.

जलाधिवासितमन्त्र—ॐ आपः ! अप्काया एकेन्द्रिया जीवा निरवद्यार्हत पूजायां निरव्यथाः सन्तु, निष्पापाः सन्तु, निरपायाः सन्तु, सद्गतयः सन्तु, नमेऽस्तु संघट्टन हिंसापापमर्हदचने स्वाहा ॥
थाळी वगाडवी.

पछी 'नमोऽर्हत्' कहीने निम्नलिखित 'आत्मरक्षा महाविद्या' स्तोत्र बोलवापूर्वक आत्मरक्षा एटले अंगरक्षा करवी

॥ श्री नमस्कार—महामंत्ररूप आत्मरक्षा महाविद्या ॥

"ॐ परमेष्ठि—नमस्कारं, सार नव पदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकरं वज्र पंजराभं स्मराम्यहम् ॥१॥
"ॐ नमो अरिहंताणं शिरस्क शिरसि स्थितम् ।
"ॐ नमो सव्व सिद्धाणं. मुखे मुखपट वरम् ॥२॥
"ॐ नमो आयरियाणं, अङ्ग—रक्षातिशायिनी ।
"ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढम् ॥३॥
"ॐ नमोलोए सव्व साहूणं, मोचके पादयोः शुभे ।
ऐसो पंच नमुक्कारो, शिला वज्रमयी तले ॥४॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सव्व-पाव-प्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहिः ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिराङ्गार खातिका ॥५॥

स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलं ।
वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं देहरक्षणे ॥६॥

महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी ।
परमेष्ठी-पदोद्भूता, कथिता पूर्व सूरिभिः ॥७॥

यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमिष्ठि पदैः सदा ।
तस्य न स्याद् भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचन ॥८॥

॥ अथ श्री कुम्भस्थापनविधिः ॥

अनन्तानन्त परमतारक श्री जिनेश्वर परमात्मानी जमणी बाजुए महामांगलिक कुम्भ तथा दीपक स्थापन करवाना स्थान उपर चन्द्रवो बंधावो, सुवर्णजळनु आच्छोटन करवुं. परम पूज्यपाद गुरुमहाराज भूमिशुद्धिमन्त्र बोलतां वासक्षेप करीने भूमिशुद्धि करे कुम्भस्थापनादि विधि विधानोमां लाभ लेनार श्रावक-श्राविकानां जमणा हाथे मिंढळ अथवा गेबासूत्र (नाडा छडी) बांधवी. कुम्भ अने कुम्भनी जमणी बाजु दीपक स्थापन करवाना स्थाने सुकुमारिका. सौभाग्यवती अथवा श्रावके कुमकुम (केसर)ना स्वस्तिक करी उपर अक्षत तथा सोपारी मूकीने कुम्भ-स्थापन माटे आलेखेल स्वस्तिक उपर सवाशेर ६५० थी ७०० ग्राम प्रभाण शालि-व्रीहि अथवा जवनो स्वस्तिक करवो. दीपक स्थापनना कंकुनो स्वस्तिक करावबो कुंभ दीपकनी सुरक्षा माटे कसुंबा रंगनुं एटले रक्तवस्त्रनुं द्वारवाळुं मंगलगृह निर्माण करावबुं.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माता बहेनोनी जेम कुंभ दीपक स्थापनक्रियानो लाभ सुलक्षणोपेत पुरुष पण लई शके छे. पुरुषो माटे क्रियानो निषेध नथी.

अष्टमंगळ आलेखेल चित्ताकर्षक अतिसुरम्य सुवर्ण रौप्यादि धातुना, अथवा श्यामचिह्नादि दूषणो रहित शुद्ध मृत्तिका कुंभने पूंजी प्रमार्जीने शुद्ध जळथी पवित्र करी कंठे गेवासूत्र (नाडाछडी) बांधी कुंभोपरि मध्यभागे केसर चंदनना द्रवथी ॐ ह्रीं श्रीं सर्वोपद्रवान् नाशय स्वाहा" ऐ मन्त्र लखी कुम्भना अभ्यंतर तळस्थळे केसर चंदननो स्वस्तिक करी रूप्य मुद्रा, पंचरत्ननी पोटली अने सोपारी मूकी कुम्भ स्थापन करनार पुण्यवंत त्रण वार "नमस्कार महामन्त्र" गणीने अखण्ड धाराए वस्त्रपुत (गळेल) शुद्धजळथी कुम्भ भरीने डोंटडा जळमां अधोमुख रहे ते रीते कुम्भमां चारे दिशाए ऐक ऐक सीधु नागरवेलनुं पान मूकी मध्यभागे ऊर्ध्वशिख श्रीफळ मूको उपर नीलवर्णनु (लीलुं) रेशमीवस्त्र आच्छादित करी मिढळयुकत गेवासूत्रना दश पंदर आंटा देवा पूर्वक सुदृढ बांधी उपर जळ छांटी अनुकूळता प्रमाणे सोना रुपाना वरख छापी केसर चंदननां छांटणां करी सुगंधी पुष्पहार चढाववो.

खास सूचना : अखण्ड दीपक प्रगटाव्या सुधीनो विधि कर्या पछी, निम्न लिखित विधि कुम्भ तथा दीपकनो साथे करवानो होय छे.

कुम्भ दीपक स्थापन करनार सुकुमारिका अथवा सौभाग्यवती त्रण वार "नमस्कार महामन्त्र गणीने" इंढोणी युक्त मस्तके कुम्भ धारण करे, अने थाळ सहित दीपकने बन्ने बन्ने हाथमां धारण करी शक्यता अनुसार आगळ चालता थाळी डंका निशान पंच शब्द बाजिन्त्रोनो महानाद अने धवळ मंगळादि गीतगान पूर्वक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनन्तानन्त परमतारक श्री जिनेश्वर परमात्माने त्रण प्रदक्षिणा दई मंगळगृहमां आवी त्रण वार "नमस्कार महामन्त्र" गणि "ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा" ऐ मन्त्र सातवार गणिने कुम्भक एटले स्थिरश्वासे व्रीहि आदिना स्वस्तिक उपर कुम्भ स्थापन करवो. अने माटीना खामणा ऊपर दीपक स्थापन करवो. पूज्यपाद गुरु महाराज चपटीमां वासक्षेप लई "ॐ ह्री ठः ठः ठः स्वाहा" ए मन्त्र सातवार गणिने कुम्भ दीपक उपर वासक्षेप करे.

पछी "नमोऽर्हत्" कहीने पूज्यपाद गुरुमहाराज हाथमां वासक्षेप लईने निम्नलिखित काव्य बोलीने कुम्भ उगर वासक्षेप करे ते समये श्रावक श्राविकाओ कुसुमांजलीथी वधावे ए रीते बीजी अनें त्रीजी वार काव्य बोली कुल त्रण वार वासक्षेप करवो :

पूर्णं येन सुमेरुशृङ्गसदृशं, चैत्यं, सुदेदीप्यते,
यः कीर्तिं यजमानधर्मकथनंप्रफूर्जितां भाषते ।
यः स्पर्धां कुरुते जगत्त्रयमहादीपेन दोषारिणा,
सोऽयं मङ्गलरूप मुख्यगणनः कुम्भश्चिरं नन्दतात् ॥

थाळो वगाडवो.

॥ इति श्री कुम्भस्थापन विधिः ॥

॥ अथ श्री दीपक स्थापन विधिः ॥

सवाशेर घृत रही शके तेवुं जीभवाळुं ताम्रदीपक शुद्ध करी धूपी, केसरनो स्वस्तिक करी अक्षतथी वधावी एक रूपियो पंचरत्ननी पोटली, सोपारी मूकी, ताम्र जीभ उपर मरडाशींग युक्त मिंढळ बांधी, काचा सूतरनो २७ तारनी वाट मूकी थाळीमां भींजावेल माटीनुं खामणुं करी ते उपर दीपक स्थापन करी त्रण वार घृतमंत्र बोलतां कुमारिका, सौभाग्यवती, अथवा पुण्यवन्त भाई पासे घृत पूरावबुं.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ श्री घृतमन्त्रः ॥

ॐ घृतमायुर्बुद्धिकरं भवति परं जैन दृष्टिसम्पर्कात् ।
तत्संयुक्तः प्रदीपः, पातु सदा भाव दुःखेभ्यः स्वाहा ॥१॥

थाळी वगाडवी.

निम्नलिखित श्री दीपक प्रगटाववानो मंत्र त्रण वार भणीने दीप प्रगटाववो.

॥ अथ श्री दीपक प्रगटाववानो मन्त्रः ॥

ॐ अर्हं पञ्चज्ञानमहाज्योतिर्मयोऽयं ध्वान्तघातने ।
द्योतनाय प्रतिमाया दीपो भूयात् सदाऽर्हते स्वाहा ॥१॥

श्री कुम्भनी जमणी बाजुऐ श्री दीपक स्थापनना स्थाने करेल कंकुनो स्वस्तिक उपर दीपक स्थापन करवो. परमपूज्यपाद गुरु महाराज निम्नलिखित मन्त्र बोलीने दीपक उपर वासक्षेप करे, ए रीते मन्त्र गणवापूर्वक त्रण वार वासक्षेप करे.

॥ श्री अग्नि शुद्धि मन्त्रः ॥

ॐ अग्नयोऽग्निकाया एकेन्द्रिया जीवा निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथाः सन्तु, निष्पापाः सन्तु, निरपायाः सन्तु, सद्गतयः सन्तु, नमेऽस्तु संघट्टन हिंसा पापमर्हदर्चने स्वाहा ।

॥ इति श्री दीपकस्थापन विधिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री कुम्भ विसर्जन विधिः ॥

उपर्युक्त मंत्रोच्चार करवापूर्वक वासक्षेप करीने कुम्भ विसर्जन करवो.

॥ श्री अखंड दीपक विसर्जन विधिः ॥

"ॐ विसर विसर स्वस्थान गच्छ गच्छ स्वाहा"

थाळी वगाडवी,

उपर्युक्त मन्त्रोच्चार करवा पूर्वक वासक्षेप करीने श्री अखंड दीपक विसर्जन करवो.

अनन्तानन्तपरमतारकदेवाधिदेवश्रीनी तारकनिश्रामां परमपूज्यपाद गुरुमहाराजश्रीनो सुयोग होय तो तेओश्रीनी उपस्थितिमां चैत्यवन्दनादि समुदायिक क्रिया करवी. प. पू गुरुमहाराजश्रीनो योग न होय तो व्रतधारी सुश्रावक क्रिया करावे.

चतुर्थ दिने अत्युल्लसितभावे उत्तम फळ नैवेद्यादि सामग्री पूर्वक परमतारक श्री वीश विहरमाननी पूजा भणावबी.

॥ आराधन विधिक्रम ॥

१. परम तारकश्रीनी स्तुति
२. सामुदायिक चैत्यवंदन
३. त्रण टंक देववंदन
४. बे टंक प्रतिक्रमण
५. बार साथिया
६. दुहा बोली बार खमासमण
७. संपूर्ण बार लोगसनो काउसग्ग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

८. नव एकासणां तथा त्रण उपवास अथवा त्रण आयम्बिल

९. ॐ ह्रीं श्री अर्हं श्री सीमन्धरस्वामिने नमः ह्रीं स्वाहा" ए मन्त्रनी ८५ नवकारवाळो प्रतिदिन गणवी.

१०. आयंबिल एकासणुं कर्या पछी चैत्यवंदन करवुं.

११. ज्यारे ज्यारे मन्त्रजापनो प्रारम्भ करवो होय त्यारे पहेलां "श्री तीर्थंकरगणधरप्रासादादेषः योगः फलतु" कहेवुं.

१२. सामूहिक स्नात्र पूजन तेमज अष्टप्रकारी पूजन.

॥ श्री सीमन्धरस्वामिजिनस्तुति ॥

जय स्वामिन् ! जिनाधीश !, जय जय देव जगतप्रभो ! ।
जय त्रैलोक्य-तिलक !, जय संसार तारण ! १

जय जङ्गमकल्पद्रो ! जयार्हत् ! परमेश्वर ! ।
परमेष्ठिन् ! जयानन्दिन् ! जय जय व्यक्त निरञ्जन ! २

स्वामिनामपि यः स्वामि, गुरूणामपि यो गुरुः ।
देवनामपि यो देवस्तस्मै, तुभ्यं नमो नमः ! ३

श्री सर्वज्ञ ! समग्र-सौख्य-पदवी-सम्प्राप्ति चिन्तामणे !,
सत्कल्याण-निवास ! वासवनत ! त्रैलोक्य चूडामणे !,
सम्यग्-ब्रह्ममय-स्वरूप ! विहरत् तीर्थङ्कराग्रेसरं,
श्री सीमन्धरधर्मनायकमहं भक्त्या भवन्तं स्तुवे ४

त्रातारं भुवन त्रयस्य परमं सद्योग मार्गाध्वग !
ध्येयं ध्येय पदावधि निरवधि-ज्योतिः प्रकाशात्मकम् :
ये पश्यन्ति भवन्त मुत्तमदृशः स्वान्ते निवेश्य स्थिरं,
धन्यानामुपरि भ्रमन्ति गुरुतां ते देव ! देहस्पृशः ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भक्ति-प्रह्व-सुपर्व-पूजित पदाम्भोजं जगज्जीवनं,
ब्रह्माजिह्म-लयावदातहृदया ध्यायन्ति योगीश्वराः;
प्रातः पूर्वविदेह भूषणकरं स्वात्माविभेदेन यं,
स श्रीमान् हृदये करोतु वसतिं सीमन्धरः श्री जिनः ६
जगज्जन्तुनिस्तारणे यानपात्रं, समारामविश्रामसंलीनचित्तम् ।
नतानेकनाकेन्द्रपादारविंदं, स्तुवे स्वामिसीमन्धरं देवदेवम् ७
महाकेवलनाण कल्लाणवासो, सलावण्णसोवण्णवण्णप्पयासो;
थुणेसारसिद्धिं पुरीसत्थवाहं, सया सामिसीमंधरं तित्थनाहं ८
महीमंडणं पुण्णसोवण्णदेहं, जणाणंदणं केवल नाणगेहं;
महाणंदलच्छीबहुबद्धरायं, सुसेवामि सीमंधरं तित्थरायं. ९

खमासमण० इरियावहियं० तस्स उत्तरी अन्नत्थ० एक लोगस्सनो काउसग्ग० प्रगट लोगस्स बोली निम्न लिखित 'जय जिनेन्द्र !' आदि मन्त्रो बोली खमासमण देवुं. ए रीते बीजी अने त्रीजी वार 'जय जिनेन्द्र !' आदि बोली बीजुं अने त्रीजुं खमासमण देवुं.

श्री चैत्यवंदन विधि

जयजिनेन्द्र ! जगद्वत्सल ! ज्योतिः स्वरूप !, जगदेकाधार जगदुद्धारक ! जगत्तारक !, जगत्पूज्य ? जगद्वन्द्य ! जगदानन्ददायक ! निरञ्जन ! निराकार ! भवभयभञ्जक, देवाधिदेव श्री सीमन्धरस्वामि प्रमुखानन्तानन्त जिनेन्द्रेभ्यो नमो नमः ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सिरि सीमंधरसामिजिणं आराहणत्थं चेइयवंदणं करेमि ? इच्छं कही "सकलकुशलवल्लि" बोली चैत्यवंदन करवुं.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(स्तुति)

सकल-कुशल-वल्लि-पुष्करावर्त-मेघो
दुरित-तिमिर-भानुः कल्पवृक्षोपमानः
भवजलनिधिपोतः सर्व संपत्ति-हेतुः
स भवतु सततं वः श्रेयसे शान्तिनाथः
श्रेयसे पार्श्वनाथः ।

(चैत्यवन्दन)

१

श्री सीमन्धर जगधणी, आ भरते आवो;
करुणावन्त करुणा करी, अमने वन्दावो. १
सकळ भक्त तुमे धणी, जो होवो अम नाथ;
भवोभव हुं छुं ताहरो, नहि मेलुं हवे साथ २
सयल संग छांडी करी, चारित्र लइशुं;
पाय तुमारा सेविने, शिव रमणी वरशुं. ३
ए अळजो मुजने घणोए, पूरो सीमन्धर देव.
इहां थकी हुं विनवुं, अवधारो मुज सेव. ४
कर जोडीने विनवुं, सामो रही ईशान,
भाव जिनेश्वर भाणने, देजो समकित दान. ५

२

समवरणे विराजता, श्री सीमन्धरस्वामी,
मधुर ध्वनि दिये देशना वाणी सुधा समाणी. १
पर्षदा बेठी सांभळे वाणीनो विस्तार
सहु सहुना मनमा थया आनंद हर्ष अपार. २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाति वैर शमावीयुं ए, प्रभु अतिशय अद्भुत;
संशय सर्वनां टाळता, करतां भविजन पूत, ३
हुं निर्भागी इहां रडवडुं, शा कीधां में पाप ?
ज्ञानी विनानी गोठडी, किहां जइ करूं विलाप ? ४
मात विनानो बाळ जेम, आथडतो कूटातो
आव्यो छुं तुज ओगळे, राखो तो करुं वातो. ५
क्रोड क्रोड वंदना माहरी, अवधासे जिन देव:
मांगुं निरन्तर आपना चरण कमळनी सेव. ६

जंकिंचि ० नमुत्थुणं ० जावंति चेइआइं ० खमासमण ० जावंत केवि साहू ० नमोऽर्हत् सुधीनां सूत्रो बोली निम्न लिखित स्तवन परम उल्लसितभावे बोलवुं :

बे कर जोडी विनवुं रे लाल, मारी विनतडी अवधार रे;
तुमे महाविदेहमां वस्या रे लाल, अमने छे तुम आधार रे.
प्रभाते उठी करूं वंदना रे लाल० १

भरतक्षेत्रमां हुं अवतर्यो रे लाल, किम करी आवुं हजूर रे
तुभ दरिसण नवि पामीयो रे लाल, रह्यो मजूरनो मजूर रे. प्र० २
तुम पासे देव घणा वसे रे, लाल एक मोकलजो महाराज रे;
मनना सन्देह प्रभु पूछोने रे लाल, करुं सफळ दिन आज रे. प्र० ३
केवळज्ञानिना विरहथी रे लाल, मनुष्य जन्म एळे जाय रे;
शुभ भाव आवे नहि रे लाल, शी गति माहरी थाय रे ? प्र० ४
कर्मने मोहे खब कस्यो रे लाल, हजी न थयो खुलास रे;
जिम तिम करी प्रभु तारजो रे लाल, हुं तो धरु तुमारो आश रे. प्र० ५
सीमन्धरस्वामिना नामथी रे लाल, थाय सफळ अवतार रे;
कल्याणमुनि इम विनवे रे लाल, प्रभु नामे जय जयकार रे. प्र० ६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पछी "जय वीयराय" सूत्र बोली उभा थइने 'अरिहंत चेइयाणं' तथा अन्नत्थ" सूत्र बोली" एक नवकारनो काउसग्ग करी "नमो अरिहंताणं बोली काउसग्ग पारोने 'नमोऽर्हत्' कही निम्न लिखित स्तुति बोलवी :

सो क्रोड साधु साधवी सो क्रोड जाण,
ऐसे परिवारे सीमन्धर भगवान;
दश लाख थया केवळी प्रभुजीनो परिवार,
वाचक यश वन्दे नित्य नित्य वार हजार ॥१॥

खमासमण दइ इच्छकारि भगवन् ! पसायं किच्चा पच्चक्खाणं करावेह !

पूज्य गुरुमहाराजश्री होय तो तेमनी पासे अथवा वडील क्रियाकारक पासे उपवास आयम्बिल अथवा एकासणानुं पच्चक्खाण करी निम्नलिखित स्तुतिओ बोलवी :

चतारि मंगलं

'अरिहंता मंगलं' 'सिद्धामंगलं'
'साहूमंगलं' 'केवलीपण्णत्तो धम्मो मंगलं'

चत्तारि लोगुत्तमा

'अरिहंता लोगुत्तमा' 'सिद्धा लोगुत्तमा'
'साहू लोगुत्तमा' 'केवलीपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो.'

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चतारि सरणं पवज्जामिः

"अरिहंते सरणं पवज्जामि.", सिद्धे सरणं पवज्जामि"
साहू सरणं पवज्जामि" केवलीपण्णतं धम्म सरणं पवज्जामि.
अरिहंतो मह देवो, जावज्जजीवं सुसाहूणो गुरूणो;
जिण पण्णत्तं तत्त इअ सम्मत्तं मए गहीए. १

शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः;
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवन्तु लोकाः २

इह जगत स्वामी, मोहस्वामी, मोक्षगामी सुखकरु,
प्रभु अकळ, अचळ, अखण्ड, निर्मळ, भव्य मिथ्यातमहरु.
देवाधिदेवा. चरण सेवा नित्य मेवा आपीये
निजदास जाणी दया आणी आप समोवड थापीए १

भवो भव तुम चरणोनी सेवा, हुं तो मागुं देवाधिदेवा,
सामुं जुओने सेवक जाणी, एवी उदयरत्ननी वाणी. २

भवो भव सेवा, रे तुम पद कमळनी देजो दीनदयाळ,
बे करजोडी रे उदयरत्न वंदे, नेक नजरथी निहाळ,
विनति मारी रे सुणजो साहिबा ३

जनम अनंता हो श्री जिन हुं भम्यो अवर अवर अवतार;
पुण्य प्रमाणे रे हमणां पामीयो, नवभर भरत मोझार, विनति. ४

महाविदेहे रे स्वामि! तुमे वसो, पांख नहीं मुज पास;
किण परे आवी रे पाप आलोइए मनमां रहियो विमास. वि०५

कर्मने मोहे खब कस्यो रे लाल, हजी न थयो खुलास रे;
जिम तिम करी प्रभु तारजो रे लाल, हुं तो धरु तुमारी
आशरे प्रभाते उठी करुं वंदना रे लाल ६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दैवे दीधी न पांखडी, किण विध आवुं हजूर !
तो पण मानजो वंदना, नित्य उगमते सूर.
सीमन्धर करजो मया ! ७

स्वामि-सीमन्धरा विनति सांभळो माहरी देव रे,
ताहरी आण हुं शिर धरुं, आदरुं ताहरी सेव रे. ८
एक छे राग तुज उपरे, तुं मुज शिव तरु कंद रे,
नवि गणुं तुज परे अवरने, जो मिले सुर नर वृंद रे.
स्वामि सीमन्धरा तुं ज्यो. ९

तुज विना में बहु दुःख सह्यां, तुज मिल्ये ते किम होय रे;
मेह विण मोर माचे नहि, मेह देखी नाचे सोय रे. स्वा०
मनथकी मिलन में तुज कीयो, चरण तुज भेटवा सांई रे;
कीजीये जतन जिन ए विना, अवर न वांछीए कांई रे. स्वा०
तुज वचन राग सुख आगळे, नवि गणुं सुर नर शर्म रे;
कोडी जो कपट कोई दाखवे, नवि तजुं तो ए तुज धर्म रे. स्वा०
तुं मुज हृदयगिरिमां वसे, सिंह जिम परम निरीह रे;
कुमत मातंगना यूथथी, तो कशी प्रभु मुज बीह रे. स्वा०
कोडी छे दास प्रभु ताहरे, माहरे देव तुं एक रे;
कीजीए सार सेवक तणी, एह तुज उचित विवेक रे. स्वा०
मुज होजो चित्त शुभ भावथी, भवो भव ताहरी सेव रे;
याचीए कोडी यतने करी, एह तुज आज आगळे देव रे. स्वा०
वळी वळी विनवुं स्वामिने, नित्य प्रत्ये तुंहि ज देव रे;
शुद्ध आशय पणे मुज होजो, भवो भव ताहरी सेव रे. स्वा०
माहरी परिणति दोषनी तीव्रता वारण कार रे;
ताहरा शासन शुभ तणो राग छे एक आधार रे. स्वा०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ बार खमासमणना दुहाः ॥

(१)

अनंत चोविशी जिन नमुं, सिद्ध अनंती क्रोड;
केवळनाणी स्थविर सवी, वंदु वे कर जोड. १
बे कोडी केवळधरा, विहरमान जिन वीश;
सहस कोडी युगल नमुं, साधु नमुं निशदिश. २
जे चारित्रे निर्मळ, ते पंचानन सिंह,
विषय कषायने गंजोया, ते प्रणमुं निशदिश. ३
श्री सोमन्धर साहिबा, अरज करुं कर जोड,
जीहां लगी शशो सूरज तपे, वंदना हमारी होय. ४

मंत्रोच्चारः "ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री सीमन्धरस्वामिने नमः ह्रीं स्वाहा"
खमासमण० ए रीते आगळनां बधां खमासमणमां समजवुं.

(२)

श्री ब्रह्माणी शारदा, सरस्वती द्यो सुपसाय;
सीमन्धर जिन विनवुं, सानिध्य करजो माय. १
सुण सुण 'सरस्वती' भगवती, त्हारी जगविख्यात;
कविजननी कोरती वधे, तेम तुं करजे मात. २
स्वामि सीमन्धर विदेहमां, बेठा करे वखाण;
वंदना माहरी तिहां जइ, कहेजा चंदाभाण. ३
श्री सीमन्धरसाहिबा० मंत्रोच्चार० खमासमण.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३)

मुज हैडुं संशय भर्युं, कुण आगळ कहुं नाथ,
जेहशुं मांडी गोठडो, ते मुज न मिले साथ. १
जागो आवुं तुम कने, विषम वाट पंथ दूर;
डुंगर ने दरिया घणा, वच्चे वहे नदी पूर. २
ते माटे इहां कने रही, जे जे करुं विलाप;
ते तुमे प्रभुजी सांभळो, अवगुण करजो माफ. ३
श्री सीमन्धरसाहिबा० मंत्रोच्चार० खमासमण.

(४)

तुम गुणगण गंगाजळे, झीले मुज मन हंस;
पण तुज विरहे पीडियो, जिम मधुसूदन कंस. १
गुण फीटी अंगार हुए, हियडुं डज्झे तेण
अवगुण नीर न सांभरे, ओलावी जे जेण. २
संदेशे सज्जन तणे, जीवे मास छ मास;
दूर देशांतर वासीया, संदेशे सुख खास. ३
श्री सीमन्धरसाहिबा० मंत्रोच्चार० खमासमण

(५)

अंतरीया बहु डुंगरे, तह रूकखेहिं घणेहिं;
ते सज्जन किम विसरे, जे सघळा गुणेहिं १
प्रीत भलो पंखेरूआ. ऊडी जेह मिलंत
माणस परवश बापडा दूर रया झुरंत. २
दीठां मीठा निहां लगे, हरेहर अवर अनेक;
जिहां लगे तुम गुण नवि सुण्या, हियडे धरीय विवेक. ३
श्री सीमन्धर साहिबा० मंत्रोच्चार० खमासमण.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(६)

मनह मनोरथ जे करे, ते पूरण असमत्थ;
स्वर्गे सुरद्रुम मंजरी, त्यांहि पसारे हत्थ. १

फीट हियडा फूटे नहि, हजी नहि तुजने लाज;
जीव जीवन विजोगडे, जीव्यानुं कुण काज. २

माणसथी माछा भला, साचा नेह सुजाण;
ज्युं जळथी होय जुजुआ, त्युं ते छंडे प्राण. ३

सहस वहे संदेशडो, लेख लहे लख मूल;
अंगो अंग मेलावडो, सुरतरु फूल अमूल. ४
श्री सीमन्धर साहिबा० मत्रोच्चार० खमासमण.

(७)

किं बहु कागळमें लिखुं, लख लालच बहु लोभ;
मिल्यां पछी मालुम थशे, चिर थापण चिर थोभ. १

किं बहु मीठे बोलडे, जो मन नहि समनेह;
जा मन नेह अछेह तो, एक जीव दो देह. २

किं बहु कागळमें लिखुं, घणुं घणेरु गुह्य;
सेवा निज पद कमळनी, देजो साहिब मुज. ३
श्री सीमन्धर साहिबा० मंत्रोच्चार० खमासमण.

(८)

रांक तणी परे रडवडयो, निधणीयो निरधार,
श्री सीमन्धर साहिबा, तुम विण इण संसार. १
तुम विण कुण आधार.

हुं रे अनादि निगोदमां, आव्यो अव्यवहारी जीव;
काळ अनंत तिहां रह्यो, भव अनंत सदीव. २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मरण अवतरण करी, स्वामि काळ ! अनंत;
परावर्त पुद्गळ कियां, तेहनो कहुं विरतंत. ३
जिम केकी गिरिवर रहे, मेहा दूरे वास;
तिम जिनजी तुम ओळगुं, निसुणो अरदास. ४
इत्यादिक अनेक छे, अनंत कायना भेद;
बादर एह निगोदमां, हुं पाम्यो निर्वेद. ५
सुइ अग्र अनंतमें, भागे हुं बहु वार;
कहेंचाणो निःसंबलो, किणहि न कीधी सार. ६
काळ अनंत तिहां रह्यो साधारण स्वरूप.
चौद लाख योनि भम्यो, ए! ए! कर्म विरूप. ७
श्री सीमन्धर साहिबा० मंत्रोच्चार० खमासमण.

(९)

ऊंच नीच कुळ अवतर्यो, कीधां मध्यम काम;
विरति पाखे हुं नवि थयो, न लह्यो भव विश्राम. १
मानव भव अति दोहिलो, दोहिलो आरज देश;
सद्दहणा वळी दोहिली, दोहिलो गुरु उपदेश. २
मनुष्य तिरी भव अंतरे, माते नरक मोझार;
गणतां काळ असंख्य हुओ, हुं गयो एटली वार. ३
श्री सीमन्धर साहिबा० मंत्रोच्चार० खमासमण.

(१०)

मोर मेह रवि कमळ जिम, चंद्र चकोर हसंत;
तिम दूरथी अम मनह, तुम समरण विकसंत १
अणसंभार्या सांभरे, समय समय सो वार;
ते सज्जन किम विसरे, बहु गुण मणि भंडार. २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बमणी त्रिगणी सोगणी, सहसगणी ए प्रीत;
तुम साथे त्रिभुवन धणी, राखुं रूडी रीत. १
आंख तळे आणुं नहीं, अवर अनेरा देव;
साहिब जब थें में सुण्यो, तुं हि देवाधिदेव. २
भूतळे भला भलेरडा, जे जाणो जे त्राण;
ते सघळा ए तुम पछी, सीमन्धर जग भाण. ३
श्री सीमन्धर साहिबा० मंत्रोच्चार० खमासमण.

(११)

निःस्नेहि सुत्रीया रहे, वेलु कण ज्युं होय;
ससनेहा तिल पीलीए, नहीं मथे गहु कोय. १
नेह न कीजे जीहां लगी, तिहां जीवने सुख होय;
नेह विरह जब उपजे, तब दुःख साके सोय. २
निर्गुण नेह न कीजीए, कीजे सद्गुण संग;
सीमन्धर जिन सारीखो, राखुं अधिको रंग. ३
श्री सीमन्धर साहिबा० मंत्रोच्चार० खमासमण.

(१२)

क्षेत्रविदेहमां तुम वसो, हुं वसुं भरत मोझार;
इहां थकी करुं वंदना, श्वास मांहि सो वार. १
तुं छे म्हारो साहिबो, हुं छुं तारो दास;
गुण अवगुण सहु उवेखीने, करुणा करजो ग्यास. २
श्री सीमन्धर इहां थकी, नित्य वंदु प्रभात;
त्रिकरण त्रिहुं योगशुं, जपुं अहोनिश जाप. ३
भरतक्षेत्रमां हुं रहुं, आप रहा छो विमुख;
ध्यान लोहचुंबक परे, दृष्टि करुं मन्मुख ४
वृषभ लंछन चरणमां, कंचन वरणी काय;
चोत्रीश अतिशय शोभता वंदु सदा तुम पाय. ५
श्री सीमन्धर साहिबा० मंत्रोच्चार खमासमण.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इच्छकारि भगवन् ! पसाय करिच्चा मम मंत्त वायणं देहि.

श्री तीर्थङ्कर-गणधर-प्रासादादेषः योगः फलतु,

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री सीमन्धरस्वामिने नमः ह्रीं स्वाहा।

असितगिरि-समं-स्यात कज्जलं सिन्धुपात्रे,
सुरतरुवर शाखा, लेखिनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं,
तदपि तव गुणानामीश ! पारं न याति ॥

न स्वर्गाप्सरसां स्पृहा समुदये, नो नारकोच्छेदने,
नो संसारपरीक्षतौ न च पुनर्निर्वाण नित्यस्थितौ
त्वत् पाद द्वितयं नमामि भगवन् ! किन्त्वेककं प्रार्थये
त्वद्भक्तिर्मम मानसे भवभवे भूयाद् विभो ! निश्चला ॥

कीर्तिं श्रियो राज्यंपदं सुरत्वं, न प्रार्थये किञ्चन देव देव !
मत प्रार्थनीयं भगवन् ! प्रदेयं, त्वद् दासतां मां नय सर्वदापि ॥

आशातना या किल देव देव !, मया त्वदर्चा रचनेऽनुसकता ।
क्षमस्व तां नाथ ! कुरु प्रसादं, प्रायो नराःस्युः प्रचुर प्रमादाः ॥

ॐ आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत् कृतम् ।
तत् सर्वं कृपया देवाः ! क्षमध्वं परमेश्वराः

ॐ आह्वानं नैव जानामि, न जानामि विसर्जनम् ।
पूजाविधिं न जानामि, प्रसीद परमेश्वरः !

उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः ।
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥

सर्व मङ्गल माङ्गल्यं, सर्वकल्याण कारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अचिन्त्यचिन्तामणिकल्पभूत अनन्तानन्त परमउपकारक, परमतारक, परमकारुणिक, परमसुश्रेद्धेय, परमसुगृहीतनामधेय, परमसुभगभागधेय, त्रिकालाबाधितावच्छिन्नानन्तानन्त परम-प्रभावशालि, सकलसमीहितपूरक, देवाधिदेव श्री सीमन्धरस्वामि भगवाननो जय हो ! श्री सीमन्धरस्वामि भगवाननो जय हो। श्री सीमन्धरस्वामि भगवाननो जय हो !

अनन्तानन्त परमतारक देवाधिदेव श्री सीमन्धरस्वामिजी परमात्मानां पंच कल्याणको

श्री च्यवन कल्याणक		श्रावण वदि-१-गूज. आषाढ वदि १
,, जन्म	,,	वैशाख वदि १०-गूज. चैत्र वदि १०
,, दीक्षा	,,	फागण शुदि ३
,, केवळज्ञान	,,	चैत्र शुदि १३
,, निर्वाण	,,	श्रावण शुदि ३

(उद्धृतकर्पूर काव्यकल्लोलादि भाग पांचमांथी)

श्री भरतक्षेत्रनी आगामी चोवीशीजोना सातमा तीर्थङ्कर परमात्मा परमतारक देवाधिदेव श्री उदयस्वामिजोना निर्वाण पछी अने आठमा तीर्थङ्कर परमात्मा देवाधिदेव श्री पेढाळस्वामिजोना जन्म पहेलां अनन्तानन्त परमतारक श्री सीमन्धरस्वामीजी परमात्मा श्रावण शुदि ३ ने दिने "निर्वाण" एटले मोक्ष पदने पामशे.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मांगलिक काव्यो

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं नमो उवज्झायणं
नमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो;
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं. १

नमः श्री शान्तिनाथाय, सर्वविघ्नापहारिणे;
सर्वलोक – प्रकृष्टाय, सर्ववाञ्छितदायिने २

जयइ जगजीव-जोणि-वियाणिओ जगगुरू जगाणंदो,
जगनाहो जगबंधू, जयइ जगपियामहो भयवं;
जयइ सुयाणं पभवो, तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ,
जयइ गुरू लोगाणं, जयइ महप्पा महावीरो. ३

जगज्जन्तु-निस्तारणे यानपात्रं,
समाराम-विश्रामसल्लीनचित्तम्;
नतानेकनाकेन्द्रपादारविन्दं,
स्तुवे स्वामिसीमन्धरं देवदेवम् . ४

श्रीसर्वज्ञ ! समग्र सौख्य पदवी समप्राप्तिचिन्तामणे !,
सत्कल्याणनिवास ! वासवनत ! त्रैलोक्यचूडामणे !;
सम्यग् ब्रह्ममय स्वरूप विहरत् तीर्थंकराग्रेसर,
श्री सीमन्धरधर्मनायकमहं भक्त्या भवन्तं स्तुवे ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मङ्गलं श्रीमदर्हन्तः, सिद्धाश्च मङ्गलं मम;
मङ्गलं मुनयो नित्यं, मङ्गलं जिनशासनम् . ६

मङ्गलं भगवान् वीरो, मङ्गलं गौतमः प्रभुः,
मङ्गलं स्थूलभद्राद्या, जैनो धर्मोऽस्तु मङ्गलम् . ७

शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः;
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवन्तु लोकाः. ८

सर्वेऽपि सन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः;
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् पापमाचरेत् ९

दिने दिने मञ्जुलमङ्गलमङ्गलावलिः,
सुसम्पदः सौख्यपरम्परा च;
इष्टार्थसिद्धिर् बहुला च बुद्धिः,
सर्वत्र सिद्धिः सृजतां सुधर्मः. १०

उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः;
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे. ११

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम्
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् १२

卐

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीजिनेन्द्रस्तुति स्तवनादि समुच्चय

श्री जिनेन्द्र स्तुति

श्री सर्वज्ञ ! समग्र–सौख्य–पदवी–सम्प्राप्ति चिन्तामणे !,
सत्कल्याण–निवास ! वासवनत ! त्रैलोक्य चूडामणे !;
सम्यग्ब्रह्ममय–स्वरूप ! विहरत् तीर्थङ्कराग्रेसरं,
श्री सीमन्धरधर्मनायकमहं भक्त्या भवन्तं स्तुवे. १

त्रातारं भुवन त्रयस्य परमं सद्योग–मार्गाध्वग !,
ध्येयं ध्येय–पदार्त्रधिं नरवधि ज्योतिः प्रकाशात्मकम्,
ये पश्यन्ति भवन्त–मुत्तमदृशः स्वान्ते निवेश्य स्थिरं,
धन्यानामुपरि श्रयन्ति गुरुतां ते देव ! देहस्पृशः २

भक्ति–प्रह्व–सुपर्व पूजित–पदाम्भोजं जगज्जीवनं,
ब्रह्मजिह्म–लयावदातहृदया ध्यायन्ति योगीश्वराः;
प्रातः पूर्वविदेह भूषणकरं स्वात्माविभेदेन यं,
स श्रीमान् हृदये करोतु वसतिं सीमन्धरः श्री जिनः ३

महाकेवलनाण कल्लाणवासो, सलावण्णसोवण्णवण्णप्पयासो
थुणे सारसिद्धि पुरीसत्थवाहं, सया सामिसीमंधरं तित्थनाहं ४

महीमंडणं पुण्णसोवण्णदेहं, जणाणंदणं केवलनाणगेहं;
महाणंदलच्छीबहुबद्धरायं सुसेवामि सीमन्धरं तित्थरायं. ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम् ;
दर्शनं स्वर्गसोपान, दर्शनं मोक्षसाधनम्. ६

दर्शनाद् दुरित ध्वंसो, वन्दनाद् वांछितप्रदः;
पूजनात् पूरकः श्रीणां, जिनः साक्षात् सुरद्रुमः. ७

जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्, जिने भक्तिर् दिने दिने;
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु, सदा मेऽस्तु भवे भवे. ८

अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम;
तस्मात् कारुण्यभावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर !. ९

अद्य मे सफलं जन्म, अद्य में सफला क्रियाः
अद्य में सफलं सर्वं, जिनेन्द्र तव दर्शनात् १०

अद्य मे कर्मसङ्घातो, विनष्टश्चिरसञ्चितः;
दुर्गत्या विनिवृत्तोऽहं जिनेन्द्र तव ! दर्शनात् ११

अद्य मे क्षालितं गात्रं, नेत्रे च विमलीकृते;
मुक्तोऽहं सर्वपापेभ्यो, जिनेन्द्र तव ! दर्शनात्. १२

न हि त्राता न हि त्राता, न हि त्राता जगत्त्रये
वीतरागसमो देवो, न भूतो न भविष्यति. १३

नमस्कारसमो मन्त्रः, शत्रुंजयसमो गिरिः;
वीतरागसमो देवो, न भूतो न भविष्यति. १४

धन्योऽहं कृतपुण्योऽहं निस्तीर्णोऽहं भवार्णवात् ;
अनादि भवकान्तारे, दृष्टो येन जिनो मया १५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ !,
तुभ्यं नमः क्षितितलामल भूषणाय;
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधिशोषणाय १६

अद्याऽभवत् सफलता नयनद्वयस्य,
देव ! त्वदीय चरणाम्बुज वीक्षणेन;
अद्य त्रिलोकतिलक ! प्रतिभासते मे,
संसार वारिधिरयं चुलुकप्रमाणः; १७

पूर्णानन्दमयं महोदयमयं कैवल्य चिद्दृग्मयं,
रूपातीतमयं स्वरूपरमणं स्वाभाविकी श्रीमयम्;
ज्ञानोद्यातमयं कृपारसमयं स्याद्वाद विद्यालयं,
श्री सिद्धाचलतीर्थराजमनिशं वन्दे युगादीश्वरम्. १८

चैत्यवंदन कर्या पछी करवा योग्य प्रार्थना

जिनधर्मविनिर्मुक्तो, मा भूवं चक्रवर्त्त्यपि;
स्यां चेटोऽपि दरिद्रोऽपि, जिनधर्माधिवासितः. (श्रीयोगशास्त्र)

यावन्नाप्नोमि पदवीं, परां त्वदनुभावजाम्;
तावन् मयि शरण्यत्वं मां मुञ्च शरणं श्रिते. (श्रीवीतरागस्तोत्र)

यदर्थितं येन तदेव तस्य, त्वया ददे वत्सरमर्थ्यसे तत्;
जन्मैव मा दा मम देव ! जन्म, चेत् तत्र यत्रास्यविता प्रभुस्त्वम्.
(श्री सीमंधरस्वामिस्तवनम्)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इह जगत स्वामी, मोहवामी, माक्षगामी, सुखकरू,
प्रभु अकळ, अचळ, अखंड, निर्मळ, भव्य मिथ्या तम हरू,
देवाधिदेवा, चरण सेवा, नित्य मेवा आपीए,
निजदास जाणी दया आणी, आप समोवाड थापीअे. १
भवोभव तुम चरणोनी सेवा, हुं तो मागुं देवाधिदेवा,
सामुं जुओने सेवक जाणी; एवी हृदयरत्नजी वाणी. २

तुज विना में बहु दुःख सह्यां, तुज मिल्ये ते किम होय रे;
मेह विण मोर माचे नहि, मेह देखी नाचे सोय रे,
स्वामि ! सोमन्धरा तुं जयो.

तुं मुज हृदयगिरिमां वसे, सिंह जिम परम निरीहरे;
कुमत मातंगना यूथथी, तो कशी प्रभु मुज बोहरे, स्वा.
मुज होजा चित्त शुभ भावथी, भवोभव ताहरो सेव रे;
याचिए कोडि यतने करी, एह तुज आगळे देव रे स्वा.
वळी वळी विनवुं स्वामिने, नित्य प्रत्ये तुंहि ज देव रे;
शुद्ध आशय पणे मुज होजो, भवोभव तारी सेव रे. स्वा.
माहरी परिणत दोषनी, तीव्रता वारण कार रे:
ताहरा शासन शुभ तणो, राग छे एक आधार रे. स्वा.

॥ आटलुं तो आपजे ॥

आटलुं तो आपजे, भगवन् ! मने छेल्ली घडी;
ना रहे माया तणा, बंधन मने छेल्ली घडी. १
आ जांदगी मोंघी मळी पण, जीवनमा जाग्यो नहीं;
अंत समये मुजने रहे, सार्थ। समज छेल्ली घडी. २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हाथपग निर्बळ, बने, जो श्वास छेल्ला संचरे;
तुं आपजे त्यारे प्रभुमय, मन मने छेल्ली घडी. ३
हुं जीवनभर सळगी रह्यो, संसारना संतापथी;
तुं आपजे शांतिभरी, निद्रा मने छेल्ली घडी. ४
ज्यारे मरण शय्या परे, मिंचाई छेल्ली आंखडी.
तुं आपजे त्यारे प्रभु, दर्शन मने छेल्ली घडी. ५
अगणित अधर्मो में कर्या, तन मन वचन योगे करी;
हे क्षमासागर क्षमा मुजने, आपजे छेल्ली घडी. ६
अंत समये आवी मुजने, ना दमे घट दुश्मनो;
जागृतपणे मनमां रहे, तारुं स्मरण छेल्ली घडी. ७

षोडशप्रकाशः

त्वन्मतामृतपानोत्था, इतः शमरसोर्मयः;
पराणयन्तिमां नाथ !, परमानन्दसम्पदम्. १
इतश्चानादि संस्कार-मूर्च्छितो मूर्च्छयत्यलम् ;
रागोरगविषावेगो, हताशः करवाणि किम् ? २
रागाहिगरलाघातोऽकार्षं यत्कर्मवैसशम् ;
तद् वक्तुमप्यशकताऽस्मि, धिग्मे, प्रच्छन्न पापताम्. ३
क्षणं सक्तः क्षणं मुक्तः, क्षणं क्रुद्धः क्षणं क्षमी:
मोहाद्यैः कीडयैवाहं, कारितः कपिचापलम्. ४
प्राप्यापि नव सम्बोधि, मनोवाक्कायकर्मजैः;
दुश्चेष्टतैर्मया नाथ !, शिरसि ज्वालितोऽनलः. ५
त्वय्यपि त्रातरि त्रातार्, यन्मोहादिमलिम्लुचैः;
रत्नत्रयं मे ह्रियते, हतोशो हा ! हतोऽस्मि तत्. ६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भ्रान्तरतीर्थानि दृष्टरतवं, मयैकरतेषु तारकः;
तत्तवाङ्घ्रौ विलग्नोऽस्मि, नाथ ! तारय तारय. ७

भवत्प्रसदनैवाह–मियतीं प्रापितो भुवम्;
औदासीन्येन नेदानीं, तव युक्तमुपेक्षितुम. ८

ज्ञाता तात ! त्वमेवैक–स्त्वत्तो नान्यः कृपापरः;
नान्यो मत्तः कृपापात्र–मेधि यत्कृत्यकर्मठः. ९

सप्तदशप्रकाशः

स्वकृतं दुष्कृतं गर्हन्, सुकृतं चानुमोदयन;
नाथ ! त्वच्चरणौ यामि, शरणं शरणोज्झितः. १

मनोवाक्कायजे पापे, कृतानुमतिकारितैः;
मिथ्या मे दुष्कृतं भूया दपुनः क्रिययान्वितम्. २

यत्कृतं सुकृतं किञ्चिद्, रत्नत्रियगोचरम्;
तत्सर्वमनुमन्येऽहं, मार्गमात्रानुसार्यपि. ३

सर्वेषामर्हदादीनां, यो योऽर्हत्त्वादिको गुणः;
अनुमोदयामि तं तं, सर्वं तेषां महात्मनाम्. ४

त्वां त्वत्फलभूतान् सिद्धा-स्त्वच्छासनरतान्मुनीन्,
त्वच्छासनं च शरणं, प्रतिपन्नोऽस्मि भावतः. ५

क्षमयामि सर्वान्सत्त्वान्, सर्वे क्षाम्यन्तु ते मयि;
मैत्र्यस्तु तेषु सर्वेषु, त्वदेकशरणस्य मे. ६

एकोऽहं नास्ति मे कश्चिन् न चाहमपि कस्यचित्;
त्वदंघ्रिशरणस्थस्य, मम दैत्यं न किञ्चन. ७

यावन्नाप्नोमि पदवीं, परां त्वदनुभावजाम्;
तावन्मयि शरण्यत्वं, मा मुञ्च शरणं श्रिते. ८

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री सीमन्धरस्वामिजिन चैत्यवंदन ॥

(वातोर्मी)

(१)

पञ्चत्रिंशद्गुणपूर्णा गिरन्ते मृद्वीं मृद्वीं सुरगेयां मनोज्ञाम् ।
शृण्वन् शृण्वन् सुखपाथोधिमग्नो भक्त्याऽहं स्यां प्रभु सीमन्धर !
द्राक् ॥ १
युष्मद्ध्यान मम पापं प्रहर्तुं प्राकट्यं ते गुणपुञ्जो बिभर्ति ।
नाम्नाऽह्लादोऽमर सौख्याद्विशेषो नित्यं सेवे चरणाम्भोजयुग्मम् ॥ २
चारित्रं ते सविधेऽहं कदैत्य लप्स्ये स्वामिन्निति वाञ्छा सदा मे ।
पूर्तिं यायात् कृपया स्वच्छचेतः सैवं कुर्यात्सुरनाथाधिनाथ ! ॥ ३

(२)

जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचम गति गामी;
जय जय करुणावंत प्रभु, भविजन हित कामी; १
जय जय इन्द्र नरेन्द्र, वृंद, सेवित शिर नामी;
जय जय अतिशय अनंत वंत, अंतर गति यामी; २
पूर्वविदेहे विराजता, श्री सीमन्धर स्वाम;
त्रिकरण शुद्धे त्रिकाल मैं, नित प्रति करुं प्रणाम; ३

(३)

चउ जिन जम्बूद्वीपमां अड घातकीखण्डे;
पुष्करार्धे आठ जाणीए, एम विश अखण्डे. १
अड पणवीश चोवीशमी, नवमी विजये विचरंता;
बाळ तरुण नृपपदणे, वळी अपर अरिहंता; २
सित्तेर सो उत्कृष्टथी ए, भरहेरवय प्रमाण;
ज्ञानविमळ जिनराजनी, शिर धरीए शुभ आण. ३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(४)

श्री सीमन्धर वीतराग ! त्रिभुवन उपगारी;
श्री श्रेयांस पिता कुळे, बहु शोभा तुमारी. १
धन्य धन्य माता सत्यकी, जेणे जायो जयकारी;
वृषभ लंछने विराजमान. वंदे नरनारी. २
धनुष पांचसे देहडोए, सोहीए सोवनवान;
कीर्तिविजय उवज्झायनो, विनय धरे तुग ध्यान ३

(५)

वंदु जिनवर विहरमान, सीमन्धरस्वामी;
केवल कमला कांत दांत करुणारसधामी. १
कंचनगिरि सम देहकांत, वृषभ लंछन पाय;
चोराशी-लाख पूर्व आय, सेवित सुरराय. २
छठ्ठ भक्त संयम लीयो ए, पुंडरीगिणी भाण:
प्रभु द्यो दरिसग संपदा, कारण परम कल्याण. ३

(६)

श्री सीमन्धर जगधणी ! आ भरते आवो;
करुणावंत करुणा करो, अमने वंदावो. १
सकळ भक्त तुमे धणी, जो होवो अम नाथ;
भवोभव हुं छुं ताहरो, नहि मेलुं हवे साथ. २
सयल संग छंडी, करी चारित्र लईशुं;
पाय तुमारा सेवीने, शिव रमणी वरीशुं. ३
ए अळजो मुजने घणो ए, पुरो सीमंधरदेव !
ईहां थकी हुं विनवु, अवधारो मुज सेव. ४
कर जोडीने विनवुं, सामो रहो ईशान;
भाव जिनेश्वर ! भाणने, देजो समकितदान. ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(७)

सीमन्धर जिन विचरता, सोहे विजय मोझार;
समवरण रचे देवता, बेसे पर्षदा बार. १
नवतत्त्वनी दिये देशना सांभळे सुर नर क्रोड.
षड् द्रव्यादिक वर्णवे, ले समकित करजोड. २
ईहां थकी जिन वेगळा, सहस्र तेत्रीस शत ऐक;
सत्तावन जोजन वळी, सत्तर कला सुविशेष. ३
द्रव्यथकी जिन वेगळा, भावथी हृदय मोझार;
त्रिहुं काळे वंदन करुं, श्वास माहे सो वार. ४
श्री सीमन्धर जिनवरु ए, पूरे वांछित कोड,
कान्तिविजय गुरु प्रणमतां, भक्ति वे करजोड. ५

(८)

पहेला प्रणमुं विहरमान, श्री सीमन्धर देव;
पूर्व दिशे ईशान खूणे, वंदु हुं नित्यमेव. १
पुक्खलवई विजय तिहां, पु उरीकिणी नयरी
श्री श्रेयांस राजा भलो, जीत्या सवी वयरी. २
देहमान धनुष्य पांचशे, माता सत्यकी नंद;
रुक्मणि राणी लाहलो वृषभ लंछन जिन चंद ३
चौराशी लख पूरव आय, सोवन वरणी काय;
वीश लाख पूरव कुमार वासे: तेम त्रेशठ राय. ४
गणधर चोरासी कह्या ए: मुनिवर एकसो कोडी
पंडित वीरविमल तणो, ज्ञानविमल कहे करजोडी ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९)

श्री सीमन्धर साहिबा, महाविदेहक्षेत्र मोझार;
भक्ति भाव वन्दन करु, दिनमें वार हजार. १
धन्य विजय पुष्कलावती, धन्य पुंण्डरीकिणी धाम;
धन्य धन्य माता सत्यकी, धन्य पिता श्रेयांस नाम २
चोराशीलक्षपूर्व स्थिति, धनुष्य पांचसो काय;
धोरी लंछने शोभती, सोवन वरणी काय, ३
कुंथुनाथ आरे जनमिया, इन्द्रे कियो अभिषेक;
सुव्रत समय दीक्षाग्रही तार्या जीव अनेक. ४
उदय - पेढाल जिनांतरे थासो सिद्ध स्वरूप;
अधभ उद्धारण तारजो दीजो ज्ञान अनुप. ५

(१०)

जयतु जिन जगदेकभानु, काम कश्मल तमहरम् ;
दुरित ओघ विभाव वर्जित, नौमि श्री जिनमन्धरम्. १
प्रभु पाद पद्मे चित्त लयनो, विषय दोलित निर्भरम्;
संसार राग असार घातिक, नौमि श्री जिनमन्धरम् २
अतिरोष वह्नि मान महीधर, तृष्णाजलधि हृतकरम्;
वंचनोर्जित जन्तुबोधक, नौमि श्री जिनमन्धरम्. ३
अज्ञान तर्जित रहित चरणं, परगुणो मे मत्सरम्,
अर्रति आर्दित चरण शरणं नौमि श्री जिनमन्धरम् ४
गंभीर वदनं भवतु दिन दिन, देहि मे प्रभु दर्शनम्;
भावविजय श्री ददतु मंगल, नौमि श्री जिनमन्धरम्. ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(११)

जयश्रिया मोहरिपोरवाप्त–त्रिलोकसाम्राज्यरमाभिरामम् ।
विदेहभूमण्डल–मण्डनं श्रीसीमन्धरस्वामिनमानुवामि ॥ १

स्तवीमिसीमंधर! पक्षिणोऽपि, पश्यन्तिये पक्षबलादिमं त्वाम ।
अहं तु पापस्तव दर्शनार्थ–मनोरथैरेव सदा कदर्थ्ये. ॥ २

मनोरथारप्यथवा भवन्तु, सदा भवद् दर्शन गोचरा में ।
ध्यातोऽपि यत् पूजितवद् ददासि, त्वमीप्सितं सर्वमिति प्रमोदे ॥ ३

अनाद्यविद्योदरपाशबद्धं, मां मोचय त्रातरिहापि सन्तम् ।
पयोजगर्भं प्रतिपन्नरोधं, भृङ्गं यथा दूरगोऽपि भानुः. ॥ ४

विधूय रागादिभवान् विकारान्, दधासि रूपं निरुपाधिकं यत् ।
त्रिलोकपूज्य ! भवतः प्रासादान्ममापि तत्रानुभवोऽस्तु सम्यक्. ॥ ५

(१२)

समवसरणे विराजता, श्री सीमंधरस्वामी;
मधुर ध्वनि दिये देशना, वाणी सुधा समाणी. १

पर्षदा बेठी सांभळे, वाणीनो विस्तार;
सहु सहुना मनमां थया, आनंद हर्ष अपार. २

जाति वैर शमावीयुं, प्रभु अतिशय अद्‌भुत;
संशय सर्वना टाळता, करता भविजन पूत. ३

हुं निर्भागी इहां रडवडुं, शा कीधां में पाप ?
ज्ञानी विनानी गोठडी, क्यां जइ करुं विलाप ४

मात विनानो बाळ जेम, आथडतो कुटातो;
आव्यो छुं तुज आगळे राखो तो करुं वातो. ५

क्रोड क्रोड वंदना माहरी, अवधारो जिनदेव;
मागुं निरंतर आपना, चरणकमळनी सेव. ६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१३)

सोमंधर परमात्मा, शिवसुखना दाता;
पुखलवइ विजये जयो, सर्व जीवना त्राता. १

पूर्व विदेहे पुंडरीगिणी, नयरीए सोहे
श्री श्रेयांस राजा तिहां, भवियणना मन मोहे. २

चौद सुपन निर्मळ लही, सत्यकी राणी मात;
कुंथु अरजिन अंतरे, श्री सीमन्धर जात. ३

अनुक्रमे प्रभु जनमिया, वळी यौवन पावे;
माता पिता हरखे करी, रुकमिणी परणावे. ४

भोगवी सुख संसारनां, संजम मन लावे;
मुनिसुव्रत नमि अंतरे, दीक्षा प्रभु पावे. ५

घाति कर्मनो क्षय करी, पाम्या केवळनाण;
वृषभ लंछने शोभता, सर्व भावना जाण. ६

चोराशि जस गणधरा, मुनिवर अेकसो क्रोड;
त्रण भुवनमां जोवतां, नहि कोइ एहनी जोड. ७

दश लाख कह्यां केवळी, प्रभुजीनो परिवार;
एक समय त्रण काळनां, जाणे सर्व विचार. ८

उदय पेढालजिन अंतरे ए, थाशे जिनवर सिद्ध;
जसविजय गुरु प्रणमतां, शुभ वंछित फळ लीध. ९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१४)

श्री सीमन्धर जिनवरा, विचरे जंबूद्वीपे;
पुक्खवइविजये नगर, पुंडरीगिणी दीपे. १
सुत श्रेयांस राजा तणो; सोवन कंचन काय;
पूरव चोराशि लाखनुं, आयु जास सोहाय. २
पांचशे धनुष्य शरीर छे, वृषभ लंछन पाय;
रुक्खमणी राणी नाहलो, सत्यकी जेहनी माय. ३
दश लाख केवळी जेहने, सो कोडी मुनिस्वामी;
साध्वी सो कोडी कही, श्रावक संख्या न पामी. ४
प्रतिहार ज आठ छे, वाणी गुण पांत्रीश;
पूरवविदेहे जाणीये, नमतां लहीये जगीश ५
ईह भरते प्रभु कंथजी, सिद्धिपुर पोहंते;
अरजिन जन्म हुओ नहि, ए अंतर सोहंते ६
सीमन्धर जिन उपना, सुरपति महोच्छव कीधो;
सुव्रत नमि जिन अंतरे, दीक्षा कल्याणक सीधो ७
उदय पेढाल भावि प्रभु, तस अंतर कहेवाय;
सीमन्धर जिन पामशे, अविनाशी पुर ठाय. ८
आ भरते पण कोई जीव, सुलभ बोधि जेह;
जाप जपे तुज नामना, लाख संख्याए तेह. ९
भवस्थिति निर्णय तसु हुए अथवा ध्यान पसाये;
उपजी विदेह केवळ लहे, नवमे वरस उत्साहे. १०
शासनसूरी पंचांगुली सवि सानिध्य सारे,
सीमन्धर जिन सेवना, दुःख दोहग वारे. ११
प्रह उठीने नित्य नमु, आणी मन आनंद;
लक्ष्मीसूरि प्रभु नामथी, प्रगटे परमानंद १२

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१५)

विंशति विहरमाण जिन चैत्यवन्दनम् ।

सीमन्धरं स्तौमि युगन्धरं च, बाहु सबाहुं च सुजातदेवम् ।
स्वयंप्रभं श्री ऋषभाननाख्य-मनन्तवीर्यं च विशालनाथम् ॥
सुरप्रभं वज्रधरं च चन्द्राननं नमामि प्रभुभद्रबाहुम् ।
भुजङ्गनेमिप्रभतीर्थनाथा - वथेश्वर श्री जिनवीरसेनम् ॥
स्तवीमि च महाभद्रं, श्री देवयशसं तथा ।
अर्हन्तमजितवीर्यं, वन्दे विंशतिमर्हताम् ॥

(१६)

(उपजाति-वृत्तम्)

सुश्रावक चंपकलाल काळीदास हरडे कृत
श्री विंशति विहरमाणजिननामस्तवः ॥

सीमन्धरेशं युगमन्धरं च, बाहुं सुबाहुं गुणमन्दिरं च ।
सुजातनाथं सुरनाथ-सेव्यं, स्वयंप्रभं स्तोमि सुरप्रभं च ॥१॥

चन्द्राननाख्यमृषभाननं च, श्री चन्द्रबाहुं च भुजङ्गमीशम्
अनन्तवीर्याजितवीर्यनाथौ, नमामि नेमिप्रभमीश्वरं च ॥२॥

विशालदेवं जिनवीरसेन-महर्निशं देवयशो जिनेशम् ।
श्रीमन् महाभद्रमनन्तसौख्यं वन्दे सदा वज्रधरं जिनेन्द्रम् ॥३॥

(अनुष्टुप)

विहरन्तो जिना एते महाविदेह-मण्डनाः ।
भवेयुर् भव्यजीवानां, कोटिकल्याणदायकाः ॥४॥

पंचशतधनुर्माना - "अम्पक" द्युतिदेहिनः ।
जिनाः स्युः सर्वसत्त्वानां, कोटिकल्याणदायकाः ॥५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१७)

सीमंधर युगमंधर प्रभु, बाहु सुबाहु चार;
जंबूद्वीपनां विदेहमां, विचरे जगदाधार: १
सुजातसाहेब ने स्वयंप्रभ, रूषभानन गुणमाल;
अनंतवीर्य ने सुरप्रभ, दशमा देव विशाल, २
वज्रधर चंद्रानन नमुं, धातकीखंड मोझार.
अष्टकर्म निवारवा, वंदु वार हजार. ३
चंद्रबाहु ने भुजंगप्रभ, नमि ईश्वर वीरसेन;
महाभद्र ने देवजशा, अजितवीर्य नामेन. ४
आठे पुष्करार्धमां, अष्टमी गति दातार;
विजय अडनव चउविशमी, पणविसमी किरतार. ५
जगनायक जगदीश्वरु ए, जगबंधव हितकार;
विहरमानने वंदता, जीव लहे भवपार. ६

(१८)

पहेला जिनवर विहरमान, श्री सोमंधरस्वामी;
युगमंधर बीजा नमुं, मुज अंतरजामी. १
त्रीजा बांहु जिनेसरु, प्रणमुं भगवंत;
चोथा जिन श्री सुबाहु, वंदु वळी जुगते. २
श्री सुजात पंचमजिन ए छट्टा स्वयंप्रभस्वामी;
ऋषभानन जिन सातमा, हुं प्रणमुं शिरनामी. ३
अनंतवीर्य जिन आठमा, सुरप्रभ छे नवमा,
श्री विशाळ दशमा जिणंद, जस मोटो महिमा ४
श्री वज्रधर अगीयारमा बारमा चंद्रानन,
चंद्रबाहु जिन तेरमा, जस वर्णो कंचन ५
भुजंगस्वामी जिन चौदमा, वंदु उलट आणी,
श्री ईश्वर जिन पंदरमा, नमीए नित्य सुविहाण. ६
नेमिप्रभ जिन सोळमा, सुखदायक जेह,
सत्तरमा श्री वीरसेन. वंदु धरी नेह. ७
महाभद्र अढारमा, देवजशा ओगणीश,
अजितवीर्य जिन विशमा, ज्ञानविमलसूरीश. ८

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री सीमंधरजिननी स्तुतिओ

(१)

मुज आंगणे सुरतरु उगीयो, कामधेनु चिंतामणि पुगीयो
सीमंधरस्वामी जो मिले, तो मनह मनोरथ सवि फले. १

हुं वंदु विशे विहरमान, ते केवलज्ञानी युगप्रधान,
सीमंधरस्वामी गुण निधान, जेणे जित्या कोह लोह मोह मान २

आंबावन समरे कोकिला, मेहने वंछे जिम मोरला,
मधुकर मालती परिमल रमे, तिम आगमे मारुं मन रमे. ३

जय लच्छी शासन देवता, रत्नत्रय गुण जे साधता;
विमल सुख पामे ते सदा, सीमंधरजिन प्रणमुं सदा ४

(२)

सीमंधरस्वामी निर्मळा, तुम ज्ञान उपनुं केवळ;
सीमंधरस्वामी तार तार, मुज आवागमन वारवार. १

सीत्तरीसय जिनवर वंदीये, जस नामे पाप निकंदीये;
संप्रति जिन सोहे विश सार, ते भवियण वंदो वारंवार. २

जिनवाणी साकर शेलडी, पीतां जाणे अमृत वेलडी,
जिन आगम सागर सेवतां, लहो विद्यारयण सोहावता. ३

सीमंधर जिनपद अनुचरी, श्री संघ प्रत्ये बहु सुख करी,
कनकाभासा शासनसूरी, दो वांछित देवी पंचागुली. ४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३)

सीमंधरस्वामी मोरा रे, हुं तो ध्यान धरुं तोरा रे,
राणी रुक्ष्मणीना भरतार रे, मन वंछिते फल दातार रे. १

वीश विहरमान जिन नामें रे, वीशने करुं प्रणाम रे,
जेनु दर्शन आनंदकारी रे, तेने पाय नमे नरनारी रे. २

गणधरने त्रिपदी दीधी रे, सिद्धांतनी रचना कीधी रे,
एनो अर्थ अनुपम लहिये रे, सुगुरुने वचने रहिये रे, ३

देवी पंचांगुली सानिध्यकारी रे, तेणे पाय नमे नरनारी रे;
ए तो थोय रची ते सारी रे एवा कनक सो भागी जयकारी रे, ४

(४)

(राग : चोपाई छंद)

सीमन्धरजिन ध्याइई, जिम दुरित सवि मिटाइई;
अष्टकर्म ते दूर जाइ ई, जिम शिवसुख पदवी पाइई. १

सीमन्धर ध्यान धरे, जिम अडसिद्धि नवनिधि करे;
संसार फेरीमां नवि फरे, वली अविचल पदवी तिम वरे. २

सीमन्धर जिन सोहे छे. बेठा भविजनने पडिबोहे छे;
नर नारी वृंद जे मोहे छे, आनंदित थई प्रभु जोहे छे. ३

पंचांगुली देवी जय करुं, वली इति उपद्रव ते संहरुं;
जिन शासनमां शोभा करुं, कहे पद्म ऋद्धि वृद्धि करुं. ४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(५)

(राग : चोपाइ छंद)

उजियाली बीज सुहावई रे शशीरूप अनुप विभावई रे,
चंदा विनति चित्तमां धरजो रे, सीमन्धरसे वंदन करजो रे, १

बीश विहरमान जिनवांदी रे, जिन शाश्वत पूजो आनंदी रे,
तिहां नाम अमारुं लेजो रे, चंदा ए हितकामित देजो रे, २

सीमन्धरजिन वाणी रे, चंदा सुणतां अमीय समाणी रे,
ते निसुणो अमने सुणावो रे, भव संचित पाप गमावो रे, ३

श्री सीमन्धरजिन सेवी रे, चंदा भासन शासनदेवी रे:
ते होजो संघनई त्राता रे, गजागंद आनंद विख्याता रे, ४

(६)

अजुवाळी ते बीज सोहावे रे, चंदारूप अनुपम भावे रे,
चंदा विनवडी चित्त धरजो रे, सीमन्धरने वंदणा कहेजो रे. १

बीश विहरमाण जिनने वंदो रे, जिनशासन पूजो आणंदो रे,
चंदा एटलुं काम मुज करजो रे, श्री सीमन्धरने वंदणा कहजो रे. २

श्री सीमन्धर जिननी वाणी रे, ते तो पीतां अमीय समाणी रे,
चंदा तुमे सुणी अमने सुणावो रे, भव संचित पाप गमावो रे. ३

श्री सीमन्धरजिननी सेवा रे, जिनशासन भासन मेवा रे,
तुमे होजो संघना त्राता रे, जगत चंद्र विख्याता रे. ४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(७)

(राग : शत्रुंजय मंडन...)

अजवाळी बीजे चंदा तुं अवधार,
विनतडी मारी जाय विदेह मोझार;
प्रणमुं सीमन्धर मुज दुरित करजोड;
नमतां प्रभुजी नित पहोंचे वंछित कोड. १

उत्कृष्टे काळे सित्तोरसो जगनाथ,
उपजे महीमंडल मुगतिपुरीनो साथ;
तिहां केवळज्ञान केवळदर्शन अनंत,
समरो भवि भावे जिम पामे भवअंत. २

अढी द्वीपमांहे पंच विदेह प्रधान,
विचरे तिहां प्रतिदिन विश विहरमान,
अतिशे गुणवंता दे भवियण उपदेश,
तस वाणी सुणता सांसो नहि लवलेश. ३

शासनहितकारी समकितदृष्टिदेव,
ते सांनिध्य कीजे श्री संघनित प्रतिमेव;
श्री विजयगच्छनायक सागरज्ञानसूरिंद,
पदपंकज प्रणमुं अहनिशि वीरजिणंद. ४

(८)

(राग : शत्रुंजय मंडन ऋषभजिणंद दयाळ)

श्रीजिन सीमन्धर बंधुर नाण निवास,
प्रणमुं त्रिगडे सोहे मोहे लीलविलास;
सेवकजन केरी वंछित पूरई आश,
सवि संपत्ति मेलई जेहतणा गुणराश. १

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चोवीशे जिनवर आदि आदिजिणंद,
सिद्धारथनंदन जाव वीर सुखकंद:
पातिकदल गयघड दूरीकरण मयंद,
सुखसार सुधारस वरसो ज्युं जगचंद. २

सघळा जे शास्त्रो कळातणा विस्तार,
तेजे जलनिधिनो एकइ बिंदु उगार:
भणई ते आगम अरथरयण भंडार,
शुभ मति आदरई वरोई जयजयकार. ३

सीमन्धर जिनवर शासन शोभाकार.
पंचागुलीदेवी हिडयई हेज अपार:
विजयदेव पटोधर विजयसिंह गणधार:
जयउदय महोत्सव ऋद्धिवृद्धि विस्तार. ४

❀

(९)

(राग : शत्रुंजय मंडन.....)

सीमन्धर जिनपति विनति सुणो महारांज,
भवभ्रमण निवारी तारी द्यो शिवराज:
मुज आशा पूरण चूरण कर्म जंजीर,
तुम सम नहि जगमां इणमें कोई सुधीर १

पाडव विदेहमां सोहे विजय शत साठ.
उत्कृष्टे काळे सित्तेर सो जिन पाठ.
विहरमान विचरे विरह नहि त्रिहुं काळ
ए जिनने नमीई लहीई संभाळनार. २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिन त्रिगडे सोहे मोहे परषदा बार,
जिनवाणी सुणतां केई पामे भवपार;
नव तत्त्व विचारी सारी सीमन्धरवाण,
समजे सवि प्राणी बूझे जाण अजाण. ३

जिन शासननायक दायक समकित सार,
तस आणाकारो सुविचारी नर नार;
तस सांनिध्य करजो हरजो विघन अनेक,
देव देवीनी शक्ति कान्ति सेवक सुविवेक. ४

(१०)

(राग : शत्रुंजय मंडन .....)

श्री सीमन्धर जिनवर राय नमुं नित पाय;
चोराशी पूरव लाख तणुं जस आय;
सोवनवन सोहे जग मोहे जगदीश,
संप्रति जगमांहे सबली जास जगीश. १

अतीत अनागत वर्तमान भगवंत,
पन्नरे क्षेत्रे जे राखे जग जंत;
वली वंदु भगहि विहरमान जिन वीश,
सुखदुख सवि जगमां जे जाणे निशदिश. २

आगमने अंगो करी तुज परतिकख एह,
विष विषयने टाळे निःसंदेह;
पंगु पय पामी जिनवाणी अभ्यास,
कीजे सुणो भवियण जिम पहुंचे सवि आस. ३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिनशासन भासन सकल सुरासुर देव,
देवी वली समकितवंतो जे नितमेव,
जिनशासन सानिध्य कीजे करुणा आणी
सांभळजो सुर सघळां श्रीलब्धिविजयनी वाणी. ४

ॐ

(११)

(शत्रुंजय मंडन.....)

सीमन्धर मूरति सूरति सुरतरुकंद,
जस सेवइ सुर नर विद्याधर नरिंद,
ते धन धन कहीई जे मनइ तुम शीश,
मुज होज्यो भव भव तुम सेवा जिन ईश. १

वर केवल नाणइ शोभित अतिशज वंत
वर वाणी गुण ते पांत्रीसे सुहंत;
सवि दोष रहीत ते वीशे जिन विचरंत,
जस नाम जपंता लहीइ सुख अग्रंत, २

जस गणधर गिरुआ गुंथई अंग उपाग,
चउद पुरव पूरां सांभळतां सुख संग,
जस अमीय समाणी वाणी जिनलर संत,
धन धन ते मुनिजन अनुदिन ते सुणंत, ३

वर कर कडी चूडी रंग रसाल,
कटी मेंखल सलकइ नेउरडी झमकार,
झासन सुरदेवी धेवी श्रीजिन पाय,
संघ विघन निवारी विजय सौभाग्य सुखदाय ४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१२)

(जिनेश्वर अति.....)

श्री सीमन्धर युगमंधर स्वामि, बाहु सुबाहु ते जाणोजी,
सुजात ने स्वयंप्रभ ऋषभानन, अनंतवीर्य वखाणोजी,
वंदु सुरप्रभ विशाल वज्रधर, चंद्रानन चंद्रबाहुजी,
भुजंग ईश्वर नमिप्रभ वीरसेन, महाभद्र देवयश प्राहुजी, १

अजितवीर्य ए वीश जिणंदा, महाविदेह विचरंताजी,
केई कुमरपद केई नृपपदवी, केइ जिनेश महंताजी;
अढी द्वीपमां पंचविदेहे, विहरमान जिन वीशोजी,
भाव धरीने नित प्रणमंता, पहोंचे मनह जगीशोजी. २

दान शीयल तप भाव अहिआ, अे जिन आगम सारजी,
प्रवचनमां एह जिनवर भाख्यो, ते पाळो निरधारजी;
अमीय समाणी श्रीजिन वाणी, गूंथी गणधर जाणीजी,
ते आगम भविजन आराहो, भाव अधिक मन आणीजो. ३

समकितधारी सानिध्यकारी, देव देवी सुखकारीजी,
जिन शासन अधिष्ठायक सुरवर, संघ सकल हितकारीजी;
पंचागुलीदेवी जिनवर सेवी, निज सेवकने सहायजी,
श्री कपुरविजय सद्गुरु सुपसाये मानविजय गुण गायजी. ४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१३)

(राग : ऋषभ चंद्रानन वंदन कीजे)

पुंडरीगिणी नयरी जस पुरी, श्री श्रेयांस नरेशोजी,
राणी सत्यकी घरणी जाणो, सोम गुणे करी प्रीतोजी;
सीमन्धर तस नंदन सुंदर, रुखमणीनो भरतारोजी,
वृषभ लंछन सेवे नर राणा, कंचनवरण सफारोजी. १

कुंथु अरजिन अंतर जायो, सीमंधर जगदीशोजी,
मुनिसुव्रतजिन नमिने अंतर, लहइ दीक्षा जिन ईशोजी,
उदयदेव पेढालने अंतर, लहेशे मुक्ति अभंगोजी,
इत्यादिक जिन सघळां नमीइ, जिम होई नित्यनित्यरंगोजी. २

पुक्खलवई विजय मांहे राजे, गुहरी वाणी गाजेजी,
मनछाइ लव सप्तम सुरना, दुरघट संशय भांजेजी;
सुर नर तिर्यंचादिक सहु समजे, अतिशय चोत्रीश राजेजी,
छत्रत्रय चामर तस विंजई निरखे बहु दिवाजेजी. ३

सीमंधरजिन शासन रखवाली, पंचागुली धन पूरेजी,
भरतक्षेत्रमां जे तुज समरे, तेहनां संकट चूरेजी;
हस्त अढार आयुध करी सोहे, भविका वळी संत्राताजी,
उदयचंद बुध चरण पसाई, कहे सुखचंद विख्याताजी. ४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१४)

(राग : वीर जिनेश्वर अति अलवेसर)

श्री सीमंधर साहेब मेरा, विनतडी अवधारोजी,
नरक निगोद भीति निवारो, जनने तारणहारोजी;
राय श्रेयांसकुल नगीनो, माता सत्यकी संतोजी,
रुखमणीकंत विराजित सोहे, भवभंजन भगवंतोजी १

त्रिजग धारण युगल निवारण, समकित दाइ सारोजी,
मिथ्यात्व घन तिमिर निवारण, धर्मरूप दातारोजी;
उपशमरस ध्याननो दरियो, गाजे गुहिर गंभीरोजी,
प्रवचनसार सुधारस वरसे, उपशम निरमल नीरोजी. २

श्री सीमंधर साहिब दिये, अभिनव आगम दरियोजी,
उद्योते शशी सूर समा गुण मिथ्यात्व सवि हरियोजी;
क्रोध लोभ अरु माया केरो, ताप हरे सवि दूरोजी,
केवळज्ञाने सूरज ज्युं ओपे, भविजनने आधारोजी. ३

पगे नेउर रुमझुम करती, कंठे नवसरहारोजी,
कर कंकण वर चूनडी विराजे, बाजुबंध सफारोजी;
काने कुंडळ शिर मुगट मनोहर, सजी सोल शणगारोजी,
शासनदेवी विघन निवारण, पद्मविजय जयकारोजी. ४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१५)

श्री सीमन्धर पाय प्रणमीजे, समकित रयणे लहिएजी,
तस आणा नित्य शिर वहीजे, जेथी कर्म खपीजेजी;
महाविदेहे जिन वंदीजे, आतमगुण नंदीजेजी,
प्रह उठी नित्य नित्य जपीजे, शिवरमणी खप कीजेजी. १

आनंद अर्पण जिनवर वीशे विदेहक्षेत्रे वंदोजी,
सीमन्धर युगमन्धर आदि पाप तिमिरहर चंदोजी,
चंद्र भुजंगम ईश्वर नेमि, आदि नाम लई नंदोजी,
जिन जिन जिन इम नित्य जपंतां, हरीये भवभव फंदोजी. २

जिनवाणी गुणखाणी जाणी पीजे अमृत समाणीजी,
वाणी पीतां कर्मनी हाणी आगमथी एम जाणीजी,
स्याद्वाद दीप नयथी वखाणी, गणधरदेव गुंथाणीजी
पालन करतां शिव निशानी बनशे केवलनाणीजी. ३

हरती होळी विघ्ने रोळी, केशर चंदन घोळीजी,
नव अंगे पूजे जिन टोली, भक्तिभाव रंगरोळीजो,
शासन भक्तो-भक्ति अमोली, हृदयकमलने खोलीजी,
लब्धिसूरि कहे जय जिन डोली, बोले ऐवी बोलीजी. ४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१६)

जगचिंताभणि सुरतरु सरीखा सीमन्धर जिनरायजी,
प्रातिहारज आठ विरारी, कनकवरणमयी कायाजी,
अतिशयधारी ने सुविहितकारी, टाळे भवभय फेराजी,
अमर अमरी नर सेवे पदकज, प्रणमुं उठी सवेराजी. १

त्रण भुवनमां उद्योतक भानु, शाश्वत जिनवर सोहेजी
ऋषभ चंद्र वारिषेण वर्धमान, भविक कमळ पडिवोहेजी
क्रोड पनरसे क्रोड बायालीश, लख अडवन सुखकंदोजी,
सहस छत्तीस ने उपर एंसी, शाश्वता जिन नित वंदोजी. २

आठ क्रोड अने छप्पन लाख सत्ताणुं सहस उदारजी,
बत्तीसे व्यासी तिहुं लोकना, शाश्वता चैत्य जुहारोजी;
करुणासागर गुणवयणागर, सीमन्धर जिन भाखेजी,
भविजन करण कचोले पीवंतां, वाणी सुधारस चाखेजी. ३

मृगमद केसर चंदन कर्पूर, पूजो पंचागुली पायजी,
सुकृत करणी ने दुष्कृत हरणी, संघ सकल सुचदायजी
श्रीसीमन्धरजिन ध्यान करंता, संकट विकटने चूरेजी,
कृष्णविजय सुशिष दीप सेवकना, मनह मनोरथ पूरेजी. ४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१७)

श्री सीमन्धर सेवति सुरवर, जिनवर जय जयकारीजी,
धनुष पांचशे कंचन वरणी, मूरति मोहनगारीजी
विचरंता प्रभु महाविदेहे, भविजनने हितकारी जी
प्रह उठी नित्य नाम जपीजे, हृदयकमलमां धारीजी. १

सीमन्धर युगबाहु सुबाहु, सुजात स्वयंप्रभ नामजी;
अनंत सुर विशाल वज्रधर, चंद्रानन अभिरामजी;
चंद्र भुजंग ईश्वर नेमिप्रभ, वीरसेन गुणधामजी.
महाभद्र ने देवयशा वळी, अजित करुं प्रणामजी. २

प्रभु मुखवाणी बहु गुणखाणी, मीठी अमीय समाणीजी,
सूत्र अने अर्थे गुंथाणी, गणधरथी विरचाणीजी;
केवलनाणी बीज वखाणी, शिवपुरनी निशाणीजी,
उलट आणी दिलमांहे जाणी, व्रत करो भविप्राणीजी. ३

पहेरी पटोळी चरणां चोळी, चाली चाल मराळीजी,
अति रूपाळी अधर प्रवाळी, आंखलडी अणीआळीजी,
विघ्न निवारी सानिध्यकारी, शासननी रखवाळीजी,
धीरविमल कविरायनो सेवक, बोले नय निहाळीजी. ४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१८)

श्री सीमंधर मुजने वहाला, आज सफळ सुविहाणुंजी,
त्रिगडे तेजे तपता जिनवर, मुज तुठ्यां हुं जाणुंजी,
केवळ कमळा केलि करंता, कुळमंडल कुलदीवोजी,
लाखचोराशी पूरव आयु, रुखमणी वर घणुं जीवोजी. १

संप्रतिकाले वीश तीर्थङ्कर उग्या, अभिनव चंदाजी,
केई केवळी केईबालकर परण्या, केई महीपति सुखकंदाजी,
श्री सीमंधर आदि अनोपम, महाविदेहक्षेत्रे जिणंदाजी,
सुरनर कोडाकोडी मळी वळी, भोवे मुख अरविंदाजी. २

सीमंधर मुख त्रिगडुं जोवा, हुं अलजायो वाणीजी,
आडा डुंगर आवी न शकुं, वाट विषम अरु पाणीजी,
रंग भरी राग धरी पाय लागुं, सूत्र अर्थ मन सारोजी,
अमृतरसथी अधिकी वखाणी, जीवदया चित्त धारोजो. ३

पंचांगुली में प्रत्यक्ष दीठी, हुं जाणुं जगमाताजी,
पहेरण चरणा चोळी पटोळी, अधर विराजे राताजी;
स्वर्गभुवन सिंहासन बेठी, तुंही ज देवी विख्याताजी,
सीमंधर शासन रखवाळी, शान्तिकुशळ सुखदाताजी. ४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१९)

श्री सीमंधरदेव सुहंकरुं, मुनि मन पंकज हंसाजी,
कुन्थु अरजिन अंतर जनम्या, तिहुअण जस परशंसाजी,
सुव्रत नमि अंतर वरी दीक्षा, शिक्षा जगत विभासेजी,
उदय पेढाल जिनान्तरमां प्रभु, जाशे शिववहु पासेजी १

बत्रीश चउसठि मलीया, ईगसयसट्ठि उक्किट्ठाजी,
चउ अड अड मली मध्यकाळे, वीश जिनेश्वर दिट्ठाजी;
दो चउ चार जघन दश जंबू धायई पुष्कर मोजारजी,
पूजो प्रणमो आचारांगे, प्रवचनसार उद्धारजी. २

सीन्मधर वर केवल पामी, जिनपद खवण निमित्तोजी;
अर्थनी देशना वस्तु निवेशन, देतां सुणता विनीत्तोजी;
द्वादश अंग पूरव सूत्र रचीया, गणधर लब्धि विकसीयाजी;
अपज्जवसिय जिनागम वंदो, अक्षयपदना रसीयाजी. ३

आणा रंगी समकित संगी, विविधभंगी व्रतधारीजी;
चउविह संघ तीरथ रखवाली, सहु उपद्रव हरनारीजी;
पंचांगुलीसुरी शासनदेवी, देती तस जस ऋद्धिजी,
श्री शुभवीर कहे शिव साधन, कार्य सकलनी सिद्धिजी. ४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२०)

(राग : सत्तर भेदी जिनपूजा रचीने)

पूर्वदिशि उत्तरदिशि वचमां, ईशान खूणो अभिरामजी,
तिहां पुक्खलवई विजया पुंडरीगिणी, नयरी उत्तम ठाणजी;
श्री सीमंधरजिन संप्रति केवली, विचरे जयकारीजी,
बीजतणे दिन चंद्रने विनवुं, वंदना कहेजो अमारीजी. १

जंबूद्वीपमां चार जिनेश्वर, धातकीखंडे आठ जी,
पुष्कर अरधे आठ मनोहर, एहवो सिद्धांते पाठजी,
पंच महाविदेह थईने, विहरमान जिन वीशजी,
जे आराधे बीज तप साधे, तस मन हुई जगीशजी. २

समवसरणमां बेसी वखाणी, सुणे इन्द्र इन्द्राणीजी,
सीमंधरजिन प्रमुखनी वाणी, मुज मन श्रवणे सुहाणीजी,
जे नर नारी समकितधारी, अे वाणी चित्त धरशे जी,
बीजतणो महिमा सांभळतां, केवल कमला वरशेजी. ३

विहरमानजिन सेवाकारी, शासनदेवी सारीजी,
सकलसंघने आनंदकारी, वांछित फल दातारीजी;
बीजतणो तप जे नर करशे, तेनी तुं रक्षाकारीजी,
वीरसागर कहे सरस्वतीमाता, दीओ मुज वाणी रसालीजी. ४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२१)

(राम–रघुपति राघव राजाराज)

सीमंधरस्वामी गुणनीला, किम वांदु जई वस्या वेगला;
बीजे चंदलो उग्यो उदयकाल, भावे वंदना होजो त्रण काल १

वांदु वीसे जिनवर विहरमान, पांचे तिथि पाम्या विमलज्ञान,
जगनाथजी बाळो विषय कक्ष भावे वंदना ज्यां होजो दोय पक्ष. २

बीजे तप कर्या सुखसाधना, श्रावकमुनि धर्म आराधना;
बेसी त्रिगडे कहे सीमन्धर तिहां आथम गूंथे गणधार. ३

पंचागुली संघ रखवालिका मुज देजो मंगलमालि;
भावविजय वाचकनो शीस भाण, कहे तुट्ठो देवी कर कल्याण. ४

(२२)

जंबूद्वीप विदेहमां विचरे, सीमन्धरजिन भाणजी,
सोवनवान ऋषभलंछन तनु, पांचसे धनुष प्रमाणजी;
घातीकर्म क्षये प्रभु पाम्या, केवलदंसण नाणजी,
लोकालोक प्रकाशक वंदु, नित नित हुं सुविहाणजी. १

जंबूद्वीपमां चार जिनेसर, धातकीखंडे आठजी,
पुकरार्धमां आठ जघन्यथी, वीसतणा बहु पाठजो;
उत्कृष्टा सित्तेर सो वंदो, धर्मतणा जिहां ठाठजी,
प्रातःसमे परमेश्वर प्रणमो, कर्म खपावो आठजी. २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रिगडे बेसी गणधर थाये, चउविध संघ उदारजी,
धर्म प्रकाशे चउमुख चउविध, सुणती परखदाबारजी,
पंचवर्णांशुक अनियत आवश्यक, तिम वली महाव्रत चारजी,
इणि अरथे द्वादशांगी मनोहर, हुं वंदु श्रीकारजी. ३

धन्य ते देव जे समकितधारी, सीमन्धर जिनरायजी,
वंदे पाप निकंदे भवनां, सुणे देशना निरमायजी;
ते सुर हितकर थई जिन उत्तम, मेलो मुने आयजी,
पद्मविजय कहे जिणी परे मुजने, वहेलुं शिवसुख थायजी. ४

(२३)

श्री वीश विहरमाननी स्तुति

(राग : मनोहर मूर्ति महावीर तणी)

पंचविदेह विषे विहरंता, वीस जिनेसर जग जयवंता;
चरणकमल तस नामुं सीस, अहनिसि समरुं ते जगदीस. १

पंच मेरु पासे झलकंता, सोहे वीस महागजदंता;
तिण उपरी छे जिनवर वीस, ते जिनवर प्रणमुं निसदिस. २

गणहर कहीय दुवालस अंग, थानक वीस भण्यां तिहां चंग;
तिण उपरी जे आणे रंग, ते नर पामे सुख अभंग. ३

जिनशासनदेवी चउवीश, पूरे मुज मनतणी जगीश;
संघतणा जे विघन निवारे, तिहुअण जन मनवंछित सारे. ४

ॐ ॐ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राकृत स्तुतिओ

(२४)

(भुजङ्गप्रयातवृत्तम्)

महाकेवलणाण कल्याण वासो, सलावण्णसोवण्णवण्णप्पयासो ।
थुणे सार सिद्धि पुरि सत्थवाहं, सया सामिसीमन्धरं तित्थनाहं ॥१॥

सुरा किन्नरा जास पायारविंदे, नमंसंति भुयालसेविज्ज वंदे ।
तिलोइजणाणंदणंपुण्णचंदा,सुहं दितु मे स व्वया ते जिणिंदा ॥२॥

सया पावसंतीयपीयुषपूरं, तमोरासिनिण्णासउल्लाससूरं ।
गुणापारसंसारकुवारसेउं, जिणिंदागमो वंदिमो सुक्खसेउ ॥३॥

जगण्णाहसीमन्धरं पायभत्ता, पवित्ताणरत्ता सुसत्ताण जत्ता,
सुंहसव्वभव्वाण संपूरितासा, सया सेय पतिंगिरा देवीआसा ॥४॥

(२५)

(भुजङ्गप्रयातवृत्तम्)

महीमंडणं पुण्णसोवण्णदेहं, जणाणंदणं केवलनाणगेहं;
महाणंद लच्छी बहु बुद्ध रायं, सुसेवामि सीमन्धरं तित्थरायं. ॥१॥

पुरा तारागा जेह जीवाण जाया, भवस्संति ते सव्व भव्वाण ताया;
तहा सपय जे जिणा वट्टमाणा, सुहंदितु ते मेति लोपप्पहाणा. ॥२॥

दुरुत्तार संसारक्वारपोयं, कलंकावलीपंकक्खलातोयं;
मणोवंछियत्थे सुमंदारकप्पं, जिणिंदागमं वंदिमो सुमहप्पं. ॥३॥

विकोसे जिणिंदाणणं भोजलीणा, कलारूवलावण्णसोहग्गपीणा;
वहंतासचित्तंमि णिच्चंपि झाणं, सिरिभारई देहि मे सुद्धनाणं ॥४॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२६)

(शार्दूलविक्रीडितम्)

जा रज्जं परिहत्तु पुव्वयनमितित्थेसराणांतरे,
दिक्खं गिण्हिय पत्त केवलमहे बोहेइ भव्वे जणे,
वंदे पुव्वविदेहवासवसुहासिंगारहारोवमं,
तं सीमंधरसामियं जिनवरं कल्लाणकप्पद्दुमं ॥१॥

जुत्तं सट्ठि सयं विदेहपणगे ऐरावहे भारहे,
पत्तेयं पुण पंचसत्तरिसयं एवं एहेसी परा.
ईक्किकंमि विदेह संपई पुणो चत्तारि चत्तारि जो,
ते सव्वे अइणागए जिणवरे बद्धंजले वंदिमो ॥२॥

जो गंभीरभवंधकूवकुहरुत्तारे करालंबणं,
जो निसेस समिहियत्थधडणो कप्पद्दुमो पाणिणं,
मिच्छताईमहंधयारेल हरीसंहारेसुरुग्गमं,
तं दुहंतकुवाइदप्पदलणं वंदे जिणिंदागमं ॥३॥

जो सीमंधरसामिपायकमले सिंगारभिंगी सया,
खुद्दोवद्दवदवंमि निउणा सव्वस्स संघस्स जा
जा अट्ठारसबाहुदंडकलिया सिंहासणे सोहए;
सा कल्लाणपरंपरा दिसउ मे पंचंरादेवया ॥४॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री वीसविहरमानजिनस्तुतिः ॥

(२७)

(शार्दूलविक्रीडितम्)

वंदे सीमंधरं जुगंधरजिणं बाहुं सुबाहुं तहा,
सज्जायं रिसहाणणंत विरियसुरप्पहं इसर,
वीरं वज्जधराइवीरियविसालं चंदबाहुं सयं;
नेमिं देवजसं भुअंगममहाभट्टं च चंदाणणं ॥१॥

जंबूदीवमहाविदेहतिलया चत्तारि तित्थंकरा,
अन्ने धाइयखंडमं जिणा अट्ठेव जे संथुया.
तत्तो अठ्ठयपुक्खरद्धपहुणो वीसं जिणिंदा इमे;
एवं जे विहरंति संपइ सुहं ते धिंतु अन्नेव भो ॥२॥

मिच्छतं पणकट्टमपि विजऐ सव्वत्थ सो सत्तया
सव्वं भोरुहकाणणं तमहरालोअमि बोहंतया
तासं पायकुतित्थभूयनिवहं छायं तया कुग्गहे,
ते निच्चं सियवायवासरमणी पाया पसीयंतु मे ॥३॥

जे संघस्स चउव्विहस्स विजये साहज्जकज्जे रया
ये सम्मत्तसु निच्चला कलिमल पक्खालनप्पच्चला
वेयावच्चकरा सुरा जिणमए कम्मं कुणंताण ते,
अम्हाणं दुरियं हरंतु तुरीय साहंतु जं चिंतियं ॥४॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२८)

(शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्)

वंदे पुव्वविदेहभूमिमहिलालंकारहारोवमं,
देवं भत्तिपुरस्सरं जिणवरं सीमंधरं सामियं ।
पाया जस्स जिणेसरस्स भवभीसंदेहसंतासणा,
पोयाभाभवसायररंमि निवडं ताणं जणाणं सया ॥१॥

तीयाणागयवट्टमाणअरिहा सव्वेवि सुक्खावहा,
पाणीणं भवियाण संतु सयय तित्थंकरा ते चिरं ।
जेसिं मेरुगिरिंमि वासणगणा देवंगया संगया,
भत्ति ये पकुणंति जम्मणमहं सोवण्णकुंभाइहिं ॥२॥

निस्सीमामलनाणकाणणघणा संमोहणिण्णासणो,
जो निस्सेसपयत्थसत्थकलणे आइच्चघकप्पो फुडो ।
सिद्धंतं भविया सरंतहियए तं बारसंगीगयं
नाणाभेयणयावलि हिकलियं सव्वण्णुणा भासियं ॥३॥

जे तित्थंकरपायपंकजवणा से विक्करोलंबया,
भव्वाणं जिणभत्तयाण अणिसं सोहिज्ज कज्जेरया ।
सम्मद्दिट्ठिसुरा वराभरण-भादिप्यंत देहप्पहा,
ते संघस्स हवंतु विग्घहरणा कल्लाणसंपायणा ॥४॥

(२८)

(अनुष्टुप् छन्दः)

विदेहाख्येषु क्षेत्रेषु, पञ्चसु विंशतिर्जिनाः ।
विचरंतः सदा लोके, वर्तते जयकारिणः ॥१॥

गजदंतस्थितान् सर्वान्; भव्यजीवप्रबोधकान् ।
तानहं प्रयतो वंदे, प्रत्यहं ज्ञानभास्करान् ॥२॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्वादशाङ्गानि रम्याणि, गणनाथकृतानि ये ।
सेवंते परया भक्तया, लभंते ते शिवश्रियम् ॥३॥
चतुर्विंशतिरर्च्चैयाः, शासनेशा महद्धयः ।
विघ्नविनाशिका देव्यः, शंकुर्वतु सदा मम ॥४॥

(२९)

(दण्डकवृत्तम्)

स्फुरदभिनवभावसम्भूतभक्तिप्रभूतामदेन्द्राऽऽविल-
स्मेरमाणिक्यकोटीररत्नप्रभाजालविस्मेरताङ्-
घ्रिकमलयुगरेणुसौरभ्यलुभ्यद्भवारण्यसम्भ्रान्त-
भव्याङ्गिरङ्गद् द्विरेफावलीमण्डलीमण्डलाऽलङ्कृतम् ॥१॥
नरसुरशिवशर्मलक्ष्मीलसत्केलिगेहायमानं
प्रमोदास्पदीभूतविश्वत्रयीराजहंसीभिरासेवितं,
विततसुखसमाधिं स्तुवे देवदेवं प्रभोः स्वामि
सीमन्धरस्य प्रभाते प्रभाते पदाब्जद्वयं भक्तिः ॥२॥
नवजलदगम्भीर विस्फुर्जदूर्जस्विसद्देशनारम्भ-
संरम्भविद्राविता प्रौढकन्दर्पदोर्दण्डदर्पोर्जिता,
असमशमसुधाम्बुधेर्लोककल्लोलमालाविलासप्रसर्प-
त्प्रभाव(वो ?)द्यता नाशितक्रोधसम्बन्धसर्पोत्करः ॥३॥
दलिततिमिरराजीव जीवेशशोभानिरासक्षमाक्षा-
मधामैकधामाभिरामाननश्रीविलासाश्रिताः,
त्रिभुवनजनवन्द्यपादरविन्दद्वयास्ते जिना मे दिशन्तु
श्रियं शाश्वतीसिद्धिसौधाधिसंवासिनो सर्वदा ॥४॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३०)

(राग : वीर जिनेश्वर अति अलवेसर)

श्री सीमन्धर सत्यकीनंदन, चंद्रकिरण सम सोहेजी,
समवसरण बेठा जगस्वामी, सुर नरना मन मोहेजी;
वाणी अमीय समाणी प्रभुनी, सांभळतां अघ गाळेजी
समकित दृष्टि शासनदेवी दुःख दोहग सवि टाळेजी ॥१॥

(३१)

श्री सीमन्धर जिनवर सुखकर साहिब देव,
अरिहंत सकळनी भाव, धरी करुं सेव;
सकलागमपारग गणधरभाषित वाणी,
जयवन्ती आणां ज्ञानविमल गुण खाणी ॥१॥

(३२)

सो क्रोड साधु साधवी सो क्रोड जाण,
अैसे परिवारे सीमन्धर भगवान;
दश लाख थया केवली प्रभुजीनो परिवार,
वाचक यश वन्दे नित्य नित्य वार हजार ॥१॥

(३३)

(कमलविजयजी)

सीमन्धरभूधरबन्धुरसिन्धुरचारी,
सर्वज्ञसुधाकरप्रकरप्रभुताधारी ।
सभयामयवारणनिष्कारणमुपकारो,
जय शासन ! सुरवर कमलविजय ! जयकारी ॥१॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३४)

श्री सीमंधरस्वामी केवला, सिंहासन बेठा निरमला;
श्री सीमंधरस्वामी तार तार, मुज आवागमन निवार वार.

(३५)

महाविदेह क्षेत्रमां सीमन्धरस्वामी, सोनानुं सिंहासनजी,
रूपानुं त्यां छत्र बिराजे; रत्नमणीना दीवा चारजी;
कुमकुम वरणी त्यां गहुंली बिराजे, मोतीना अक्षत सारजी,
त्यां बेठा सीमंधरस्वामी, बोले मधुरी वाणीजी;
केसर चंदन भर्यां कचोळां, कस्तूरी वरासोजी,
पहेली पूजा अमारी होजो, उगमते परभातेजी.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री सीमन्धरस्वामीजिन

स्तवनम्

(१)

(उपजाति-वृत्तम्)

जयश्रियाढ्यं कनकाभदेहं, सर्वज्ञ लक्ष्मीकलकेलिगेहम् ।
सीमन्धरं पूर्वमहाविदेहं, विभूषयन्तं जिनपं स्तुवेऽहम् ॥१॥

रूपं परं सन्ततमङ्गलाली, महत्त्वमुच्चैः परमा यशः श्रीः ।
ततिः सुखानां जिनसम्पदाऽऽच, तव प्रसादस्य जनेषु लीला ॥२॥

विलोक्यसे येन जगत्समग्रं, ज्ञानेन तेनैव जिनाऽसि गम्यः ।
तथाऽपिविश्वोत्तर-ऋद्धिमान् यैर विलोक्यसे नाथ !
त एव धन्या ॥३॥

भीतो भवफलेशततेर्भवन्तं शरण्यमीशं शरणं प्रपद्येः ।
यदर्थयन्ते मुनयः सुयोगैर् यच्चासि गन्ता नय तत्र तन्माम् ॥४॥

यदर्थितं येन तदेव तस्य, त्वया ददे वत्सरमर्थ्यसे तत् ।
जन्मैव मा दा मम देव ! जन्म, चेत् तत्र यात्रास्त्यविता
प्रभुस्त्वम् ॥५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२)

(अनुष्टुप)

सीमन्धरं जिनाधीशं, नम्राखण्डलमण्डलम् ।
शुभज्ञानरमाकेलि-मन्दिरं नौमि सादरम् ॥१॥
ये त्वां पश्यन्ति ते धन्यास्ते श्लाघ्याः पूजयन्ति ये ।
ते दक्षा ये निषेवन्ति, नराः सीमन्धरप्रभो ! ॥२॥
लोकालोकावलीहेलिराधिव्याधितमोहरः ।
विश्वकल्पितकल्पद्रु-श्चिरं जीया जिनोत्तम ! ॥३॥
संसारभीमकान्तारेऽनंगरागादितस्करैः;
भ्रमन्तं पीड्यमानं मां रक्ष रक्ष दयानिधे ! ॥४॥
किं विनीतैर्दिवोभोगै रलंमन्त्रैरलंगजैः ।
कृतं कल्पद्रुणा नाथ !, शासनं तेऽस्तुमेऽनिशम् ॥५॥

(३)

श्री विंशतिविहरमाण जिनस्तवनम्

(अनुष्टुप)

वन्दे सीमन्धरं देवं, युगन्धरं जिनेश्वरम् ।
बाहुं त्रैलोक्यनेतारं, सुबाहुं पुरुषोत्तमम् ॥१॥
सुजातं नौमि सज्जातं, स्वयंप्रभं रविप्रभम् ।
वृषभाननमानौभ्य - नन्तवीर्यं जिनोत्तमम् ॥२॥
विशालं श्रीलतासारं, सुरप्रभं जगत्प्रभुम् ।
वज्रधरं धराधारं, नुत चन्द्राननं जिनम् ॥३॥
चन्द्रबाहुं लसद्बाहुं, भुजंगं भुवनाधिपम् ।
ईश्वरं श्रीश्वराराध्यं, नेमिप्रभप्रभुं स्तुमः ॥४॥
वीरसेन जिनो जीयान्महाभद्र सुभद्रकृत् ।
चिरं देवयशोदेवोऽजितवीर्यो जिताहितः ॥५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(४)

श्री त्रिकालजिन स्तवनम्

(अनुष्टुप)

येऽतीता वर्तमाना ये भाविनो ये महीतले ।
सर्वे श्री जिनपाः पान्तु, माममी भववारिधेः ॥१॥
तदीयो गोष्पदीभूयादपारो भवसागरः ।
वसन्ति मानसे येषां, जिना हंसा इवानिशम् ॥२॥
संसारकुहरे पातौ, भविता न कदाचन् ।
तेषामार्हतपादानां, ये सदा भक्तिकारिण ॥३॥
भवनीरधिशोष – स्तैरकारि तरसा ध्रुवम् ।
एकशोऽपि जिना येषां, दृष्टिगोचरमाश्रिताः ॥४॥
संसारकूपगेश्वभ्रे, जना दीप्रनखांशवः; ।
भवन्तु पततो रज्जुवदालम्बनदा मम ॥५॥

॥ श्री विंशतिजिनस्तवनम् ॥

वन्दे सीमन्धरं देवं युगन्धरं जिनेश्वरम् ।
बाहुं त्रैलोक्यनेतारं सुबाहु पुरुषोत्तमम् ॥१॥
सुजातं नौमि सज्जातं स्वयंप्रभं रविप्रभम् ।
वृषाभाननमानौम्यनन्तवीर्यं जिनोत्तमम् ॥२॥
विशालं श्रीलतासारं सूरप्रभं जगत्प्रभुम् ।
वज्रधर धराधारं नुत चन्द्रानन जिनम् ॥३॥
चन्द्रबाहु लसद्बाहुं भुजङ्ग भुवनाधिपम् ।
इश्वरं श्री धराराध्यं नेमिप्रभ प्रभुं स्तुमः ॥४॥
वीरसेनजिनो जीयान्महाभद्रः सुभद्रकृत् ।
चिरं देवयशोदेवोऽजितवीर्यो जिताहितः ॥५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ श्री शीलरत्नसूरिकृतं
श्री सीमन्धरस्वामिनोऽष्टकम्

कल्याणलतासुवसन्तर्तुं, सुरभासुरभासुरभावनतम् ।
सीमन्धरजिनमतिमधुरगिरं, नम काममकाममकामहरम् ॥१॥

क्रियते स्तवतस्तव येन समातारसता रमतारसना ।
सफला तमवैमि महीवलयासमहं समहं समहं कलया ॥२॥

गुरुगर्वमसौ हरतात् तपनाच्छविदेह विदेहजनः ।
जिनपं सुखयन् ननु मोहकिरा, सितया सितया सितया स्वगिरा ॥३॥

रसना हि परत्र कृते रमते, मम नाममनामममनागपि ते ।
इतरत्र यिकी तु धृतिं प्रणते, सुरसालरसालरसा लभते ॥४॥

त्वरते मम हृद् भजनाय भवत्पदयोरुदयोरुदयो (पि) न च ।
त्वमुपायमधीश ! तदाप्तिकरं, वद भावदभावदभाग्यहरम् ॥५॥

किलकर्म पुमांस्तव रुच्यरवैरसदस्य सदस्य सदस्यति वै ।
धन वज्जलदस्य जलैः सुचिरं, समता समता समतापभरम् ॥६॥

तव भक्तिरिहापि तमांसि गतेर्द्विपराजपराज ! पराजयते ।
अत एव बुधैर्भवतोऽत्र कृतां जपराय पराय परायणता ॥७॥

भवते हरति स्तवनाम्नि ममा, भवमा भवमा भवमालिसमा ।
शममुत्र भजेय भवच्चरणैभ्रमरोहमरोहमरोहगुण ! ॥८॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महेसाणामंडन श्रीमत्सीमंधरावभो

स्तोत्रम्

(केसरवृत्त समलंकृतम्)

श्री कैलासाभिधशिखरिवदुत्तुंगे पुनर्निर्मले
विभ्राजन्तं ददतमनुपमानन्दावलिं मन्दिरे !
कल्याणानां किल निखिलतया क्षोण्यां परं कारणम्
तन्त्वां सीमन्धरजिनप ! महेसाणावतंसं स्तुमः ॥१॥

स्वीये नन्तेपि तरसि सति नित्यं सीमया वर्तनं
श्री श्रेयांसाअवनिधनजननाकाशे लसद् भास्करम् ;
देहे स्वे सम्प्रति विचरति यः क्षेत्रे विदेहाह्वये
तन्त्वां सीमन्धर जिनप ! महेसाणावतंसं स्तुमः ॥२॥

यद्वद् दोषत्रितयमपि विनष्टिं गच्छति श्रेष्ठभै-
षज्या दानाजझटिति करणवासि प्राणभाजां ननु;
तद्वत्तापत्रयमपि यदुपास्त्या संस्कृतेः क्षीयते
तन्त्वां सीमन्धरजिनप ! महेसाणावतंसं स्तुमः ॥३॥

अंग चंगं वहति बहुतमां यत्स्वामिनस्तुंगतां
सर्व श्रेष्ठो यमिति सुरसमूहे व्याहरन्तीमिव;
नाथस्तीर्थस्य जगति सकले नामा समानस्य य-
स्तन्वां सीमन्धर जिनप ! महेसाणा वतंसं स्तुमः ॥४॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूपं त्रैलाक्य परिभवकरं शुभ्रं बिभर्ति स्म या
दुःखायन्ते खलु यमभिहसन्तः सन्त उद् द्वेषिणः;
येनान्त्येन स्वपरमकरुणाऽदूभि स्पर्ध्यते वार्धिना
भूरिक्रूरा अपि पशुनिकरा यस्मै नमस्कुवते ॥५॥

ना जय्यः कश्चन परि परि यस्माद् विद्यते ज्यातले
भीतान्यग्रे न हि कुमत तमांस्यर्कस्य यस्य क्षणम्
क्षाम्यन्ति स्थातुमथ रुधिरतेजांस्युज्जवलत्वात्स्थिर्ता
न्यब्जान स्वाद् विदधति परमाद्यस्मिन् जुगुप्सामहो ! ॥६॥

निः शेषाणां स दिगिभगणमानप्रातिहार्यश्रिया
दत्तोचित्रि तमहमनुदिनं ध्यायामि यातक्रुधम्
अस्तोकाः संसरणमणिनिधेस्तेनो द्भूता प्राणिन-
स्तस्मै कत्वा करमुपरि वयं श्लाघामहे स्वं भृशम् ॥७॥

रागस्तस्माद्विलयमकलयत्सर्वस्तिलात्तौलवन्
मध्येकैवल्य मुकुरमवलोकयन्ते न के तस्य वै ?
तस्मिन्मीना इव पयसि वयं लीना भवेमा निशं
जीयादित्यं स्तुतिमुपदिगमितः सीमन्धरस्तीर्थपः ॥८॥

(अथ प्रशस्तिः)

वर्षे पुष्करि-पक्ष-पुष्करं-करेत्येतन्मिते वैक्रमे-
कार्षीत् सूरिशिरोमणेश्चरमशिष्यः श्री महेन्द्रस्यवै
श्री सीमन्धरबोधिदस्य हि महेसाणावतंतस्य सत्
स्तोत्रं तत्रभवन् मुनिर्विजयवान् श्रीमान्मणि सप्रभः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुनिवर्य श्री वरहंस-विरचितं

श्री सीमन्धरस्वामि-स्तोत्रम्

(१)

(अथ स्रग्विणी)

यस्य नामापि सम्पत्-पदानन्ददं
किं पुन-दर्शन दर्शन-श्री-रसं ।
विश्व-विश्वाति-शायि प्रभावाद्भुत तं
मुदा नौमि सीमन्धराधीश्वरम् ॥१॥

स्फार-मार-जवशेत्तार-धन्वन्तरिं
दुस्तराऽपार-संसार-निस्तारकम् ।
तार-हार-स्फुरत् कीर्ति-पुराकरं
तं नमस्यामि सीमन्धरं स्वामिनं ॥२॥

यस्य लोकोत्तरं विश्व-संशीति-हृत्
-केवलज्ञान-मानन्ददं दर्शनम् ।
चारु-चारित्र पावित्र्यमद्भुतं
सम्पुनीहीश ! सीमन्धर ! त्वं स माम् ॥३॥

(अथ त्रोटकम्)

दिवसः सदा कदा भवितेश !
ममापित-पुण्य मयः सुलभः सुकृतैः ।
तव यत्र लभे भविक-प्रभवं
शुभ-दर्शनमाश्रित-दर्शनद ॥४॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तव सेवन-भावनया न भृतोऽस्म्य
यमस्मि जित-स्मित-विस्मयितः ।
अथ सौम्यदृशेश ! विलोक्य मां
श्रितमाशु भवामि यथाविभवः ॥५॥

सुमनो जन-मानस-हंस-वरस्तिमिर
प्रसराऽपह-हंसकरः ।
करुणा-रस-पूरित-देशनया
नयपोष-परो विजयस्व विभो ॥६॥

(अथ शालिनी)

भिन्नादेशादिष्ट-सप्तैक भंगै-
र्भावाभावात्मार्थ-सार्थ-प्रधानम् ।
शुद्धं बुद्धयादीदृशत्वं प्रमाणैः
साध्याबाधं साधु सीमन्धरार्हन् ॥७॥

नित्यानित्यं द्रव्य-पर्याय-रूपापन्नं
नुन्नं सन्नयैः स्यात् पदोक्त्या ।
युक्त्याऽवोचश्चारु वस्तु-स्वरूपं नान्यै-
र्बाध्यं जातु सोमन्धरत्वम् ॥८॥

यस्यानन्तं पर्यायनन्त्य
बोधादर्यानन्त्याद् वाऽस्ति विज्ञानरूपम् ।
सत्यासत्यं व्यक्तिजाति-प्रकाशं
पौनः पुन्यान् नौमि सीमन्धरं तम् ॥९॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(अथ प्रहर्षिणी)

श्री सीमन्धर-वचसां नयानुगानां
सन्देहापहमहसां महार्हणानाम् ।
सेवाभिः सरसतया कदा पुनीयात्मात्मानं
भविकपदं यथा भवेयम् ॥१०॥

संसार-प्रसर-हर-प्रकाररूपो
दुस्तापोपशम-महामृत-प्रवाहः ।
कल्याणोज्जवल-सुकला-लयोऽस्तु
मेऽसो श्री सीमन्धर-पद-पद्मयोः प्रणामः ॥११॥

आनन्दोदय विशदान्तरंग-चेताः श्री सीमन्धर !
तव सेवते न शश्वत् ।
चारित्रं-चरण-पवित्र-मिष्ट-शिष्ट-
श्री सिद्धये करणपदं कदा श्रयिष्ये ॥१२॥

(अथ दोधकम्)

देव-निकाय-निषेवित-पाद-श्रितसि
यस्य जिनेश ! वशे त्वं ।
भृंग ईवाब्ज-पदे सुपदव्या पूज्यपदं
लभसे भविकोऽसौ ॥१३॥

पावक-नायक ! तावक कान्तानेक-
गुणस्तवनं सवनं स्यात् ।
कार्मण-मान्तरमद्भुत-शस्त-श्री-पद-
राज्यमिहैति ततं यत् ॥१४॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दुर्म-मान मनोभव-लोभ-क्रोध-
मुखाहित-दुर्द्धर-पूरैः ।
दत्त सुदुस्तर-दुःखमथ त्वं मामव
सौम्य-दूशेश शरण्यं ॥१५॥

त्वद् वदनं सदनन्त-जय-श्रीमन्-
महसां सदनं विशदाभं ।
कस्य मुदं न निरीक्षितमेतद्
यच्छति विच्छवि तुच्छवि कारं ॥१६॥

(अथ भुजङ्गप्रयातम्)

कदाष्टादशांहः-पदारब्ध-कर्म
प्रपञ्चाननन्तै-र्भवैः सञ्चितांस्तान ।
त्रिधा शुद्ध मालोच्य पूतं करिष्ये
स्वकात्मानमीश ! त्वदाज्ञोक्त-युक्त्या ॥१७॥

सदा दीप्यसे पूर्व-भानु-प्रभाव-
स्त्रिलोकीतम-स्तोमहारि प्रचारः ।
प्रदीप-प्रताप-प्रदीपः प्रभुत्वोदितो-
विश्व-विश्वेषु सीमन्धर ! ॥१८॥

(अथ द्रुतविलम्बितम्)

भविक-कामित-कल्पतरोपमं
विजय-पुण्डरीकिण्यवतारकं ।
नमत दैवत-सम्मत-सत्यकीसुतमणिं
द्युमणि-भविनां जिनं ॥१९॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुण-वरेण्य-कला-लय-रुक्मिणी-
हृदय-पद्म-मधुव्रत-सद्व्रतं ।
श्रयत भो भविका जिननायकं
भविक-मौक्तिक-शर्म-पदाप्तये: ॥२०॥

(अथ मालिनी)

नृप-तति-मुकुट-श्रेयस्करोर्वीश-वंश-
प्रसृमर-महिमानं मान्य-मूर्धन्य-धर्मं ।
सुवचन-रचनाभिर्देशनाभिर्दिशन्तं
निरुपम-शिव-मार्गं नौमि सीमन्धरं तं ॥२१॥

शम-दम-सरस-श्री-सम्पदा-लिङ्गिताङ्गि नमदसुर
सुराली-पूज्य-पादाब्ज-लक्ष्मीं ।
समवसरण-संस्थं शोभि सौभाग्यभोगं
त्रिभुवन-गुरुराज नौमि सीमन्धराप्तं ॥२२॥

(अथ शिखरिणी)

जगज्जयेष्ठ-श्रेष्ठः प्रकटित-पटु प्रष्ठ-विभुतः,
सदा कन्दः श्रीणां त्रिभुवनमुदां कार्मणपदं-
जय स्तम्भारम्भःप्रसभ-मशुभदृष्ट-विकट-
द्विषां जीयात् सीमन्धर-वरजिन सर्वसुखदः ॥२३॥

(अथ शार्दूलविक्रीडितम्)

इत्यानन्द-पदोदितैक मनसा नीतः स्तुतेर्गोचरं,
श्री सीमन्धर-तीर्थपः श्रितवतां सर्वार्थ-चिन्तामणिः,
सौभाग्याभ्युदय-स्थ-हर्षविनय-श्री सूरिताभ्युन्नति
र्दद्यान् मे वरधर्महंस-सरस-क्रीडाब्ज बोधिप्रथां ॥२४॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री सोमसुन्दरसूरिविरचितम्

श्री सीमन्धरस्वामिजिन स्तवनम्

भव पंकजपतज्जन्तु जातोद्धार धुरन्धरौ ।
स्तुवे जिनौ विदेहस्थौ सीमन्धर युगन्धरौ ॥१॥

स्वामितांकितयूयं याः प्रजास्ता भाग्यभाजनम् ।
भावेनोपासितयुवान् स्तुवे सेवकपुंगवान् ॥२॥

प्रथमं शिबिकारूढव्यूढ युवाभिर्नृभिस्तपस्यायाम् ।
इन्द्रेभ्योप्यखिलेभ्यः प्राधान्यं प्राप्यतेस्म खलु ॥३॥

याचकेभ्योपि भद्रं स्ताद्वार्षिकगत्यागपर्वणि ।
स्वहस्तदायकीभूतयुवभ्यं वाञ्छितावधि ॥४॥

प्रदक्षिणीकृतयुवत् केवलिभ्यो भवत्सभाम् ।
संश्रितेभ्यो विदुः स्पष्टं के न वैनयिकक्रमम् ॥५॥

स्वविहारक्रम पावक युवाकमुर्वीमहाविदेहानाम् ।
स्पृहयेद् बुधा न कस्कः सदा वहन्मोक्षनगरपथाम् ॥६॥

अवतीर्णतरुणतरणि प्रभप्रभास्वरयुवासु भूमीषु ।
तिमिरं न संशयमयं तिष्ठति भव्यांगिहृदयगतम् ॥७॥

अन्योन्योपमितयुवां युवां जिनाधीश्वरौ विजेजयाथाम् ।
आव्योमसोमसूर्यं महाविदेहाभरणभूतौ ॥८॥

सीमन्धर प्रभु युगन्धर नामधेयो
भक्त्या स्तुतौ जिनवरौ युगपन्मयेति ।
अत्राप्यवाप्तजनुषः सुकृताशिष त्वाम्
दत्तां मम प्रमदतो नमतोनुवेलम् ॥९॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री मेरुनंदनोपाध्यायविरचितम्
श्री सीमन्धरसामिजिन स्तवनम्

अतिरसहरिसरसेण विहसिय लोयण मणवयणु ।
थुणिसु भावि नियसामि मीरिसीमंधरु जिनरयणु ॥१॥

जो कप्पूरदलेहिं निम्मइ निम्मलु जिन भवणु ।
जो नियपायबलेहिं हारावइ चंचलु पवणु ॥२॥

ससहरकिरण करेण धरवि जो य हिंडइ गयणि ।
अह नियसत्तिवसेण करइ दिवसु फेडिवि रयणि ॥३॥

जइवि हु सो वि समत्थु न हु तुह गुणगण संकलणि ।
कवणमत्त निसत्तु हूऊं मूरससिरि गउडमणि ॥४॥

तहवि हु भत्तिभरेण तरलिऊ विरचिसु संथवणु ।
जिणि कारणि जिनभत्ति वंछिउं साहइ नवि कवणु ? ॥५॥

भास—

तं जंबुयदीवह मंडणउ गिरिवरमेरुपवित्तु,
त तसु निवसइ जो पुव्वदिसि महाविदेहु सुखित्तु
त तसु विसिट्ठ अट्ठमविजउ पुक्खलवइ इय नामि
त तहं विहरइ किरि भुवणगुरो सिरि सीमंधर-सामि ॥६॥

त कणय वण्णुतणु पंचसयधणुहप्पमाण सरीरु
त चउतीसइ अइसयसहिउ सायर जेम गंभीरु
त पइदिणु पयपंकयल्लिय चउविहदेवनिकाउ
त धण्ण ति जे पिक्खहिं नयणि सीमंधरु जिणराउ ॥७॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त (कु) लहलहंतु पागार तउ वरतोरण चउबारु
त सुर जोयण पिहुलत्तण ए उंचउ वलयाकारु
त मणिकंचन धणुरूप्पमऊ समवसरणु अइचारु
त सुरसंधिहिं मिलि निम्मविउ कलसदंडधयसारु ॥८॥

त तसु अंतरि रयणिहिं घडिउ सिंहासणु झलकंतु
त पायपीढु तसु तलि विमलो मणि निम्मउ दिप्पंतु
त तह सीमंधरु जिनपवरो पउमासणउवविट्ठु
त सहसकिरण जिम उदयगिरि पुण्ण ति जे हि सुदिट्ठु ॥९॥

त बार गुणउ जिणदेहतउ किउ असोगतरु तुंगु
त कुसुमवट्टि चामरढलणु छत्ततउ सिरि चंगु,
त भामंडलु दिणयरुसरिसो अंबरि भेरिनिनाउ
त गज्जई किरि जिवु भंजि करि मोहराय भडवाउं ॥१०॥

त रणउणंतकिंकिणिरयाणि ऊगगमंत सुविमाण,
त सुपरिवारशुररमणिगणि लवणिमरुवनिहाण
त बहुलभत्तिउल्लसियहिय दसदिसि घणुपसरंत
त समवसरणि आवइ सयल सामिय गुण गायंत ॥११॥

त मणहरगणहरसाहुजण साहुणि गयरयलेव,
त वासुदेव जुगबाहुमुह माणवदाणवदेव
त गयगामिणि कामिणि मिलिय इणपरि उत्तम वंस
त समवसरणि पविसंति सवि जेम सरोवरि हंस ॥१२॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धाता—

तत्थ पिक्खहिं तत्थ पिक्खहिं तयणु चउत्रयणु चउरुव
चउगइहरणुं चउविहेहिं अमरेहिं वंदिउ सिरिकेवललच्छिवरो,
कंतकंति तियलोयनंदिउ
सिरि सीमंधरु तिजयगुरु वरुपंचंगपणामि,
पुण पुण पणमिउं रंगभरि चिट्ठइ नियनिय ठामि ॥१३॥

भास—

अह धणु ए चउविहधम्ममम्मपयासणि सुहकरणि
जोयण ए गामिणि वाणि तिहुयणजाणसंसयहरणि ।
जिणवर ए महुरसरेण विहसियकोमलमुहकमलो
सुललिउ ए करइ वखाणु नवरसो सुंदरो अईविमलो ॥१४॥
निम्मल ए गंगतरंगचंगु पणासियसयलतमु
भवदव ऐ संभवदाह फेडणअमियपवाहसमु ।
सामिय ए तणउ वखाणु जिम जिम गाजइ मेह जिम
तिम तिम ए भवियण चित्त नाचइ फरफर मोर जिम ॥१५॥
मुनिवर ऐ सावयधम्मपयडणु विहडणु भूरिभय
सायर ए रूपसंसारतारणु कारणु परमपय ।
धन धन ए ते नरनारी सिरिसीमंधर जिणवयणु
मेल्हइ ए नहु हियडाजे दालिदिय जिम रयणु ॥१६॥

धाता —

मुत्ति पुरवर मुत्तिपुरवरसरणि वरतरणि
पणतीसइ अइसयलसियविसमसोगदोहग्गवारिणि
देवासुरतिरियगणमणुय लोयभासाणुकारिणि
एवंविहवक्खाणझुणि सामि विसज्जइ जाम
सज्जइ सुरसुंदरि मिलवि जिणगुणकित्तणि ताम ॥१७॥

६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भास–

जय जिणवर ! ससहरहारिवयण !
जय कोमल कमल विशाल नयन !
जय सरस अमियरससरिस वयण !
जय महिममहियह देवरयण ! ॥१८॥
जय विउलमिउलक्खण निहाण !
दीहरकरपल्लव मलिय माण !
मन वंछियपायवराय पाय !
लवणिमभरभंजिय मयणराय ! ॥१९॥
जय मोहनरिंदगइंदसीह !
नीरागे ! निरंजण ! जिण ! निरीह !
गुरुदुरियतिमिरभर हरण दीह !
तिय लोय सिरोमणिलद्धलीह ! ॥२०॥
विलसंत अणंत गुणाण ठाण !
संवच्छर निच्छिय दिन्नदाण !
भवसिंधु तरण तारण समत्थु !
पडियहं आलंबणु देह हत्थु ॥२१॥
अइउत्तम बत्तियवंस जाय !
सिवसुंदरि सुक्खनिबद्धराय !
करुणारससायर पुण्णचंद
सीमंधर ! सामिय ! नंद नंद ॥२२॥

भास—

अइधणुपर उवयार परायणु नागचरणदंसण गुण भायणु ।
जिणवर आणविहाणपरेसु पुंडरगिरि पुरिपमुह परेसु ॥२३॥
सुररइएसु ठवंतु नवेसु पायकमलु कंचन कमलेसु ।
चउविह सुविहि संघ परिवारो, सिरि सीमंधरु करइ विहारो ॥२४॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री जिनसुन्दरसूरिकृतम्

श्री सीमन्धरस्वामि स्तवनम्

श्रीमन्त-महन्त-मनन्त-चिन्मयं त्वां
भक्तितो नाथ ! यथार्थ-वाङ्मयं ।
सीमन्धर-श्री-जिन-मस्त-दूषणं
स्तवीम्यहं पूर्वविदेह-भूषणं ॥१॥

रक्तो गुणैः किं नत-नाकिराज ते
सेवां श्रितोऽशोकतरुः सुराजते ।
आजानु-नानाविध वर्ण-बन्धुरः
पुष्पव्रजोऽप्यद्भुत-सौरभोध्धुरः ॥२॥

सर्वांगभाजां प्रतिबोध कारक-स्तव
ध्वनिः शान्त-रसावतारकः ।
चञ्च-च्चल-च्चामर-राजि-रुज्ज्वला
पार्श्वेषु चन्द्र-मरीचि-मञ्जुला ॥३॥

तथांशु-जालैर्जटिलं तवासनं सिंहाञ्चितं
भाति तमोनिरासनं ।
भामण्डलं भासित भूमि-मण्डलं बभस्ति
पृष्ठे जित-भानु-मण्डलं ॥४॥

सद्दुन्दुभिस्ते दिवि-विस्मय प्रदो-
-नदन्न केषां ददते च सम्मदं ? ।
छत्र-त्रयं कुन्द-वरेन्दु-सुन्दरं
विश्वाधिपत्यं तव सूचयत्यरं ॥५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्फुरज्-ज्ञान-सन्तान लक्ष्मी-निधानं
भजन्तेऽत्र ये ते पदाब्जं प्रधानं ।
अरं तेष्वमेया रमन्ते विरामं
सहर्षं विशेषा रमाया निकामं ॥६॥

अवाप्य प्रजा भूरि-भाग्यैकलभ्यं
भजन्ते भवन्तं विभो ! शर्म-लभ्यं ।
किमु स्थूल-लक्षं लसत्-कल्पवृक्षं,
लभन्ते न लब्ध्वा नरा मङ्क्षु सौख्यं ॥७॥

लसत्-केवलज्ञान-नव्यांशुमाली
मरालावली-मंजुल-श्लोकशाली ।
धराधीश सीमन्धर त्वं लुनीषे
जनैनांसि यस्मान् न कं कं पुनीषे ॥८॥

प्रभो ! प्रातरुत्थाय यो नंनमीति
भवन्तं न सोऽगी भवे बम्भ्रमीति ।
त्वद् उक्तेषु येषां मनोररमीति
भयेनैव तेभ्यो भयं दन्द्रमीति ॥९॥

अविश्राम दृक् पेय-लावण्य गेहं
भवन्त निभाल्य प्रभो ! हेमदेहं ।
कृतार्थानि कुर्वन्ति ये नित्यमेव
स्वनेत्राणि धन्यास्त एवेह देव ! ॥१०॥

महाश्चर्य-मैश्वर्य-मीश ! त्वदीयं
प्रमोमुद्यतेऽवेक्ष्य चेतो यदीयं ।
न केषां भवेयुस्तमां माननीया
घनश्लोकभाश्च ते श्लाघनीयाः ॥११॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आपत्-तापाद् रक्षितारं क्षितार
भव्यव्रातं विश्व-विश्वेशितारं ।
सेवन्ते त्वां के न मर्त्या अमर्त्या
मूर्त्ता धर्म नाथ ! मुक्तान्यकृत्याः ॥१२॥

नीराऽगोपि ग्रामरागं गृणासि
सामान्योऽपि व्यक्तमायां मृणासि ।
निस्त्रगुण्य सद्गुणौघं च धत्से
कस्याश्चर्यं तेन नेतर्न दत्से ॥१३॥

सीमातीतां विश्व-हर्ष-प्रणाली
कोऽन्यस्तेऽलं स्तोतुमास्ते गुणालीं ।
लोकालोकाकाश-सर्व-प्रदेशा-नीष्टे
ज्ञातुं को विना श्री जिनेशात् ? ॥१४॥

भावारिभ्यो भूरि-भीत्यावसन्ना
देवाः सर्वे यस्य सेवां प्रपन्नाः ।
दीनं दीनं देव ! सीमन्धराख्य
स स्वं रक्षादक्ष मां रक्ष रक्ष ॥१५॥

प्रत्यूषे त्वां नंनमन्नाकि नाथं,
क्षोणिख्यातं केवल-श्री सनाथम् ।
के के धन्या नैव मिथ्यात्वमाथं,
संसेवन्ते सन्ततं तीर्थनाथम् ॥१६॥

इति सुमधुरत्त्रोऽमन्द-मानन्ददायी,
सुर-नरवर तिर्यक्-सर्व-भाषानुयायी, ।
वसति मनसि नेतर्ध्वस्त-मोह-प्रमाद-
स्तव कृत-सुकृतानां देशनाया निनाद ॥१७॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अमर-नर गणानां संशयान् संहरन्ती,
शिवपुरवर-मार्गं देहिनां व्याहरन्ती ।
भवति शरण-हेतुः कस्य नो ! नाथ वाणी,
भव-भव-भय-भाज-स्तेऽघ-वल्ली-कृपाणी ॥१८॥

असुर-सुर-तिरश्चां यत्र वैरोपशान्तिः,
स्फुरति हृदियस्य वरिष्ठाऽऽनन्द-चित्त-प्रशान्ति ।
समवसरण-भूमि-र्विश्व-विश्वासभूमि-
र्जगति जन शरण्या तेऽस्त्यघानामभूमिः ॥१९॥

अनुसरति तपोऽर्थं काननं वा धनं वा,
त्यजति सृजति जन्तुः संयमौघं धनं वा ।
तव-वचन-विलासैर्यद् विना देव देव !,
भवति जिनपते ! यन्-निष्फलं सर्वमेव ॥२०॥

भक्ति-प्रण-त्रिदश-विसरं घोर संसार—सिन्धुं,
भ्रान्त्वा प्रायं शरणमधुना त्वामहं विश्वबन्धुम् ।
श्रीमन् ! सीमन्धर जिन ! तथा तत् प्रसीद त्वमेव चद्वद्दीनः
पुनरिह भवे नो विषीदामि देव ! ॥२१॥

दुस्थावस्था-स्थ-पुटित भवापार-वन्यां विहीनः,
सम्यग् मार्गाद् भ्रमण-वशतो दुर्दशां देव ! दीनः ।
नाऽऽप्त कां कामिह पुनरवाप्तेऽपि गन्तुं प्रमाद
स्तस्मिन् दत्ते न मम हृदये तेन नेतर्विषादः ॥२२॥

सेवं सेवं तव पदयुगं स्यां कृतार्थः कदाहं,
पीत्वा वाक्यामृत रसमहं स्वंक्षिपे कर्मदाहम्,
इत्येवं मे सदभि-रुचितं देव-पाद-प्रसादात्,
पूत्तोर्वीथी-मनुसरतु ते दत्त-दुखार्वसादात् ॥२३॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राज्यै राज्यैरिव विष-युतै-नोर्थना विश्वनेत,
भोगैरोगैरिव मम-सृतं सर्वदोषापनेतः,
दिष्टया दृष्टया तव परपदाम्भोज-युग्मं कृतार्थः,
प्रेक्ष्य प्रेक्ष्य क्षपित-दुरितः स्यां नु लब्धार्थ-सार्थः ॥१४॥
एवं निर्भर-भक्ति-सम्भृत-हृदा नोऽति क्रिया-कर्मता,
नीतः स्फीततम-प्रभाव-भवनं त्वं नाथ सीमन्धर !
तद्वत्-तन्मय-देव ! सुन्दरतरं कुर्याः प्रसाद यथा,
भूयांसं भवदुक्त-शासनवराऽऽसेवा-विधौ सोद्यं ॥२५॥

श्री तपागच्छाधिराज
श्री मुनिसुन्दरसूरिविरचितम्

श्री सीमन्धरस्वामि स्तोत्रम्

जय-श्रिया मोहरिपोरवाप्त-
त्रिलोकसाम्राज्य-रमाभिरामं ।
विदेह-भूमण्डल-मण्डनं श्री-
सीमन्धरं स्वामिनमानुवामि ॥१॥
सृजन्ति यं दिव्य दृशः सुयोगिन-
स्तव स्तवं ते विधये जडोऽप्यहम् ।
पिबेद् गजो वारि सरस्यजोऽपि वा
स्वतुन्दिपुरं समता फले पुनः ॥२॥
भवन्ति ये सिद्ध-रसास्तव-स्तवै-
रिवौषधै-र्भावित-धातवः प्रभो !
तेषां सदा शीलित-योग-सम्पदा
स्फुरन्ति-कल्याण-समृद्धयः पराः ॥३॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्लवङ्गवच्च चित्तमिदं समन्तात्
पारिप्लवं मे विषयेषु लुभ्यत् ।
गुणैर्निबद्धं स्तव-योजितैस्ते
स्थिरीभवत्-साम्यज-शर्म्मणेऽस्तु ॥४॥

सर्वज्ञ ! देशान्तरितोऽपि पूजा-
स्तवादि-भक्तिर्मम सम्पतीच्छे ।
भवन्ति नाभ्रान्तरितेऽपि भानौ
नृणां किमर्घाञ्जलयः कृतार्थाः ॥५॥

विजयं जिन ! पुष्कलावतीं विनुमः
पूर्व-विदेह-भूषणम् ।
नगरीमपि पुण्डरीकिणीं
त्वमभू-र्यत्र-जगत् तपः फलम् ॥६॥

श्री कुन्थुनाथार जिनान्तरे त्वं जातः
शिवादन्वथ सुव्रतस्य ।
अलाव्रतं राम-पितुश्च राज्ये
शिवंगमी भाव्युदयार्हतोऽनु ॥७॥

तपांसि तान्येव तपांसि मन्ये,
तानेव योगानपि तात ! योगान्,
येषां महिम्ना नयनातिथित्वं,
सतां शिव-श्री-प्रतिभूः प्रयासि ॥८॥

श्लाघ्या ग्रहा भान्तिजुषोऽपि तेऽमी
ये तात ! पश्यन्ति दिनान्तरे त्वाम् ।
गत-भ्रमोऽपि त्वयि विश्वबन्धा-
वहं त्वधन्यस्तव दूरवर्ती ॥९॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्तवीमि सीमन्धर ! पक्षिणोऽपि
पश्यन्ति ये पक्षबलादिनं त्वाम्,
अहं पापस्तव दर्शनार्थ-
मनोरथैरेव सदा कदर्थ्ये ॥१०॥

मनोरथा अप्यथवा भवन्तु
सदा भवद्-दर्शन गोचरा मे ।
ध्यातोऽपि-यत्-पूजितवद्-ददासि
त्वमीप्सितं सर्वमिति प्रमोदे ॥११॥

स्तवीमि कर्म्माणि मुनीन्द्र ! तानि
बभूव येभ्यो मनसः प्रसूतिः ।
ध्यानेन साक्षादिव येन कृत्वा
त्वां दैवतं स्यां भगवन् ! कृतार्थः ॥१२॥

दूरेऽपि भक्त्या विमलेऽसि चित्ते
संक्रान्ति-भाग मे हर तत् तमोऽन्ततः ।
किं दर्पणान्तः प्रतिबिम्बतोऽपि,
रविः प्रकाशं न तनोति गेहे ? ॥१३॥

त्वं सर्वे-सर्वेष्ट-हितोपकारी
दूरेऽपि मां बोधय विश्वबन्धो !
करोति किं नो गगने स्थितोऽपि
सुधामयूखः कुमुदे प्रबोधम् ॥१४॥

दुर्गाद्रिनद्यन्तरितोऽपि नेत-
रुल्लासयरयेय गुणै-स्त्रिलोकीम ।
किं काच-कुम्भान्तरितोऽपि दीपः
प्रकाशयत्येव करैर्न वेश्म ॥१५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनाद्य-विद्योदर--पाश बद्धं
मां मोचय त्रातरिहापि सन्तम्,-
पयोज-गर्भ-प्रतिपन्न रोधं
भृग यथा दूरतरोऽपि भानुः ॥१६॥

जगन्ति पश्यन्नपि किं कषायैर्
मां पीडितं पश्यसि न स्वभक्तम् ।
दृष्टस्त्वया यन्न हि पीडयते तै-
रूरीकृतो वज्रिजितेव सर्पैः ॥१७॥

यथेच्छ-दानै-रनृणी-कृते त्वया
जगत्यशेषेऽपि ऋणार्दिताऽस्मि किम् ।
कर्म्मोत्तमर्णैर्भव--गुप्तितो न यन्,
मुच्ये जिनाद्यापि ऋणाद् भवस्थितेः ॥१८॥

सुयोग-विद्या-विधि-सम्प्रयोगत-
स्तन्मामपि प्रापय तत्त्वशेवधीन ।
येनानृणीभूय निरस्य रोधका-
ननन्तधामा विलसामि मुक्तिभाक् ॥१९॥

त्वां यत्र चित्ते विनिवेश्य मोदे
रागादयो देव ! दहन्त्यदोऽपि ।
ततो जगद्-रक्षण-दक्षिणोपि
कथं विभो ! रक्षसि नाश्रयं स्वम् ॥२०॥

अथवा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रागादयो यद्-विजितास्त्वयैते
वैरेण तेनेव जिनेन्द्र ! मन्ये ।
करोषि चित्ते मम यत्र वासं
दहन्त्यमी तत्-तदुपेक्षसे किम् ॥२१॥

विधूय रागादि भवान् विकारान्
दधासि रूपं निरुपाधिकं यत् ।
त्रिलोकपूज्ये भवतः प्रसादान्
ममापि तत्रानुभवोस्तु सम्यक् ॥२२॥

अशेषतः सर्वविदोऽपि भक्तान्
सीमन्धर ! प्रापयतः शिवं ते ।
किं विस्मृतोहं यदि दूरगत्वात्
तत्ते न युक्तं ह्यसि दूरदर्शी ॥२३॥

वृषांकितोसीति वृषां कितं मां
कुरुष्व सम्यक् कृपया प्रसद्य ।
भवामि युक्तं तव सेवको यद्
देयाः स्वस्वाम्यं च ममाग्रतोऽपि ॥२४॥

श्री सीमन्धर-तीर्थनाथ ! मयका स्तुत्वैवमभ्यर्थ्यसे
नाम्नाहं मुनिसुन्दरोभवमथो कुर्याः प्रसादं तथा ।
स्यां सर्वज्ञ यथार्थतोऽपि विशद-ज्ञानादि रत्नत्रया-
ल्लब्ध्वा कर्म-जयश्रियं शिवपुरे राज्यं लभे चाचिरात् ॥२५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परमगुरु श्रीआणदविमलसूरिसंदर्भितम्

॥ श्री विहरमानजिनस्तोत्रम् ॥

श्रेयांस वप्ना जननी तु सत्यकी, वृषस्तु चिह्नं दयिता तु रुक्मिणी ।
जंबूविदेहाभरणस्य यस्य, सीमंधरं तं सततं स्मरामि ॥१॥

माता सुतारा सुदृढः पितास्य, प्रियंगुमाला ललनाधिनाथः ।
गजध्वजो धर्मधुराधुरंधरः, सार्वः श्रिये मे भवताद् युगंधरः ॥२॥

सुग्रीवसूनुर्विजयाजयप्रदः, सुमोहिनीमोहितमानसांबुजः ।
मृगांकतुल्याननभृन्मृगांकभृत्, श्रीबाहुसार्व्वः शिवसंपदे वः ॥३॥

भूतंदया श्रीनिसढस्य सार्द्रं, मुदः प्रदः किंपुरुषाधिनाथः ।
सन्मर्कटांको विहरन् विदेहे, जीयात्सबाहुः कदलीसुबाहुः ॥४॥

श्रीदेवसेनातनयो नयेन, युक्तः सदानंदितदेवसेनः ।
दिनेश्वरांको जयसेनाऽर्च्यो, जिनोऽभिजातो जयतात् सुजातः ॥५॥

सुमंगला मंगलमालिकाप्रदः, स्वयंप्रभोश्चित्रविभोर्विभूतिदः ।
प्रियसेनापतिः शशिलांछितक्रमो, महाविदेहे जयताज्जिनेश्वरः ॥६॥

ऋषभाननामकतीर्थनायकः, स्फुटं च कीर्त्याश्रितराजनंदनः ।
जनितो वरवीरसेनया, हरिचिह्नस्तु जयावतीश्वरः ॥७॥

यस्य माता मंगलावती सती, मेघराजतनयस्य वर्त्तते ।
अंगना विजयवत्यभीप्सिताऽनंतवीर्यजिनराट् द्विपध्वजः ॥८॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूरप्रभः सूर्यसमप्रतापः, श्रीनागसूनुर्विमलाधिनाथः ।
भद्रो महाभद्रकरोऽर्यमांकः, श्रीधातकीखंडविदेहसार्व्वः ॥९॥

चंद्रलांछनधरो वरनंद-सेनयानत इनोऽस्ति विशालः ।
यस्य सा विजयवत्यभिधाना, यस्य सो विजयभूमिपतिश्च ॥१०॥

सरस्वतीपद्मरथस्य नंदनः, खङ्गाङ्कितो वज्रधरो जिनेश्वरः ।
विनायुतश्रीविजयवत्युदर्च्यः, श्रीधातकीपश्चिमसद्विदेहे ॥११॥

चंद्राननश्चंद्रसमानतोयं, वल्मीकवंशे वरदीप्रदीपः ।
लीलावतीशो वृषभध्वजोऽस्ति, पद्मावतीसूनुवरो वरश्रीः ॥१२॥

पद्मांकभाक्रेणुकया प्रसूतः सुगंधयाच्यों जिनचंद्रबाहुः ।
देवाश्रितानंदनृपप्रमोदकृत, श्रीपुष्करार्द्धे विजयासुदारः ॥१३॥

श्रीभुजंगभगवंतमाश्रये, श्रीमहाबलनृपस्य नंदनम् ।
पद्मलांछनधरं वरगंध-सेनया नतपदं महिमाभाजं ॥१४॥

ईश्वरं मदनमर्द्दनेश्वरं, पालितं च सुयशोज्ज्वलांबया ।
चंद्रलांछनधरं गलसेन-नंदनं मुदितचंद्रवतीशं ॥१५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१)

किरपा मोसुं किजियेजी, जिनराज महाराज,
किरपा मोसुं किजियेजी;
बेर बेर में करुं विनति रे, सीमंधर जिनराज.
किरपा मोसुं किजियेजी. १

जग उदधि तोय मिथ्या अति गहेरो रे,
तुम तारन तरन जिहाज;
अनंत काल चिहुं गतिमें रुलियो रे,
काहुं न ध्यायो धर्म साज. किरपा० २

मैं चाकर खाना जाद रावरो रे.
तुम हो गरीब निवाज;
कर दोय जोड कनीराम बोले रे,
तुम समर्यां सरे काज. किरपा० ३

(२)

(राग : मारुण)

श्री सीमंधर सांभळो, विनति करुं कर जोड
तुं समरथ त्रिभुवन धणी, मने भवबंधनथी छोड. सी० १

तुम मुज बिच अंतर घणो, किम करुं तारी सेव;
दैवे न दीधी पांखडी, पण दिलमें तु एक देव. सी० २

चंद्र चकोर तणी परे, तुं वस्यो मोरे चित्त;
समयसुन्दर कहे ते खरी, परमेश्वर शुं प्रीत. सी० ३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३)

बिहरमान सीमंधर स्वामि, प्रह उठी प्रणमुं शिर नामी;
सत्यकी माता उर सर हंस, लंछन वृषभ पिता श्रेयांस. १

पूरव महाविदेह मझारि, पुखलावती विजये अवतारी;
कंचन वरणी कोमळ काया; चउरासी लख पूरव आया. २

पंचसय धनुष शरीर प्रमाणा; अमृत वाणी करत वखाणा;
सकळ लोक संदेह हरंता, समयसुन्दर वांदे विहरंता ३

(४)

(राग : कडखा प्रभातियां)

स्वामि ! सीमंधरा तुम्ह मिलवा भणी,
हियडलुं रातने दिवस होसे;
ध्यान धरतां सुपनमां आवी मिले,
झबकी जागें तब कांइ न दीसे; १

जो तें रे दैव दीधी हुंत पांखडी,
तो हुं ऊडी प्रभु जात पासे;
स्वामि सेवा भणि अति घणो अळजो,
देवता कां दिओ दूर पासे २

ध्यान स्मरण प्रभु ताहरूं नित धरुं,
तु पण मुजने मत विसारे;
समयसुन्दर कर जोडी इम विनवे;
स्वामि ! मुने भव समुद्र तारे. ३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(५)

धन्य तु धन्य तुं स्वामिसीमंधरा, धन्य तुज शक्ति व्यक्ति सनूरी;
कार्यकारण दिशा सहेज उपगारथी, शुद्ध एकत्व परिणमन पूरी.
धन्य० १

नयरी पुंडरीगणी स्वर्ग पूरी सम बनी, जीहां जिनवर बिचरे सदाये;
वृषभ लंछन मोषे बोधी आरोपता, आत्मक्षेत्रे प्रगटे ज दाये
धन्य० २

स्वामिगुण ओळखी साधी साधक दशा, दर्शन शुद्धता तेह पामे;
ज्ञान चारित्र तप वीर्य उल्लासथी, कर्म जीपी वसे मुक्ति धामे.
धन्य० ४

अद्यपि भाव त्रिकाळ जाणता, तो पण निज वितक कहुं अे;
भूल्यो अभिमानमें झोल्यो पर भावमे, विषय कषाय आश्रवबहु
धन्य० ४

संवर वच्छनु सुणी सोमंधरु, जैन दर्शन एहि आश तोअे;
आशा निज पद तणी स्वाभी अवलंबने, अनुपम सुख नित्य
शाश्वतोअे. धन्य० ५

(६)

श्री सीमन्धर माहरा साहिब छो साचा,
मुज मुजरो नित्य मानीये, अमची ए वाचा. श्री० १

ज्ञान दिवाकर उगीयो, झमझमगतो तेजे,
ए प्रभु हैडे समरीये, नित्य अधिक हेजे. श्री० २

पुकखलवई विजयमां, विचरे जगस्वामी,
धन्य तिहांनां भविजनां, तुम सेवा पामी. श्री० ३

हुंश हैयामां अति घणी, प्रभु मळवा केरी,
आडा डुंगर अति घणा, किम मलीये हेरी. श्री० ४

तिण कारण मुज वन्दना, ईहांथी मानजो,
"विनयविजय" वाचक तणो, विनति सद्दहजो. श्री० ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(७)

(अनन्तवीर ज अरिहंत)

पूर्वविदेह पुष्कलावती जयो जगपति ए.
श्री सीमन्धरस्वामी, प्रह समे नित्य नमुं ए, १

जगत्त्रयभाव प्रकाशता, भवि प्रतिबोधता ए;
उपकारी अरिहंत, प्रह समे नित्य नमुं ए. २

धन्य नयरी धन्य ते नरा, धन्य ते धराए;
विचरे जहां श्री जिनराज, प्रह समे नित्य नमुं ए. ३

धन्य दिवस धन्य ते घडी, देखशुं आंखडीए;
भक्तवत्सल भगवंत, प्रह समे नित्य नमुं ए ४

महेर नजर अवधारजो, पतित उगारजो अे;
जिन "हर्ष" गणेश सनेह, प्रह समे नित्य नमुं ए ५

(८)

स्वामि 'सीमंधर' ! विनति, अवधारी जिनराज रे,
नाम तुमारो सांभळी, रोमांचित होय काय रे. स्वामी० १

अेक नेडाही वेगळा, जो मन न गमे तेह रे,
अेक अळगा पण डूंकडा, जेह शुं अधिक स्नेह रे. स्वामी० २

जो चाहो तुम हेज शुं, तो उल्लसे मुज चित्त रे,
एह उखाणो लोकमां दिलभर दिल छे प्रीत रे. स्वामी० ३

मन चाहे मळवा भणी दरिसण देखे न आंखे रे;
पण शुं कीजे देवने, आपी नहि मुज पांख रे. स्वामी० ४

तो हवे नित्य नित्य वंदना, जाणजो श्री जिनचंद रे;
'जिनसागर' प्रभु गावतां, पाम्यो परमानंद रे. स्वामी० ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(९)

(तमे तुमे मैत्री रे साहिबा)

श्री 'सीमंधर' जगधणीजी, राय 'श्रेयांस'कुमार;
माता 'सत्यकी' नंदोजी, 'ऋक्ष्मणि'नो भरथार.
सुखकारक स्वामीजो, सुणो मुज मननी वात;
जपतां नाम तुम्हारुंजी विकसे सात धात. सुख० १

स्वजन कुटुंब छे कारमुंजी, कारमो सहु संसार;
भवोदधि पडतां माहरेजी, तुं तारक निराधार. सुख० २

धन्य तिहांना लोकनेजी, जे सेवे तुम पाय;
प्रहु उठीने वांदवाजी, मुज मनडुं नित्य धाय. सुख० ३

कागळ कांई पहोंच नहोंजी, किम कहुं मुज अवदात;
एकवार आवे अहींजी, करुं दिलनी सवि वात. सुख० ४

मनडामां क्षण क्षण रमेजी, तुम दरिसणना कोड;
वाचक 'जस' करे विनतीजी, अहोनिश वे करजोड. सुख० ५

(१०)

(राग : केदारो)

प्रभु मेरा पुण्यको नहीं पार ॥ए॥
भूरि भावे भ्रांति विण तुम्ह लहयुं शासनाधार. प्रभु० १

अधिक सुरतरु सुरगवीथीः मरु स्थळे मंदार.
भ्रम दूषित भरत मांहि, थयो तुम्ह दीदार. प्रभु० २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रद्धान ज्ञानने कथन करणे, सिद्ध चार प्रकार;
गुरुगमे ते विरल दीसे, जे दीपावणहार, प्रभु० ३

ऐहवामां श्री 'सीमंधर', तुज कृपा जळधार;
भरत मानस शमित भवभव, दुरित रज संभार प्रभु० ४

'ज्ञानविमळ' प्रकाश प्रकटत, सहज गुण घनसार;
बोधि सुरतरु सदल प्रसर्यो, एह तुम्ह उपगार, प्रभु० ५

(११)

(राग : वेलाउल)

श्री 'सीमंधर' विनति, सुण साहिब मेरा;
अहोनिश तुम ध्याने रहुं, मे फरजन तेरा श्री सी० १

भाव भक्ति शुं वंदना करुं उठी सवेरा;
भवदुःख सागर तारीये, जिम होय तुम नेरा. श्री सी० २

अंतर रवि जब प्रगटीयो, प्रभु तुम गुण केरो
तव हम मन निमळ भयो, मिट्यो मोह अंधेरो. श्री सी० ३

तारक तुम विण अवरको, नहि कहो कवण भलेरा;
ते प्रभु हमकुं दाखवो नहि, करुं तास निहोरा. श्री सी० ४

'नय' नितु नेहे निरखीये, प्रभु अबकी वेरा;
बोधि बीज मोहे दीजीये, कहुं कहा बहु तेरा. श्री सी० ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१२)

(ऋषभ जिणंदशुं प्रीतडी—ए देशी)

श्री सीमंधर' साहिबा, सुणो संप्रति हो भरतक्षेत्रनी वात के
अरिहा केवली को नहि, केने कहीये हो मनना अवदात के
श्री सीमधर० १

झाझुं कहेतां जुगतु नहि, तुम सोहे हो जग केवलनाणके;
भूख्या भोजन मागतां, आपे उलट हो अवसारना जाण के.
श्री सीमंधर० २

कहेश्यो तुमेत भगतो नहि, जूगताने हो वळी तारे सांई के;
योग्य जननु कहेवुं किश्युं, भावहीनने हो तारो ग्रही बांहीं के.
श्री सीमंधर० ३

थोडुं हि अवसरे आपीये, घणानी हो प्रभु ! छे पछे वात के,
पगले पगले पार पामीये, पछी लहीये हो सघळा अवदात के.
श्री सीमंधर० ४

मोडुं वहेलु तुमे आपशो, बीजानो हो हुं न करुं संग के,
श्री 'धीरविमळ' गुरु शिष्यनो, राखीजो हो प्रभु अविचळ रंग के.
श्री सीमंधर० ५

(१३)

श्री 'सीमंधर' साहिबा, विहरमान भगवंतरे;
जिनशु मन लाग्यो.
'पुक्खलावइ' विजया मांहि विचरे अरिहंत रे, जिनशु० १
सोवनवर्ण पणसयधनु मन्दरगिरि सम धीर रे; जिनशु०
'श्रेयांस' नृपति कुळ दिनमणि, मन हीयडाहीर रे, जिनशु० २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नंदन ' सत्यकी ' मायनो, वृषभ लंछन भगवान रे; जिनशुं०
' ऋक्ष्मणि ' राणीनो नाहलो, गुणमणि रयण निधान रे, जिनशुं०३
'कुंथु' ' अर ' जिनअंतरे, जन्म्या वळी व्रत लीधरे; जिनशुं०
'दशरथ' नृप व्रतना समये, भावी 'उदय' जिम सिद्ध रे. जिनशुं०४
ज्ञानविमळ' गुणथी लह्या, लोकालोक स्वभाव रे; जिनशुं०
भवोदधि पार में पामीओरे, में तुम्ह पद युग नाव रे. जिनशुं०५

(१४)

(राग : अजित जिणंदशु प्रीतडी–ओ देशी)

श्री ' सीमन्धर ' साहेबा विनतडी हो सुणीये किरतार के;
ते दिन लेखे लागशे, जिण दिवस हो लईशुं दीदार के.
श्री सी० ॥१॥

हेजालु हैयुं उल्लसे, पण नयणे हो निरख्ये सुख थाय के;
जे जलपाना पिपासीओ, तस दुःखे हो करी तृप्ति न थाय के;
श्री सी० ॥२॥

जाणो छो प्रभु बहु परे, म्हारा मननी हो वितक वात के;
तो शुं ताणो छो घणुं, आवी मिलो हो मुज थई साक्षात के.
श्री सी० ॥३॥

हुं उत्सुक बहु परे कहुं, पण न गणुं हो कांई रीझ अरीझ के;
ए लक्षण रागी तणुं, तिणे भाख्युं हो सघलुं मनगुझ के.
श्री सी० ॥४॥

"ज्ञानविमळ" प्रभु आपणो, जाणीने हो कीजे उच्छाह के;
उत्तम आप अधिक करे, आवी मळ्या हो ग्रह्या जे बांह के.
श्री सी० ॥५॥

<>

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१५)

(राग : थारी आंखलडीये घर घाल्यो गहेला गिरधरिया–ओ देशी)

तारी मुद्राए मन मोह्युं रे, मनना मोहनीया,
तारी सूरत्तिए जग सोह्युं रे, जगना जीवनीया. ॥आंकणी॥

तुम जोतां सवि दुर्मति विसरी, दिनरातडी नवि जाणी;
प्रभु गुण गण सांकळशुं बांध्युं, चंचळ चित्तडुं ताणी रे. मन० १

पहेलां तो एक केवळ हरखे, हेजाळु थई हळियो,
गुण जाणीने रूपे मिलीयो, अभ्यंतर जई भळियो रे. मन० २

वीतराग ईम जस निसुणीने, रागी राग करेह,
आप अरूपी राग निमित्ते, दास अरूप धरेह. मन० ३

श्री 'सीमन्धर' तुं जगबंधु, सुंदर ताहरी वाणी,
मंदर भूधर अधिक धीरजधर, वन्दे ते धन्य प्राणी रे. मन० ४

श्री 'श्रेयांस' नरेसर नंदन, चंदन शीतल वाणी,
'सत्यकी' माता वृषभलंछन प्रभु, 'ज्ञानविमळ' गुणखाणीरे. मन० ५

(१६)

(राग : काफी–मोहनना लाव—ओ देशी)

श्री सीमन्धर साहिबा, जनरंजना लाल,
अतिशयवंत उदार हो, दुःख भंजना लाल,
सुणीये सेवक विनति मनमोहना लाल,
सत्यकी मात मल्हार हो, जग सोहना लाल. १

ज्युं चातक जलधर विना, म०, अवर न पामे कोय हो, जग०
तुम विण अवर न पारखुं, गुण रोहणा लाल,
दृढ प्रतीत मुज एह हो, भावि बोहना लाल. जग० २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक तुहारी कने जे रहे म०, ते किम कीजे दूर हो.
इम शोभा नवि संपजे म०, सेवक इच्छित पूरे हो, जग० ३
श्री श्रेयांस नृप कुलतिलो म०, सज्जन नयणानंद हो,
ऋक्ष्मणि राणी नाहलो म०, वृषभलंछन सुखकंद हो. जग० ४
पूर्वविदेहे पुक्खलवई म०, नयरी अयोध्या भूप हो.
विजया मांहि विराजता म०, ज्ञानविमळ गुणरूप हो. जग० ५

(१७)

मीठडा जिन में दीठडा रे, कांई समवसरण मंडाण जी रे जी
जयो जयो जगचिंतामणि जी रे जी
मीठडी रे वाणी सुणावतां रे, कांई सीमंधर जगभाण जी रे जी
जयो जयो जगचिंतामणि जी रे जी ॥१॥
ध्यान भुवनमां ध्यावतां रे, कांई मीठडो आतम भाव जी रे जी
जयो जयो जगचिंतामणि जी रे जी
मीठडीमां मीठडी मिल गईरे, कांई तव हुओ पूर्ण जमावजीरे जी
जयो जयो जगचिंतामणि जी रे जी ॥२॥
बलिहारी ए जिन तणी रे, जस ध्यान थकी शुभकाम जो रे जी
जयो जयो जगचिंतामणि जी रे जी
सिझे रीझे अनुभव रे, फांई न्यारो आतमराम जी रे जी
जयो जयो जगचिंतामणि जी रे जी ॥३॥
दुःख दुर्मति दुर्गति तणो रे, कांई तव न रह्यो कोई दावजीरे जी
जयो जयो जगचिंत मणि जी रे जी;
पर परभव माहि रह्यो रे, कांई तव लह्यो सहज स्वभावजीरे जी
जयो जयो जगचिंतामणि जी रे जी ॥४॥
ज्ञानविमल प्रभुता घणी रे, कांई आई मिले महमूर जी रे जी
जयो जयो जगचिंतामणि जी रे जी;
अहनिशि समता सुंदरी रे, कांई हरखित हीई हजूर रे जी रे
जयो जयो जगचिंतामणि जी रे जी ॥५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१८)

(राग : केदारो)

(साहिब सांभळो रे संभव अरज अमारी)

श्री सीमंधरुं रे, मारा प्राण तणो आधार,
जिनवर जयकरुं रे, जेहना झाझा छे उपगार.
क्षण क्षण सांभरे रे, एक श्वास मांहि सो वार,
किमहि न विसरे रे, जे वस्या छे हृदय मोझार. श्री सी० १

हुंसी हियडले रे, जिम होय मुक्ताफळनो हार,
ते तो जाणोये रे, ए सवि बाहिरनो शणगार,
प्रभु तो अभ्यंतरे रे, अळगो न रहे लगार,
अहोनिश वंदना रे, करीए छीए ते अवधार. श्री सी० २

नयन मेलावडे रे, निरखी सेवकने संभार,
तो हुं लेखवुं रे, मारो सफळ सफळ अवतार;
नहि कोइ तेहवो रे, विद्या लब्धिनो उपाय,
आवीने मळुं रे, चरण ग्रहुं हुं वळी धाय. श्री सी० ३

मळवुं दोहिलुं रे, तेह शुं नेह तणो जे लाग,
करतां सोहिलुं रे, पण पछी विरहनो विभाग;
चन्द्र चकोरने रे के चकवा दिनकर ने होय जेम,
दूर रह्या थकां रे, पण तस वधतो छे प्रेम. श्री सी० ४

पण तिहां एक छे रे, कारण नजरनो सम्बन्ध,
विरहे ते नहीं रे, ए मोटा छे रे धंध;
पण एक आशरो रे, सुगुण शुं जे रे एकतान;
तेहथो वाधशे रे, ज्ञानविमळ गुणनो जसमान. श्री सी० ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(११)

विनतडी अवधार हां रे अवधार
साहिब सुगुणी चित्त संभारी, हां रे संभारी
भाविक लोक सदा तुम चरणे रे,
करी सेवा हां रे निरधार; साहिब०
दुःख समये भरत भाविकने रे,
इये न करो हां रे उपगार तुंहिज छे परमाधार साहिब० १

मोजा महिराण महेर धरीने रे,
इये न करो उपगार; साहिब०
सम विसम धरती नावि जोवे रे.
वरसंते जिम जळधार साहिब० २

ऊंच नीच घर ज्योति न टाळे रे,
जिम शशधर रे हो जिण दिनकार; साहिब०
अम आवास वास करो करी सरिखा रे,
कुसुम सुगंध हां रे परकार. साहिब ६

'श्री सीमंधर' तेणी परे साहिब रे,
पूरवविदेह हां रे शणगार; साहिब०
केवळ कमलाकंत अनंत गुण रे,
'सत्यकी' मात मल्हार. साहिब० ४

'ज्ञानविमळ' गुण गणनी गणना रे,
कहेतां न पामे पार; साहिब०
अहोनिश चरण शरण प्रभु तुमचां रे,
एही छे शुद्धाचार साहिब० ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२०)

(राग : सगुण सनेही साचो साहिबो जी)

सुजन सुजन सौभागी वहालो हो जी, मोहन 'सीमंधरस्वामी';
दर्शन दर्शन करवा अलज्यो हो जी, मुनिजन आत्माराम.
सुजन० ॥१॥

ऊंचु उंचुं डुंगर सरीखुं हो जो, दर्शन मोहनीय कर्म;
ममता मभता सरिते अंतरो हो जी, अचरिज अंतर धर्म.
सुजन० ॥२॥

करवुं करवुं हवे कशुं साहिबो जी केणीपरे पाछो ते थाय,
आगम वचन परिभवे हो जी, नाशी दूर पलाय.
सुजन० ॥३॥

अनुभव अनुभव आदित्य आकरो हो जी, समताविषे शोषाय,
शीतल शीतलता अति ऊपजे हो जी विस्मय एह कहाय.
सुजन० ॥४॥

मनना मनोरथ सवि फळे हो जी, अंतर मेल हराय,
विबुध 'विबुधविमळ' प्रभु राजोया हो जी, करुणा नजर ठराय.
सुजन० ॥५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२१)

सरस्वति सिद्ध बुद्ध विनवुं जो,
स्वामि ! तुमें छो त्रिभुवननाथ जो,
प्रभाते उठीने तमने वान्दीओ जी,
स्वामि ! वेगे वेगे दीयो धर्मलाभ जो,
स्वामिसीमन्धर मुजने मेळवोजी. स्वामि० १

दश दोहिले स्वामि ! हुं रह्योजी,
मारे नयणे जोयुं नवि जाय जो,
शुं करुं स्वामिसीमन्धर वेगळा वस्याजी,
हांरे हुं तो पांख विना रह्यो निराधार जो. स्वामि० २

राग ने द्वेषे स्वामि ! हुं भर्यो जी,
मुजने नडीयो नडीयो क्रोध कषाय जो,
माया ने लोभे स्वामि ! हुं भर्योजी,
मारी गुंज रही मनमांय जो. स्वामि० ३

मा ने बाप बन्धव कारमाजी,
कारमो कुटुम्ब परिवार जो,
आज्ञा विरुद्ध स्वामि ! हुं रह्योजी.
मारी कोइए न कीधी सार जो. स्वामि० ४

बेउ कर जोडी स्वामि ! विनवुं जो,
हां रे हुं तो मागु चरणनी सेव जो,
हां रे हुं तो मांगु मुक्तिनो वास जो,
हां रे हुं तो कदीए न आवुं गर्भावास जो. स्वामि० ५

ॐ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२२)

जिन सोभाग्यसूरिकृत श्री सीमंधरजिन स्तवनम्

(नंदिसर बावन–ए देशी)

जय जय परमपुरुष पुरुषोत्तम,
परमानंद पद धामी रे;
जय जय सकल सुरासुर वंदित,
सेवित पद अभिरामी रे. १

धन धन पूरव विदेह विचरे,
श्री सीमंधर स्वामी रे;
जंगम सुरतरु सुरमणिनी परे
कामित पूरण कामी रे. २

धन धन जगमें जे नर उत्तम,
श्रवण सुणे जिनवाणी रे;
आगम उक्ति धरी निज चित्ते,
आराधे भवि प्राणी रे. ३

शुद्ध नयाशय जे जिनवाणी,
अनुभव गुणनी खाणी रे;
त्रिकरण शुद्ध नमे जे प्राणी,
ते होवे निर्मळ नाणी रे. ४

चउविह धर्म प्रकाशे जयगुरु
भवियण ने हित आणी रे;
श्री जिन सौभाग्य सूरि उदयथी,
पामे पद निरवाणी रे. ५

ॐ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२३)

(ढाळ : रसिगानी)

श्री सीमन्धर सुन्दर साहिबा,
मन्दरगिरि समधीर सलुणा;
श्री श्रेयांस नरेश्वर नन्दन,
मुज हीयडानुं रे हीर; सलुणा; १

सोवन वरणे दीपे देहडी,
सुमनस सेवित पाय, स०
भद्रशाल लक्षणे करी राजतो,
भेटयां भवदुःख जाय; २

चंद्र सूरज ग्रह गण सहु प्रभु तणो,
चरण शरण करे नित्य; स०
जाणे रे जित्या आप प्रभो भरे,
करे प्रदक्षिणा कृत्य, स० ३

मध्य विदेहे विजय पुष्कलावती,
नयरी पुंडरीकिणी सार, स०
तिहां विचरे भविजन मन मोहता,
सत्यकी मात मल्हार; स० ४

मेरु महीधर परे अविचल रहे,
मुज मन एहि ज देव; स०
ज्ञानतिलक गुरु पदकज भमरलो,
विनयचंद्र करे सेव. स० ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२४)

श्री सीमंधर साहिबा,
विनतडी अवधार लाल रे;
परम पुरुष परमेश्वरु,
आतम परम आधार लाल रे. श्री० १

केवळ ज्ञान दिवाकरु,
भांगे सादि अनंत लाल रे;
भासक लोकालोकनो,
गायक गेय अनंत लाल रे; श्री० २

इन्द्र चन्द्र चक्रीश्वरु,
सुर नर रहे कर जोड लाल रे;
पद पंकज सेवे सदा,
अणहूता इक क्रोड लाल रे; श्री० ३

चरण कमळ पिंजर वसे,
मुज मन हंस नित मेव लाल रे
चरण शरण मोहे आशरो,
भव भव देवाधिदेव लाल रे. श्री० ४

अधम उद्धारण जो तुमे,
दूर हरो भव दुःख लाल रे;
कहे जिनहर्ष मया करी,
देजो अविचल सुख लाल रे. श्री० ५

ॐ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२५)

(राग : केदारो)

सीमंधरस्वामी सुणजो विनति, कीजे रे स्वामी
विनति वाजे दरिसण दया करी अमने दीजे रे स्वामी
सुगुण स्नेही तो हियडुं रीझे रे स्वामी
चरण तुभारा रे, लागी शिवसुख लीजे रे स्वामी ॥१॥

विजय पुख्लावई वेगळो वास रे स्वामी
नयरी पुंडरीगिणी लीलविलास रे स्वामी
वांदवानी तो हि ज पूगें, अहमने आश रे स्वामी
स्वामि गयण गामिनी विद्या जो होय पास रे स्वामी ॥२॥

मुखडुं याल्हानुं जोवा हीयडुं हिसे रे स्वामी
कवारो जाणुं अे वाल्हो नयणे दीसे रे स्वामी
जेह दिन तुम तणे पासे आवीश रे स्वामी
धन धन ते दिन तेह विसू आवीश रे स्वामी ॥३॥

वाल्हास्युं वातडी करतां वेळा जे जाय रे स्वामी
जसवाळी सघळी ते आउखा मांहि रे स्वामी
श्रेयांस राजाना कुंवर प्रणमुं पाय रे स्वामी
मनमंदिर मुज आवो जिम सुख थाय रे स्वामी ॥४॥

सुरनर सेवे जेहना पायो रे स्वामी
साहिब सोभागी पूरव पुण्य ते पायो रे स्वामी
वृषभ लंछन माता सत्यकी जायो रे स्वामी
राणी ऋक्ष्मणि वाल्हो विनये गायो रे स्वामी ॥५॥

ॐ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२६)

पूर्वसुविदेह पुष्कल विजय मंडनं,
मोहमिथ्यात्व मति तिमिरभरखंडनम् ।
वर्तमानं जिनाधीश-तीर्थंकर,
भव्य ! भक्त्या भजे स्वामिसीमंधरम् ॥१॥

असुरसुरखचरनरवृन्द कृत वंदनं,
रूप सुररमणी सम-सख्यकी नन्दनम् ।
वृषभ लंछन-धरं ज्ञानगुणसुन्दरं,
भव्य ! भक्त्या भजे स्वामिसीमंधरम् ॥२॥

परमकरुणा परं जगति हित कारकं,
भीम-भवजलनिधि-पार उत्तारकम् ।
धर्म-धारिम-धरा धरणधर-मन्दरं,
भव्य ! भक्त्या भजे स्वामिसीमंधरम् ॥३॥

ऋद्धिवरबुद्धिवरसिद्धिवरदायकं,
त्रिदशपति-भवनपति-मनुजपति नायकम् ।
भविकजननयनकैरववने शशिकरं,
भव्य ! भक्त्या भजे स्वामिसीमंधरम् ॥४॥

स्वर्ण समवर्ण वर मूर्ति शोभावरं,
सुगुरु जिनचंद्रजितसिंह गुणसागरम् ।
समयसुन्दर सदानन्द मंगलकरं,
भव्य ! भक्त्या भजे स्वामिसीमंधरम् ॥५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२७)

(प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए)

गुणनिधि साहिब सेवीए, 'सीमंधर' जिनराज;
सर्व सुपर्व अगर्व नमे जस पायक जे,
शिववहु वरणने काज. १
जयवंती 'पुक्खलावती' विजये विजय करंत;
पुरी 'पुंडरीगिणी' नाथ 'श्रेयांस' नृपांगना
'सत्यकी' उर धरंत. २
'कुंथु' 'अर' जिन अंतरे, सीमंधर जिन जात;
विद्या जणे विवेक पूरव दिशि तम रिपु,
सुरगिरि उपर स्नात. ३
तनु शत पंच धनुषतणु, रमणीय रूप मणिकंत
दक्षिण पय तळे जोध वृषांक कनक छवि,
कांति वीर्य अनंत. ४
'सुव्रत' 'नमि' अंतर विचे, दीक्षा लीये तजी भोग;
आतम शुद्धे घाति समिध वन ज्वालीयां,
शुक्ल हुताशन योग ५
अडहिय सहस सुलक्षणो, शोभित साहिब अंग;
करगत आमल विश्वने जाणी झीलतो
'ज्ञान' जलाब्धि तरंग. ६

(२८)

श्री 'सीमंधर' साहिबा रे, विनतडी अवधार;
भवसागरमां बूडता रे, बांह ग्रही मुज तार रे.
कर जोडी कहुं आज मानो मुज अरदास रे,
शिरनामी कहुं आज. १

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दक्षिण भारतमां अमे रह्यां, 'पुष्कलावती' जिनराज;
अंतर तो दीसे घणो रे, केम सरशे मुज काज. शिर०२
जलमां वसे रे कुमुदिनी रे, चन्द्र वसे रे आकाश:
जिम तेहनी इच्छा पूरता रे, तिम प्रभु पूरो मुज आश. शिर०३
जे तुम आण शिर धरे रे, सुखीया कहीये रे तेह;
वळी वळी शुं कहुं व्हालमा रे, मुज शुं धरजो नेह शिर०४
तुं माता तुंही ज पिता रे, भ्राता तुं जगबुद्ध;
महेर करो मुज उपरे रे, करो करुणा रस शुद्ध –शिर०५
श्री श्री विजयजिणंदनो रे, शिष्य विजय गुण गाय:
आज पछी प्रभु तुम विना, अवर शुं नमवा निम. शिर०६

(२९)

बे कर जोडी विनवुं रे लाल, मारी विनतडी अवधार रे;
तुमे महाविदेहमां वस्या रे लाल, अमने छे तुम आधार रे,
प्रभाते उठी करुं वन्दना रे लाल. १
भरतक्षेत्रमां हुं अवतर्यो रे लाल, किम करी आवुं हजूर रे
तुम दर्शन नवि पामीयो रे लाल, रह्यो मजूरनो मजूर रे.प्रभाते०२
तुम पासे देव घणा वसे रे लाल, एक मोकलजो महाराज रे
मनना सन्देह प्रभु पूछीने रे लाल, करुं सफल दिन आज.प्रभाते०३
केवलज्ञानिना विरहथी रे लाल, मनुष्य जन्म एळे जाय रे,
शुभ भाव आवे नहि रे लाल, शी गति माहरी थाय रे ?प्रभाते०४
कर्मने मोहे खूब कस्यो रे लाल, हजु न थयो खुलास रे,
जिम तिम करी प्रभु तारजो रे लाल, हुं तो धरूं तमारी आश रे.प्रभाते०५
"सीमन्धरस्वामि"ना नामथी रे लाल, थाय सफल अवतार रे,
"कल्याणमुनि" एम विनवे रे लाल, प्रभु नामे जयजयकार रे.प्रभाते०६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३०)

(भवोदधिमां बूडता प्रभु–ओ राग)

हे 'सीमन्धरस्वामि' व्हाला विनति धरजो,
भरतवासी आ दास पर प्रभु महेर करजो,
निजभावनी जे शुद्ध रमणता भूली भवमां हुं पडीयो,
तुज ज्ञानज्योति उर प्रगटो तुज धर्मने पामुं.
हे ! सीमन्धर० १

त्रिकरण शुद्धिए एज माटे करी रह्यो हुं आराधना
तुज समीपे जन्म हो मम तुज आणने धारुं.
हे ! सीमन्धर० २

'पुंडरीकिणी नगरीष प्रभु जन्म्या 'कुंथु अर' अंतरे;
दीक्षा केवलश्री वर्या 'नमि मुनिसुव्रत' अंतरे;
हे ! सीमन्धर० ३

'उदय पेढाल'नां अंतरे निर्वाणपद शोभावशो,
'श्रेयांस' कुळमां नभोमणि प्रभु मुजने.
हे ! सीन्मधर ४

'सत्यकी' नंदन दुःख विहंडन दर्शन कृपा वरसावजो
राजरमणी 'ऋक्ष्मणि' तजी ए त्याग द्यो मुजने.
हे ! सीमन्धर० ५

विदेहवासी विदेह आपो तुज भाव पामुं निर्मळो,
'आनंद'नी त्यां ऊर्मी उछळे बनुं जेम अविनाशी.
हे ! सीमन्धर० ६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३१)

(अनन्तवीरज अरिहंत सुणो मुज विनति–ए राग)

'सीमन्धर' जिनराज कृपालु तारजो,
जन्म जराना दुःखथी प्रभुजी उगारजो;
विद्यमान प्रभु वात हृदयनी जाणता,
साचा स्वामी सुखकर विनति मानता. १

काळ अनादि मोहवशे बहु दुःख लह्यां,
चार गतिनां दुःख विचित्र सहु सह्यां
मोहवशे धामधूममां धर्मपणुं ग्रह्युं,
शुद्ध स्वरूप स्याद्वाद् तत्त्वथी सद्दह्युं. २

गाडरिया प्रवाहमां दृष्टिरागे रह्यो,
बाह्यक्रिया रुचि धामधूममां हुं पड्यो;
लोकोत्तर जिनधर्म परखीने नवि लह्यो,
गुरुगम ज्ञान विना हुं भवोभव लडथडयो. ३

प्रभु तुम शासन पुण्यथी पामी मे जाणीयुं;
मिथ्या दर्शन जोर कुमतिनुं व्यापीयुं;
परख्युं सत्य स्वरूप जिनेश्वर धर्मनुं,
रहेशे जोर हवे केम आठे कर्मनुं ४

तुज करुणा ऐक शरण सेवकने जाणशो,
जाणी बाळक त्हारो करुणा आणशो;
म्हारे शरणुं एक जिनेश्वर जगधणी,
तारो करुणावंत महेश्वर दिनमणि. ५

'बुद्धिसागर' बाळ तुमारो करगरे,
साचा स्वामि पसाये सेवक सुख वरे,
उपादाननी शुद्धि प्रभुता जागशे,
जित नगारुं अनुभवज्ञाने वागशे. ६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३२)

श्री सीमंधर साहिबा, अवर नहि जगनाथ;
मारे आंगणीये आंबो फळीयो, कोण भरे रे बावळ केरी बाथ रे.
सलुणा देव स्वामिसीमंधर देव. १

कोई आवे रे बलिहारीनो साथ रे, सलुणादेव स्वामिसीमंधर देव,
आडा सायर जळे भर्या रे, वचमां मेरु होय;
कोई केईकने आंतरे, तिहां पहोंचीं शके नहि कोय.
सलुणा देव स्वामिसीमंधर देव. २

में जाण्युं हुं आवुं तुम पास, विषम विषम पंथ दूर;
आडा डुंगरने दरिया घणा, वचमां नदीओ वहे भरपूर रे.
सलुणा देव स्वामिसीमंधर देव. ३

मुज हैडुं संशय भर्युं, कोण आगळ कहुं वात:
एकवार रे जिनजो जो मिले, जोइ जोइ जोंउं रे वंदन केरी वाट रे
सलुणा देव स्वामिसीमंधर देव ४

कोइ कहे रे स्वामीजी आवीया, आपुं लाख पसाय;
जीभ रे घडावुं सोना तणी, तेहना दूधडे पखाळुं पाय रे.
सलुणा देव स्वामिसीमंधर देव. ५

स्वामीजी स्वप्नभां पेखीया, हैडे हरख न माय;
वाचक गुणसुंदर एम भणे में तो भेटया सीमंधर राय रे.
सलुणा देव स्वामिसीमंधर देव. ६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३३)

सुनो सुनो सीमन्धर स्वामि शासन स्वामी रे,
मोहे लगी मिलनकी आश, अंतरजामी रे सुनो० १
में भरतक्षेत्रमें आय लीयो हे वासो रे,
तुम लगी न आयो जाय, पूछुं किम शांसो रे,...सुनो० २
मोह्या विण वीतराग नीर नयणे वरसे रे,
मारुं हैयु न मेरे पांस, सदा दिल तलसे रे...सुनो० ३
एम तलसे दिन ने रात, मनडुं मेरुं रे,
कब देखुं तुम देदार, दरिसण तेरुं रे.. सुनो० ४
में रात उघाडी आंख निंद न आवे रे,
भगवंत विना भव्यजीव, बहु दुःख पावे रे...सुनो० ५
ऐवा जिनगुण गावे जिनदास, मधुरी वाणी रे,
चरणोंकी रज करी जाण, आपनो जाणी रे...सुनो० ६

(३४)

सेवक स्वामी एकराजी तोसूं एहि ज प्रीति;
समकित थारी विनतिजी, कहेजो धरी निज प्रीति;
कलानिधि ! तुं जाईस तिण ठामी, आंकणी.
विहरमान जिणवर जिहांजी, श्री सीमन्धरस्वामी. कला० १
मुज मने अलजो छे घणोजी, देखण प्रभु दीदार;
जाणुं मुख आवे नहिजी, प्रसन्न करुं दो च्यार. कला० २
अति अळगी पुंडरीकिणीजा, किण परि आयो जाय;
त्रिकरण शुद्धे वंदनाजी, मुजथी कहेवाय रे. कला० ३
तुं नाणे जाणे सहिजी, पण नाणे, मनि प्रेम;
नाणे लोभाये नहिजी; तो वळी कीजई केम. कला० ४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दूर थकां पण ताहरोजी; ध्यान धरुं निशदिश;
जिम सुख पामुं शाश्वताजी, तिम करजो जगदीश. कला० ५
देव सरागी छे घणाजी, ते दीठा न सुहाय;
श्री जिन रंग हीये वस्योजी; अवर न आवे दाय. कला० ६

(३५)

विचरे पूर्व विदेहमां, सुखकारी रे साहेबजी;
सीमंधर भगवंत रे, जगत उपकारी रे साहेबजी; १
उत्पाद ध्रुव व्यव्यना, सुख०
समय समय भासंत, जगत०
सुरकृत आसने बेसीने, सुख०
प्रभु देशना वरसंत रे, जगत० २
षड् द्रव्यगुण पर्यायथी, सुख०
अड पख चउ भंग सार रे, जगत०
प्रमाण नय निक्षेपसुं, सुख०
चउ अनुयोग विचार रे जगत० ३
दशलाख केवलि मुनिवरा, सु०
चोराशि गणधार रे, जगत०
एक शत कोटि श्रमण भला, सु०
करे जिन संग विहार रे, जगत० ४
होंस हृदयमां नित्य रहे, सु०
तुम भेटण काज रे, जगत०
पण भरतमें दूरे वस्यो, सु०
किम होय भेटण महाराज रे, जगत० ५
अहींथी वंदना प्रतिदिने, सु०
जाणजो शत अठ वार रे, जगत०
रतन कहे ए विनति, सु०
मानजो विश्व आधार रे, जग० ६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३६)

(राग : मारुणी)

पूरव महाविदेह रे, 'पुखलावती' विजय जेह रे,
पुंडरीकिणी पुरी नामी रे, विहरे 'सीमंधरस्वामी' रे. १

वृषभ लंछन सुखकार रे, श्री श्रेयांस मल्हार रे;
सत्यकी उदर अवतार रे, ऋक्षमणिनो भरतार रे. २

पांचसे धनुषनी काय रे, सेवे सुरनर पाय रे;
सोवन वर्ण शरीर रे, सायरु जेम गंभीर रे. ३

कनक कमल पद ठावे रे, सुर किन्नर गुण गावे रे;
भवियण ने आधार रे, भव जल पार उतार रे. ४

धन धन ते पुर गाम रे, विहरे सीमंधरस्वामी रे;
धन धन ते नर नारी रे, भक्ति करे प्रभु सारी रे. ५

श्री सीमंधरस्वामी रे, चरण नमुं शिर नामी रे;
समयसुन्दर गुण गावे रे, मन वंछित फल पावे रे. ६

(३७)

(ओच्छव रंग वधामणा–ओ राग)

"सीमंधर" जिन रूपमां, हुं तो रहियो राची;
भाव कर्मने टाळवा, शुद्ध परिणति साची. १

भावकर्मना नाशथी, द्रव्यकर्म टळे छे;
नायक मरवाथी यथा, सैन्य पाछुं वळे छे. २

राग–द्वेष भावकर्म छे, द्रव्यकर्म ग्रहावे;
राग–द्वेष टळवाथकी, द्रव्यकर्म न आवे. ३

निश्चय शुद्ध चारित्रथी, राग–द्वेष टळे छे;
राग–द्वेष टळवा थकी, निज लक्ष्मी मळे छे. ४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चेतन शुद्ध स्वभावमां, लीनता, क्षण थावे;
त्यारे सहजानंदनो, अनुभव मन आवे. ५
क्षयोपशम ज्ञाने करी, प्रभु श्रेणि चढीयो;
शुक्ल ध्यान महाशस्त्रथी, मोह साथे लडीयो. ६
जयलक्ष्मी अंगीकरी, नव ऋद्धि पायो;
"बुद्धिसागर" ध्यानथी, प्रभु अंतर आयो. ७

(३८)

सुणो चंदाजी ! 'सीमंधर' परमातम पासे जाजो;
मुज विनतडी प्रेम धरीने एणी पेरे तुमे संभळावजो.
—अे आंकणी०

जे त्रण भुवननो नायक छे, जस चोसठ इन्द्र पायक छे;
नाण दरिशण जेहने खायक छे. सुणो० १

जेनी कंचन वरणी काया छे, जस धोरी लंछन पाया छे;
'पुंडरीगिणी' नगरीनो राया छे. सुणो० २

बार पर्षदा मांही बिराजे छे, जस चोत्रीश अतिशय छाजे छे
गुण पांत्रीश वाणीए गाजे छे. सुणो० ३

भविजनने जे पडिबोहे छे, तुम अधिक शीतळ गुण सोहे छे
रूप देखी भविजन मोहे छे. सुणो० ४

तुम सेवा करवा रसियो छुं, पण भरतमां दूर वसियो छुं
महा मोहराय कर फसियो छुं. सुणो० ५

पणसाहिब चित्तमां धरीयो छे, तुम आणा कर ग्रहीयो छे
तो कांईक मुजथी डरीयो छे सुणो० ६

जिन 'उत्तम' पूंठ हवे पूरो कहे 'पद्मविजय' थाउ शूरो
तो वाधे मुज मन अति नूरो. सुणो० ७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३९)

पुंक्खलवई विजये जयो रे, नयरी पुंडरीगिणी सार;
श्री सीमंधर साहिबा रे; राय श्रेयांस कुमार.
जिणंदराय ! धरजो धर्म सनेह १

न्हाना मोटा अन्तरो रे, गिरुआ नवि दाखंत;
शशि-दरिसण सायर वधे रे, कैरववन विकसंत. जिणंद० २

ठाम कुठाम न लेखवे रे, जग वरसंत जलधार;
कर दोय कुसुमे वासोये रे, छाया सवि आधार. जिणंद० ३

राय ने रंक सरीखा गणे रे, उद्योते शशी सूर;
गंगाजल ते बिहुंतणा रे, ताप करे सवि दूर. जिणंद० ४

सरीखा सहुने तारवा रे, तिम तुमे छो महाराज;
मुजशुं अंतर केम करो रे, बाह्य ग्रह्यानी लाज. जिणंद० ५

मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण;
मुजरो माने सवि तणो रे, साहिब ते सुजाण, जिणंद० ६

वृषभ लंछन माता सत्यकी रे, नंदन ऋक्ष्मणि कंत;
वाचक यश इम विनवे रे, भय भंजन भगवंत. जिणंद० ७

(४०)

(प्रभु ! तुज शासन अति भलुं)

'पुक्खलवइ' विजये जयो, श्री 'सीमंधरस्वामी' रे:
विहरमान प्रभु ग्रह समे, प्रणमुं हुं शिर नामी रे. पुक्खल०१

नयरी पुंडरीगिणी' राजीयो, 'श्रेयांस' नृप-कुल-चंदो रे;
'सत्यकी' नंदन सुंदरु, भवियण नयननंदो रे. पुक्खल०२

धन्य जना ते विदेहना, सफल जन्म तस जाणुं रे;
पुण्य प्रबल जग तेहनुं, जीवित तास वखाणुं रे. पुक्खल०३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूरण प्रेमे प्रह समे, वांदे जे प्रभु भावे रे;
सांभळे देशना दीपती, प्रतिदिन दरिसण पावे रे. पुक्खल०४

प्रभु तुम दरिसण देखवा, नयणां करे उमाह रे;
पीवा वचन पीयूषने, श्रवण धरे उच्छाह रे. पुक्खल०५

दूर देशांतर तुम वस्या, ते मारे न अवाय रे;
ईहां थकी मुज वंदना, अवधारो महाराय ! रे. पुक्खल०६

'ऋक्ष्मणी' वल्लभ विमायो, वृषभ लंछन हितकारी रे
'जयविजय' कहे साहिबा ! तुज सेवा मुज प्यारी रे. पुक्खल०७

(४१)

(तुमे बहु मैत्री रे साहिबा)

सीमंधर ! करजो मया, धरजो अविहड नेह,
अमचा अवगुण देखीने, देखाडो रखे रे छेह. सीमंधर० ! १

हैयुं हेजाळुं माहरुं, खिण खिण आवो छो चित्त;
पळ पळ इच्छ रे जोवडो, करवा तुमशुं रे प्रीत. सीमंधर ! २

भक्ति तुमारी सदा पूरे अणहुंता सुर कोड;
जग जोतां कोई नवि जडे, स्वामि ! तुमारी रे जोड. सीमंधर ! ३

दक्षिण भरते अमे वस्या, पुक्खवई जिनराय;
दीसे मलवा रे तुम तणो, ए मोटो अंतराय. सीमंधर ! ४

दैवे दीधी न पांखडी, किण विध आवुं हजूर !
तो पण मानजो वंदना, नित्य उगमते सूर. सीमंधर ! ५

कागळ लखवो रे कारमो, कीजे महेर अपार;
विनति ए दिल धारिये; आवागमन निवार. सीमंधर ! ६

देव दयाल कृपाल छो, सेवकनी करो रे सोर;
उदयरतन एम उच्चरे, स्वामि ! मुजने न विसार. सीमंधर ! ७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(४३)

(राग–तुं मन मोह्यो रे वीरजो–ओ देशी)

श्री सोमंधर साहिबा, धरजो धरम स्नेह,
सेवक रसियो सेवा तणो, हुं छुं तुम पद खेह. श्री सी० १
वहाला तुमे वस्या वेगळा छो अम्ह हियडा हजूर;
तिणथी तिमिर दूरे गया, उग्यो अनुपम सूर. श्री सी० २
नयणे प्रीति जे दाखवे, ते संयोग संबंध;
अंतर अंतरविण जिके, मिलीया परम ते बंधु. श्री सी० ३
पुक्खलवई विजया जिहां नयरी पुंडरीकिणी मांहि;
विचरे तिहां सहु इम कहे, पण ते नियति न प्राहि. श्री सी ४
विजया मुज शुद्ध चेतना, भक्ति नयरी निरुपाधि;
तिहां विचरे मुज साहिबो, जिहां सुख सहज समाधि. श्री सी० ५
अेक त्हारी तोही उपरे, में तो कीधो रे स्वाम !
लोक प्रवाहथी जे बीहे, तेहनां न सरे रे काम. श्री सी० ६
जिण दिनथी तुम्हे चित्त वस्या, नवि अवर को दाय;
ज्ञानविमल सुख संपदा, अधिक अधिक हवे थाय. श्री सी० ७

(४२)

श्री सीमंधरजीकुं वंदनो, नित होय जो हमारी रे;
मन वचन काया त्रिके करी, सेवा चाहुं तुम्हारी रे सी० १
तुमे तो विदेहमां जई वस्या, हम भरतमें बेठे रे;
मनडुं चाहे इण घडी, जई किम पद भेटे रे सी० २
ईहां आरा है पांचमा, तिहां चौथा आरा रे
उहां तुम सुख भोगवो, हमकुं न संभारो रे. सी० ३
जंघा विद्याचारिणी कोई लब्धि न दीसे रे
जई प्रभु पद भेटीये, मनडुं घणुं हीसे रे सी० ४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बीज तणो जे चन्दलो, तेनी साथे हमारी रे
आय पहोंचेगी वंदना, सुर कहेगो संभारी रे सी० ५
नंदन श्री श्रेयांसको अंगज सत्यकीनो रे;
ऋक्ष्मणि राणीको नाहलो, दुजो वृषभ नगीनो रे, सी० ६
सुपनान्तर प्रभुजी मिल्या, भयो परमानंदो रे;
बुध जशवंतसागर तणो, जिनेन्द्र थुणिंदो रे. सी० ७

(४४)

(सिद्धारथना नंदन विनवुं—ओ देशी)

श्री सीमंधरस्वामी ! तुम तणा, चदण नमुं चित्त लाय;
अंजलि जोडी विनवुं अरिहंत ! तुम विण रहण न जाय. १
ऐ अवधारो हो जिनवर ! विनति, श्री सीमंधर स्वामी !
विरहनी वेदना वहेली निगमु, तृपति न पामुं नामि ए० २
जनम अनंता हो श्री जिन ! हुं भम्यो अवर अवर अवतार;
पुण्य प्रमाणे रे हमणां पामीयो, नरभव भरत मोझार ए० ३
महाविदेहे रे स्वामि ! तुम वसो, पांख नहीं मुज पास;
किण पेरे आवी रे पाप आलोईए, मनमां रहियो विमास. ए० ४
मलवा हैडु रे अरिहंत ! किम मिलुं शत्रु घणा मुज लार,
व्हार करजो हो तुमे केवरघणो, अवर नहि रे आधार. ए० ५
अंब विना जिम कोयल नवि रमे, मधुकर मालती सेव,
रति नवि पामे हो तिम मन माहरुं तुम दरिशण विण देव. ए० ६
स्वामि ! तुमारी हो करीशुं स्थापना, जाणे श्री जिनराय,
गुण गावतां हो भावशुं भावना, निश्चलता मन लाय. ए० ७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(४५)

(जगजीवन जग वालहो–ए देशी)

सीमंधर जिन सेववा, मन धरे वहु उत्साह, लाल रे०
आडा डुंगर वन घणा, नदीओना प्रवाह. लाल रे० सी०
इह क्षेत्र एहवो कोण छे जे जाणे मननी वात, लाल रे०
कही उत्तर मन रीझवे, सुप्रसन्न हुए मन गति लाल रे० सी०
मन तो तुज चरणे भमे, भामणे भूख ना जाय, लाल रे०
मुज मन वात तो तुं लहे, किम कहुं तुज समजाय. लाल रे० सी०
ज्ञान अनंत बल ताहरे, सेवे सुरासुर कोड, लाल रे०
आज्ञा द्यो अेक देवने, पहोंचाडे, मन कोड, लाल रे० सी०
धन्य देश जिहां तुमे रह्या, धन्य तुम पास, लाल रे०
धन्य नगरी पुंडरीगिणी, जिहां प्रभु छे तुम वास. लाल रे० सी०
अरज मुज अवणारिये, महेर करी महाराज. लाल रे०
करीये नयन मेलावडो, अंतरजामी आज. लाल रे० सी०
अळगा तोही ढुंकडा, वसोया मनह मोझार; लाल रे०
लब्धिविजय सोमंधरा, मुज उतारो भवपार. लाल रे० सी०

(४६)

(राग : मारुणी)

स्वामि तारने रे मुज परम दयाल, सीमंधर भगवंत रे;
शरणागत सेवक जन वच्छल, श्री जिनवर जयवंत रे. १
पुक्लावती विजय जिन विचरे, महाविदेह मोझार रे;
हुं अति दूर थकां प्रभु तोरी, सेवा करुं किम सार रे. २
है है दैव किम न दीधी, पांखलडी मुज दोय रे;
जिम हुं जईने जगगुरु वादु, हियडलुं हरखित होय रे. ३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समवसरण सिंहासण बेसी, स्वामि करे वखाणरे
धन छे सुरनर किन्नर विद्याधर, वाणी सुणे सुविहाण रे. ४
धन ते गाम नयर पुर मंदिर, जिहां विहरे जिनराय रे;
विहरमान 'सीमंधर' स्वामी, सुरनर सेवे पाय रे. ५
तुम दर्शन विण चतुर्गति मांही, हुं भम्यो अनंती वार रे,
हवे प्रभु शरणे तोरे आव्यो, आवा रे गमन निवार रे. ६
सेवकनी प्रभु सार करीने आपो वंछित काज रे,
समयसुन्दर कर जोडी विनवे; आपो अविचल राज रे ७

(४७)

(ढाळ : वीर वखाणी राणी चेलणाजी.)

स्वामि सीमंधर सांभळोजी, मारी एक अरदास,
हीयडुं मिलण उमाहीयुंजी, प्रीति तणे पडयुं पास. १
नाणे भय मन कहेनोजी, राख्यो न रहे अनीत,
आवे जावे हेजाळुओजी, राजचरणे मुज चित्त, २
एक वालेसर तुं घणीजी, शीष धरुं तुज आण.
अवसरसु मिलण मुज आखडीजी, तुहिं ज देव प्रमाण. ३
भ्रम भूले थके मे घणांजी, जाणी शिव सुख तणी खाण;
सेव्या हशे सुर सामटाजी, कु न खमी त्रिजग दिवाण. ४
मारा अवगुण जोवशोजी, तो न सरे कोई काज,
अवगुण गुण करी जाणशोजी, तो हिज रहेशे मुज लाज. ५
मारी प्रीति लागी खरीजी, जेहवी चोळ मजीठ;
रंग बिदरंग न हुवे कदा, अधिकाधिक सदा दीठ. ५
राज पुखलावती हुं इहांछ, भेकिये किण परे पाय;
कहे जिन हर्ष मा विसारशोजी, एहिज लख पसाय. ७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(४८)

(राग–कलहरो, देशी पोपट चाल्यो रे.)

मुज हीयडुं हेजाळुंजी, भास्वर गणे न भीति;
आवे जावे रे एकलुंजी, करवा तुमशुं प्रीति. १

सीमंधर करजो मया, धरजो अविहड नेह;
अमचा अवगुण जोइने, रखे दिखावो छेह. २

तुमचा भगतजन घणा, अण हुंता अेक कोडि;
अमची मीटन कोई चटयोजी, साहिव तुमची जोडी. ३

दक्षिण भरतमें हुं रहुं, पुक्खलावती जिनराय;
कोईक दिन मलवा तणो, दीसे ए छे अन्तराय. ४

दीधी दैव न पांखडी, आवुं केम हजूर;
पण जाणजो वंदना, प्रह उगमते सूर. ५

कागळ लखवो रे कारमो. कीजइ महेर अपार
अमची एह ज विनति, आवागमन निवार. ६

परम दयाल कृपाल छो, करजो अवसर सार;
श्री जिनराज इश्युं कहेजी, मत विसार. ७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(४८)

चित्तडुं संदेशो मोकले, म्हारा वहालाजी रे,
मनडा साथे रे नेह, जईने कहेजो म्हारा स्वामिजी रे;
सीमंधर नित्य हुं जपुं, म्हारा वहालाजो रे.
जेम बपैयो रे मेह, जईने कहेजो म्हारा स्वामिजी रे. १

दूर देशांतर जई रह्या, म०
माया लगाडीने हेव, जईने कहेजो म्हारा०
पांखडी जो मारे होवे म्हारा
ऊडी आवुं ततखेव, जईने कहेजो म्हारा० २

प्रीत तो अधिकी होई गई, म०
हवे केम छांडीरे जाय; जईने कहेजो म्हारा०
उत्तम जनशुं प्रीतडी, म०
कदीय न ओछी थाय, जईने कहेजो म्हारा० ३

निःस्नेही तुम सरिखा, म०
में तो कोई न दीठ, जईने कहेजो म्हारा०
हइडामां चाहे नहि म०
मोढे बोले मीठ, जईने कहेजो म्हारा० ४

आशा तो तुम उपरे म०
मेरु समान में कीध, जईने कहेजो म्हारा०
जो क्षण एक कृपा करो, म०
तो सहु होवे रे सिद्ध, जईने कहेजो म्हारा० ५

जे अक्षय सुख शाश्वतनुं, म०
जे सहु चाहे रे लोक, जईने कहेजो म्हारा०
जो नहि आपो माग्युं थकुं, म०
जाण पणुं सहु फोक, जईने कहेजो म्हारा० ६

घणुं शुं कहिअे जाणने म०
देजो स्वामी रे सेव, जईने कहेजो म्हारा०
कवित ए रूप पसायथी, म०
ऋद्धि कहे नित्य मेव, जईने कहेजो म्हारा० ७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(४९)

(राग : करेलडा धड देरे)

किम मळीये किम परिचिये, किम रहीये तुम पास;
किम स्तविये स्तवना करी, तेहथी चित्त उदास.
सीमंधर ! प्रीतडी रे, करिये कौन उपाय ?
भाखो कोई रीतडी रे १

ते देशे जावुं नहीं रे, मळवा श्यो संबंध ?
सौ नजरे मळ्युं नहींजी, शी परिचय प्रतिसंध ? २

प्रथम प्रकृतिने अभिलषी, पाछळ करीये वात;
ए अनुक्रम जाण्या विना, परिचयनो प्रतिघात ३

परिचय विण कोय सदा, न दिये बेसण पास;
पासे ही बेसण न दे, रहेवानी शी आश ? ४

जो रहिये पासे सदा, तो अवसर अरदास;
करीये पण मोटा कदि, न करे नपट निराश. ५

को काले तुज चरणनी, सेवा करशुं आम !
इण काले मुज वंदना, प्रीछजो परिणाम. ६

दूर थकां कमठी परे, महेर नजर महाराज !
ज्ञानसारथी राखजो, सरशे तो सहु काज. ७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(५०)

पुंडरीकिणी नगरी वखाणिये, सखो,
श्रेयांस घरे जायो पुत्र रतन्न के चालो रे.
आपण देखवा जइये, नयणे कुमार निहाळिये.
सखी, कीजे हे ऐहना कोड जतन्न के,
साहेलीओ, सुजाण मोरो जीवन प्राण,
सखी कीजे एहनी मस्तके,
हे सखी धरिये आण के. चालो रे० १

घर घर थयां वधामणां,
वारु वाजे सखी ! ढोल निशान के, चालो रे;
धवलमंगल गाये गोरडी.
जोवा आव्या हो सखी, सुर नर राणके; चालो० २

यौवन प्राप्त प्रभु थया,
सखी वाला हो सीमंधरकुमार
राय महोच्छव बहु करे,
परणाव्यां हे सखी रुकमणि नार के चालो० ३

राज्य लीला सुख भोगवी,
प्रभु लीधो हे सखी संयम भार के चालो रे,
समिति गुप्ति सुधी धरे,
गामागर हो सखी करे विहार के चालो० ४

करम खपावी घातीया
प्रभु पाम्या हे सखी केवळ नाण के चालो रे;
समवसरण देवे रच्युं,
तिहां बेसी हे सखि करे वखाण के० ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इन्द्र उतारे आरति
इन्द्राणी हे सखी गावे गीत के चालो रे;
सुरनर ले सहु भामणा,
ज्योते जित्यो हे सखी आदित्य के चालो० ६

सुन्दर सूरत जोवतां,
भव भवना हे सखी जाये पाप के चालो०
ए जिन हर्ष वधारणो,
टाळे सघळा हे सखी ताप संताप के चालो० ७

(५१)

श्री सीमन्धरस्वामीशुं जी, श्री श्रेयांसकुमार म्हारा प्रभुजी
चाकरी चाहुं तहारा चरणनीजी. १

स्वजन कुटुंब मळ्युं कारमुंजी, कारमो सहु संसार मारा प्रभुजी. २

धन धन त्यांना लोकनेजी, नित ऊठी करे रे प्रणाम. ३

कागळ लखवा कारमाजी, अरज करे छे मारी आंख. ४

एक वार प्रभु समवसरेजी, करुं मारा दिल केरी वात. ५

चित्तमांहे जाणे संयम लहुंजी करुं मारा प्रभु साथे गोठ. ६

वाचक 'जस' इम विनवेजी, नमुं कर जोड म्हारा प्रभुजी. ७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(५२)

(राग–नंद सलुणा मने नंदना रे लो)

सीमंधर सुणो विनंती रे लो; कांई आज लगे दिलमां हती रे लो
मनभ्रमरो अति लोभीयो रे लो, कोई प्रभु सेवाथी थोभीयो रे ला
॥ १ ॥ श्री

तुं त्रिभुवननो मोड छे रे लो, कांई मुख देखण मन कोड छे रे लो
दैवे न दीधो पांखडो रे लो, कांई दरिसण चाहे आंखडी रे लो
॥ २ ॥ श्री

मन जाणे उडी मळुं रे लो, कांई साहिब सेवामां भळुं रे लो,
हेजे हळी तजशुं हस्यो रे लो, कांई तरण तारण हइडे वस्यो रे लो
॥ ३ ॥ श्री

मीठुं दरिसण ताहरुं रे लो, कांइ चित्तडुं चोरायुं तिणे माहरुं रे लो
नेह निवारण जे छे रे लो, कांइ बांय ग्रह्यानो लाज छे रे लो
॥ ४ ॥ श्री

रंग लाग्यो प्रभुशुं तिसो रे लो, कांइ चोलमजीठनो छे जिसो रे लो
विसार्यो किम विसरे रे लो, रातदिवस भरी सांभळे रे लो
॥ ५ ॥ श्री

नवल सनेही दुःख कंदना रे लो, कांई जिनजी जगदानंदना रे लो
अवगुण त्यजी गुण लेखवा रे लो, कांई सेवक दिल भरी देखवा रे लो
॥ ६ ॥ श्री

तुं प्रभु जोवन जोड छे रे लो कांई सेवामां शी खोड छे रे लो
कांतिविजय जिनजी मळ्या रे लो; कांइ म्हों मांग्या पाशा ढळ्या रे लो
॥ ७ ॥ श्री

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(५३)

(सिद्धारथना रे नंदन विनवुं–ए देशी)

विनति मारी रे सुणजो साहिबा, सीमंधर जिनराज;
त्रिभुवन तारक ! अरज उरे धरो, देजो दरीसण राज. वि० १

आप वस्या जई क्षेत्र विदेहमां, हुं रहुं भरत मोझार;
ए मेळो किम थाये जगधणी, ए मुज सबल विचार वि० २

वचमां वन द्रह पर्वत अति घणा, वळी नदीओना रे घाट;
किण विध भेटुं रे आवो तुम कने, अति विषमीए रे वाट वि० ३

किहां मुज दाहिण भरतक्षेत्र रह्युं, किहां पुक्खलवइ राज;
मनमां अळजो रे मळवानो घणो भवजळ तरण जहाज. वि० ४

निशदिन अवलंबत मुज ताहरुं, तु मुज हृदय मोझार;
भवदुःख भंजन तुं ही निरंजनो, करुणा रस भंडार. वि० ५

मनवंछित सुखसंपद पूरजो, चूरजो कर्मनी राश;
नित्य नित्य वंदन हुं भावे करुं, एही ज छे अरदास. वि० ६

तात श्रेयांस नरेसर जगतिलो, सत्यकी राणीनो जात;
सीमंधर जिन विचरे महीतळे, त्रण भुवनमां विख्यात वि० ७

भवो भव सेवा रे तुम पदकमलनी, देजो दीन दयाळ;
बे कर जोडी रे उदयरतन वंदे नेक नजरथी निहाळ. वि० ८

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(५४)

(वंदना वंदना वंदना रे जिनराजकुं सदा मेरी वंदना–ओ देशी)

ध्यानमां ध्यानमां ध्यानमां रे, जिनराज लीया में ध्यानमां;
अब कहेशुं वात ते कानमां रे, जिम प्रभु समजावीशुं सानमां रे जि०
अमे रमशुं अंतरज्ञानमां रे, जिनराज लीया में ध्यानमां;
गुण अनंत अनंत बिराजे, सीमंधर भगवानमां रे जि०
दोष अढार गये प्रभु तुमचे, वस्यो सुख निरवाणमां रे. जि० १
देव ! देव जग कोई कहावे माचे विषय विकारमां रे; जि०
परखी नाणुं जे जग लेशे, ते सुखियो संसारमां रे जि० २
वनिता वशे ईश्वर पण नाच्यो, रौद्र निधन वेच्यानमां रे जि०
वेदचार पण चिहु मुख नाडे, जड गुण सरजा सानमां रे जि० ३
सीता विण ग्रही वनतरु भंज्या, रूप कपि हनुमानमां रे; जि०
कंसारि पमुहा जग देवा, जे फरीया तोफानमां रे. जि० ४
ते तो रागी तुं वीतरागी, अंतर लहुल विच्यानमां रे; जि०
रत्नोपल खजुओ खग अंतर, अज्ञानी विज्ञानमां रे. जि० ५
उत्तम थानक हीरो पावे, वैरागकी खानमां रे; जि०
शरण हुओ अब मुज बळीयाको, कर्म कठीन गत रानमां रे. जि० ६
दूर रह्या पण अनुभव मिषे, मनमंदिर मेलानमां रे; जि०
तुम संगे शिवपद लहुं कंचन, त्रांबु रस वेधानमां रे. जि० ७
मोह सुभट दुरदंत हठीकुं अंतरबल शुभ ध्यानमां रे; जि०
वीरविजय कहे साहिब सानिध्ये, जित लीयो मेदानमां रे. जि० ८

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(५५)

श्री सीमंधर जिनराज सुणो मुज तातजी,
अरज करुं करजोडी मानो मुज तातजी,
भमियो हुं काज अनंत निगोदमां नाथजी,
पृथ्वी पाणी तेउ, वाऊ, बधु साधजी १

वनस्पति साधारण प्रत्येक जाणीए,
काळ गुमायो तिहां एणे बहु प्राणीए
बी, ति, चउरिन्द्रिय असन्नित अपजत्तापणुं,
तिरिय अनारज देश ए सरीखो गणुं. २

दक्षिण विण जिनदेव भमीयो हुं भव घणा
छेदन भेदन दुःख जनी तिहां मणा,
हजीय न चेतो चित्त प्रभु आगम सुणी,
केहणी करणी फेर जीणंदजी मुज तणी ३

हिंसा तणो जो पोष बहु रोषे कर्यो,
मृषावाद अदत्त बहुविध ओदर्यो,
मैथुन परिग्रह संगे सदा हुं राचीयो,
क्रोध मान माया लोभ तणे वशे नाचीयो. ४

रागद्वेषनी भीड थकी नवि ओशर्यो,
कलह मिथ्याआळ थकी नवि ओशर्यो.
पिसुण रतिमां मुज मन वस्यो,
परपरिवार विशाळ भुजंगे ते डस्यो. ५

माया मोष जे दोष जे नडे नित आकरो
चालु मिथ्या चाले तेणे नहीं पाधरो,
लोक रंजनने काजे जे आगम वांचुं भणुं,
स्यादवाद सुधाए न जाण्युं निज पणुं. ६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जे लोकोत्तर धर्म करुं लौकिकथी,
दुर्लभ निज गुण भोग प्रभु तहकीकथी
जाणो सघळा लोक अलोक तणी छती,
तीणे वीतक वात कहींशुं जिनपति. ७
'महाविदेह' मझार के 'श्री सोमंधर' प्रभु,
विचरे दीनदयारे के जगतारक विभु,
कहे वसंत करजोडी हृदय स्थिर थापजो,
रत्नत्रयी गुण वृंद 'आनंद' मुज आपजो. ८

(५६)

सीमंधरस्वामिनी ओळु घणी आवे हो, राय जयवंता बावरी
ओळु घणी आवे हो राय, ओळु रीतो महाविदेह क्षेत्रमांजी
साहिबा ओळु पुंडरीकिणीमांहे मोरा राय. १
तुमे तो वसीया महाविदेहक्षेत्रमांजी साहिबा,
हुं तो वसीयो भरतक्षेत्रमां मोरा राय. सी० २
कागळीया किण साथे मोकलुं साहिबा,
वातलडी न चाले विशेष हो मोरा राय. सी० ३
पांख होवे तो ऊडी मिलुं साहिबा,
दाखुं दाखुं हीडा केरी वातो मोरा राय. सी० ४
राणी रुकमणीजीना नाहला साहिबा,
थें तो मोरा जीवनना आधाररे मोरा राय. सी० ५
शुं शुं कहीने दाखवुंजी साहिबा,
तुमे तो सकळना जाण मोरा राय. सी० ६
जिम जिम तुम् गुण सांभलुं साहिबा,
तिम तिम ध्यावुं दिन ने रात मोरा राय. सी० ७
मुजरो मारो मानजोजी, साहिबा
सत्यकी नंदन देवो मोरा राय. सी० ८
मानविजय कवि ऐम भणे साहिबा,
देजो देजो तुम पाय सेव मोरा राय. सी० ९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(५७)

(देशी–वासुपूज्यविजयविलासो चंपाना वासी)

श्री सीमंधरस्वामि, मुक्तिगामी दीठे परमानंद
प्रभु सुमति आपो, कुमति कापो, टाळो भवभयफंद
कर्म अरिगण दूर करीने तोडो भवतरु कंदरे. श्री सी० १

चोत्रीश अतिशय राजतारे, पांत्रीशवाणी रसाळ,
आठ प्रतिहार्य दीपतां रे, बेठी छे पर्षदाबार रे. श्री सी० २

एक वार दरिसण दीजीये रे, दासनी सुणी अरदास,
गुण अवगुण न लेखवे रे गिरुआनो आधार रे. श्री सी० ३

महागोप महामाहण करीने, निर्यामक सार्थवाह,
दोष अढार दूर करीने, भवजल तारण नाव रे. श्री सी० ४

अगणित शंकाए हुं भर्यो रे, कोण करे तस दूर,
ज्ञानी तुमे दूरे वस्या रे, हुं पडचो भवकूप रे. श्री सी० ५

जो होवत मुज पांखडी तो, आवत आप हजूर,
ए लब्धि मुज सांपडे तो, न रहुं तुम थकी दूर रे. श्री सी० ६

शासन भक्त जे सुरिवरा रे विनवुं शीर्ष नमाय,
श्री सीमंधरस्वामिना रे, चरण कमल भेटाय रे, श्री सी०७

धन्य महाविदेहना जीवने रे, जे सदा रहे तुम पास,
हुं निर्भागी भरते रह्यो रे, शां कीधां में पाप रे ? श्री सी ८

अरिहंत पद सेव्या थकी रे, देवपालादिक सिद्ध,
हुं पण मांगु एटलुं रे, सौभाग्य पद समऋद्ध रे. श्री सी० ९

ॐ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(५८)

(स्वामिसीमंधरा विनति)

स्वामिसीमंधर पय नमुं, गुण स्तवुं हुं कर जोडी रे;
आतम भाव उल्लासथी, पामवा वांछित कोडी रे. स्वामि० १

दक्षिण भरतमां हुं वसुं, प्रभुजी विदेह मोझार रे,
दूर रह्या पण जाणजो, वंदना मुज वारोवार रे. स्वामि० २

कमल रहे जलमां सदा, सूरज रहे आकाश रे.
अंतर छे वचमां घणुं, तो पण ते तस पास रे. स्वामि० ३

पोतावट केम जाणीये, जो न करो प्रभु सार रे,
अम मनमांहि तुमे वस्या, तरण तारण किरतार रे; स्वामि० ४

आश करे कोई आपणी, मूकीये केम निराश रे;
सेवक जाणी पोतातणो, दीजीये हर्ष उल्लास रे. स्वामि० ५

गिरुआ होय गुणे भर्या, तस मन होय उदार रे;
सेवक अवगुण नवि जुए, दीये मनवांछित सार रे स्वामि० ६

ते कारण जिन अम भणी, आपीये केवळरत्न रे,
पामी बहु सुखीया थइयुं, करशुं विशेष यत्न रे स्वामि ७

पंडितमांहि शिरोमणि, जिनविजय गुरु सार रे,
अमरविजय स्तवे भावथी, जिनवर जग आधार रे. स्वामि० ८

अढारसें चौद संवत्सरे, भाद्रव वदि मनोहार रे;
पांचम दिन प्रभु, मैं स्तव्या, सीमंधर हितकार रे. स्वामि० ९

ॐ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(५९)

श्री सीमंधर साहिबा रे, हुं केम आवुं तुम पास हो मुणिंद;
दूर वच्चे अंतर घणुं रे, मुने मळवानी घणी होंश हो जिणिंद
श्री सीमंधर सा० १

हुं तो भरतने छेडले रे, प्रभुजी कांई विदेह मोझार हो मुणिंद;
डुंगर वच्चे दरिया घणा रे, कांई कोश तो कांई हजार हो जिणंद;
श्री सीमंधर सा० २

प्रभु देता हशे देशना रे, कांई सांभळे तिहांना लोक हो मुणिंद;
धन्य ते गाम नयरीपुरी रे, जिहां वसे छे पुण्यवन्त लोक हो जिणिंद
श्री सीमंधर सा० ३

धन्य ते श्रावक श्राविका रे, जे निरखे तुम मुखचंद हो मुणिंद;
पण अे मनोरथ अम तणो रे, कदी फळशे भाग्य अमंदहो जिणिंद
श्री सीमंधर सा० ४

वर्तारो वरती जुओ रे, कांई जोशीए मांड्या लगन हो मुणिंद;
क्यारे सीमंधर भेटशुं रे, मुने लागी एह लगन हो जिणिंद.
श्री सीमंधर सा० ५

पण कोई जोशी नहि एहवो रे, जे भांजे मनडानी भ्रांत हो मुणिंद;
पण अनुभव मित्र कृपा करे रे, तव मिलवो तुम एकांत होजिणिंद.
श्री सीमंधर सा० ६

वीतराग भावे सही रे. तमे वर्तो छो जगन्नाथ हो मुणिंद;
पण में जाण्युं तुम वेणथी रे, हुं थयो स्वामि ! सनाथ हो जिणिंद.
श्री सीमंधर सा० ७

श्री पुष्कलावती विजये जयोरे, कांई नयरी पुंडरीगिणी नाम हो जिणिंद;
सत्यकी नंदन वंदना रे, कांई आधारो, गुणधाम हो जिणिंद;
श्री सीमंधर सा० ८

श्री श्रेयांस नृप कुल चंदलो रे कांई ऋक्ष्मणि राणीना कंत हो मुणिंद;
वाचक रामविजय कहे रे, तुमे होजो मुज चित्तवंत हो जिणिंद.
श्री सीमंधर सा० ९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(६०)

मनडुं ते माहरुं मोकले मारा वहालाजी;
शशहर साथे संदेश जइने कहेजो मारा वहालाजी;
भरतना भक्तने तारवा मारा वहालाजी,
एक वार आवो आ देश, जईने कहेजो मारा वहालाजी. १

प्रभुजी वसो पुष्कलावती मारा वहालाजी
महाविदेह क्षेत्र मोझार जईने कहेजो मारा वहालाजी:
पुरी राजे पुंडरीगिणी मारा वहालाजी,
जिहां प्रभुनो अवतार, जईने कहेजो मारा वहालाजी. २

श्री सीमंधरसाहिबा मारा वहालाजी,
विचरंता वीतराग जईने कहेजो मारा वहालाजी;
पडिबोहे बहु प्राणिने मारा वहालाजी,
तेहनो पामे कुण ताग ? जईने कहेजो मारा वहालाजी. ३

मन जाणे उडी मळुं मारा वहालाजी,
पण पोते नहीं पांख जईने कहेजो मारा वहालाजी;
भगवंत तुम जोवा भणी मारा वहालाजी,
अलजो धरे छे बेउ आंख, जईने कहेजो मारा वहालाजी. ४

दुर्गम मोटा डुंगरा मारा वहालाजी,
नदी नाळानो नहि पार जईने कहेजो मारा वहालाजी
घाटीनी आंटी घणी मारा वहालाजी,
अटवी पंथ अपार जईने कहेजो म्हारा व्हालाजी. ५

कोडी सोनैये कासीदुं मारा वहालाजी,
करनारो नहि कोई जईने कहेजो मारा वहालाजी;
कागळियो केम मोकलुं ? मारा वहालाजी,
होंश तो नित्य नवली होय जईने कहेजो मारा वहालाजी ६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लखुं जें जे लेखमां मारा वहालाजी
लाख गमे अभिलाष जईने कहेजो मारा वहालाजी;
तुमे भेजामां तेह लहो मारा वहालाजी,
मुज मन पूरे छे सांख, जईने कहेजो मारा वहालाजी. ७

लोकालोक स्वरूपना मारा वहालाजी,
जगमां तुमे छो जाण, जइने कहेजो मारा वहालाजी,
जाण आगळ शुं जणावीए? म्हारा वहालाजी,
आखर अमे अजाण जईने कहेजो मारा वहालाजी. ८

वाचक उदयनी विनति मारा वहालाजी,
शशहर कहेजो सन्देश, जईने कहेजो मारा वहालाजी
मानी लेजो मारी विनति मारा वहालाजी,
वसति दूर विदेश, जईने कहेजो मारा वहालाजी. ९

(६१)

श्री सीमंधरस्वामि विनति सांभळोः
भरतक्षेत्रमां धर्मवृक्ष छेदाय जोः
केवळज्ञानी विरहे जिननी वाणीमां
संशय पडतां मत मतान्तर थाय जो श्री सीमंधर० १

निन्हव प्रगट्या हठ कदाग्रह जोरथी
करी कुयुक्ति थाप्या निज निज पक्ष जो,
अल्प बुद्धिथी निर्णय को न करी शके,
निरपक्षी वीरला कोई होवे दक्ष जो. श्री सीमंधर० २

केईक मतिमां आवे तेवुं मानता,
पंचांगीनो करतां केइक लोप जो,
दृष्टिरागमां खूंच्या केईक बापडा
पंच विषयनो व्याप्यो छे महाकोप जो. श्री सीमंधर० ३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आभिनिवेशिक जोरे जूठुं बोलता,
थापे मोहे व्याप्या निज निज पंथ जो,
संघ चतुर्विध मांहि भेद घणा पडया.
उत्थापे केई अधुना नहि निर्ग्रन्थ जो. श्री सीमंधर० ४

केईक क्रियावादी जड जेवा थया,
केईक राखे अध्यात्मिनो डोळ जो;
ग्रहे एकान्ते ज्ञान क्रियाना पक्षने,
पाखंडे चलवे कोई मोटी पोल जो. श्री सीमंधर० ५

भद्रबाहुस्वामी आदि श्रुत केवळी,
परंपराथी आवे जे श्रुतज्ञान जो,
परंपरा उत्थापक लोपे तेहने,
करीने विरुद्ध भाषण विषनुं पान जो, श्री सीमंधर० ६

इत्यादिक जाणो छो जिनजी ज्ञानथी,
करजो स्वामी दुःषम काळे सहाय जो;
आप भक्ति शक्ति स्फूर्ति मतिनी थतां,
तरतम योगे शिव मारग परखाय जो, श्री सीमंधर० ७

सहस्र एकवीश पर्यन्त वीरना शासने,
संघ चतुर्विध अविच्छिन्न वर्ताय जो;
युगप्रधानो थाशे आत्मार्थी घणा,
कारण योगे कार्यसिद्धि सुहाय जो. श्री सीमंधर० ८

वाचक यशोविजयजी वचने चालवुं,
गुरु परंपरा धर्मक्रिया आचार जो;
अनेकान्त मारग श्रद्धा साची ग्रही;
बुद्धिसागर आशा शिवसुख सार जो. श्री सीमंधर० ९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(६२)

सीमन्धर सीमन्धर स्वामि, एक अरज अवधारो;
एह संसार समुद्र मिथ्याजल, तेहथी पार उतारो. श्री० १

निरधनीयो धन संपत्ति जेम, चातक जिम जलधारो;
तिम दरिसण जिनराज तणानी; मुज अभिलाष अपारो. श्री० २

क्षेत्रविदेहे आप विराजो, वसणो इहां अमारो;
लब्धि गगन चारिणी नहि विद्या, किम होय दर्शन थारो. श्री० ३

प्रह उठी चरण नमें नित, धन तेहनो अवतारो,
ते दिन हमारो धन स्वामी, भेटुं चरण तुमारो, श्री० ४

सुर नर किन्नर यक्ष सर्व ही, वंदे चरण तुमारो;
श्रवणे वाक्य सुणे स्वामिना, तेहनो होय निस्तारो श्री० ५

जोजन एक विस्तरे वाणी, सहु जीवा सुखकारो;
अतिशय चोत्रीश गिरा पैतीशो, मुख दिसे दिस चारो श्री० ६

धनुष पंच शत ऊंचो सुणीये, देह तणो विस्तारो;
लख चोराशी पूरव आयु, श्री जिनराज तुमारो श्री० ७

भवो भव चरण तुमारी सेवा, एह अवज अवधारो,
अल्प बुद्धि मारी स्वामि गुण, कब लग कहुं पारो श्री० ८

संवत अढारे वर्ष इक्यासी, श्रावण मास मझारो,
कहे शिवलाल भाव शुद्ध वंदो, एह जिन तारणहारो. श्री० ९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(६३)

(हरिया मन लागउ–ए ढाळ)

विजयविदेह परगणो, पुखलावती इण नाम रे, साहिब सुण मोरा;
धन नयरी पुंडरीकिणी; जिहां सीमंधरस्वामि रे, साहिबा० १

मनडो तरसे माहरो, देखण तुमचा पाय रे, सा०
पंख नहि विद्या नहि, क्युं करी आयो जाय रे, सा० २

जो किम ही हाजर होवुं, प्रश्न करुं कर जोडी रे, सा०
संशय सघळा मोटी के, पूरुं निज मन कोड रे, सा० ३

... ...

पूरो आगमवल नहि रे, किम किजे महाराज रे, सा० ४

गुण अवगुण जाणे नहि, मन मान्यानी वात रे, सा०
किण के लेखई दिन भला, किण के लेखई रात रे, सा० ५

आपणो मत थापे सहु, कुण साचो कुण जूठ रे, सा०
कब साचो जिण राउ मे, साख भरो पर पूठ रे, सा० ६

सहहणा प्रभु उपरे, इतनो छे आधार रे, सा०
ध्यान न छोडुं ताहरो, जाणजो निरधार रे, सा० ७

प्रेमतणी वार्ता तणां, कहेतां नावै पार रे, सा०
पिण तुम सरिखो माहरे, अवर न इण संसार रे, सा० ८

मुज हुंती पळने सदा, तुम्हचो आण अभंग रे, सा०
बोधि बीज दायक हुजो, पभणे श्रीं जिनरंग रे, सा० ९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(६५)

(सिद्धचक्रपद वंदो–ओ देशी)

श्री सीमन्धर जिनवर स्वामी, विनतडी अवधारो,
शुद्ध धर्म प्रगटयो जे तुम्हचो; प्रगटो तेह अम्हारो रे.
स्वामि विनवीये मनरंगे. १

जे पारिणामिक धर्म तुम्हारो, तेहवो अहमचो धर्म,
श्रद्धाभासन रमण वियोगे, वळग्यो विभाव अधर्मरे ;
स्वामि विनवीये मनरंगे. २

वस्तु स्वभाव स्वजाति तेहनो, मूल अभाव न थाय,
परविभाव अनुगत परिणतिथी, कर्मे ते अवराय रे;
स्वामि विनवीये मनरंगे. ३

जे विभाव ते पण नैमित्तिक, संतति भाव अनादि,
परनिमित्त ते विषय संगादिक, ते संयोगे सादि रे;
स्वामि विनवीये मनरंगे. ४

अशुद्ध निमित्ते ए संसरता, अत्ता कत्ता परनो,
शुद्ध निमित्त रमे जब चिद्घन कर्ता भोक्ता घरनो रे;
स्वामि विनवीये मनरंगे. ५

जेहना धर्म अनंता प्रगटया, जे निजपरिणति वरियो,
परमातम जिनदेव अमोही, ज्ञानदिक गुण दरियो रे;
स्वामि विनवीये मनरंगे ६

अवलंबन उपदेशक रीते श्री सीमंधर देव,
भजीये शुद्ध निमित्त अनोपम तजीये भव भय रे;
स्वामि विनवीये मनरंगे ७

शुद्ध देव अवलंबन करतां परिहरिये परभाव,
आतम धर्म रमण अनुभवतां, प्रगटे आतम भाव रे;
स्वामि विनवीये मनरंगे. ८

आतमगुण निर्मळ निपजतां, ध्यान समाधि स्वभावे,
पूर्णानंद सिद्धता साधी, देवचन्द्र पद पावे रे;
स्वामि विनवीये मनरंगे ९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(६५)

धन धन क्षेत्र महाविदेहजी, धन पुंडरीकिणी गाम;
धन्य तिहांना मानवीजी, नित उठी करे रे प्रणाम.
सीमंधरस्वामि ! कहीयेंरे हुं महाविदेह आवीश ?
जयवंता जिनवर, कहीये रे हुं तमने वांदीश ? १

चांदलिया ! संदेशडोजी, कहेजो 'सीमंधर' स्वाम;
भरतक्षेत्रना मानवीजो नित्य उठी करें रे प्रणाम. २

समवसरण देवे रच्युंजी, चोसठ इन्द्र नरेश;
सोना तणे सिंहासन बेठा, चामर क्षेत्र धरेश. ३

इन्द्राणी काढे गंहुलीजी, मोतिना चोक पूरेश.
लळी लळी लीये लूंछणाजी, जिनवर दीये उपदेश. ४

एवे समय में सांभळ्युंजी, हवे करवा पच्चखाण;
पोथी ठवणी तिहां कनेजी, अमृत वाणी वखाण. ५
(बारे पर्षदा आगळेजो, अमृत वाणी वखाण.)

रायने व्हाला घोडलाजी, वेपारीने व्हाला छे दाम;
अमने व्हाला 'सीमन्धर स्वामी', जेम सीताने श्रीराम. ६

नहीं मांगुं प्रभु ! राजऋद्धिजी, नहीं मांगुं गरथभंडार;
हुं मांगु प्रभु ! एटलुंजी, तुम पासे अवतार. ७

दैवे न दीधी पांखडीजी, किम करी आवुं हजूर;
मुजरो म्हारो मानजोजी, प्रह उगमते सूर. ८

समयसुन्दरनी विनतिजी, मानजो वारंवार.
बे कर जोडी विनवुंजो, विनतडी अवधार. ९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(६६)

श्री सीमंधर मुज मन स्वामी,
तुमे साचा छो शिवपुर गामी,
के चन्दा तुमे जईने कहेजो. १

कहेजो के एक वार साहिबा तुमे आवो,
हांरे मिथ्यात्वने घणुं समजावो, के चन्दा० २

कहेजो मारा व्हालाने कहेजो सीमंधरस्वामिने
तुमे भरतक्षेत्र अहीं आवो, के चन्दा० ३

मनडुं ते मारुं तुम पासे छे,
सदा चरणे चित्त चाहुं, के चन्दा० ४

जिहां ते जिनजीना वृक्ष ज दिशे,
जिनना गुण गावाने मन हरखे, के चन्दा० ५

भरतक्षेत्रना जे भवि प्राणी,
जिननी वाणी सुण्यानी खाणी, के चन्दा० ६

महाविदेह क्षेत्रना जे भवि प्राणी,
नित्य सुणे छे तुमची वाणी, के चन्दा० ७

अनुभव अमृत भरीने लेज्यो,
चन्दा रती एक दर्शन देज्यो, के चन्दा० ८

जो जिननी वाणी क्षेत्र ज लइए,
तो चन्दा अमे तमने सेना कहीअे, के चन्दा० ९

तस पद पंकज जिनविजयना,
चन्दा नयने जावानी घणी होंश, के चन्दा० १०

वाचकजभ कीर्तिविजयना शिष्य,
निर्मळ बुद्धि जगीश, के चन्दा० ११

कहेजो मारा व्हालाने, कहेजो सीमंधरस्वामिने,
तुमे भरतक्षेत्रमां आवो, के चन्दा० १२

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(६६)

(प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए, जास सुगंधी रे काय–ए देशी)

गुणनिधि साहिब सेविये सीमंधर जिनराज;
सर्व सुपर्व अगर्व नमे, जस पयकजे शिववहु वरणने काज. १

जयवंती पुक्खलावती, विजये विजय करंत;
पुरी पुंडरीगिणीनाथ श्रेयांस नृपांगनां, सत्यकी उदर धरंत. २

कुंथु अरजिन अंतरे, सीमंधरजिन जात,
विद्या जणे विवेक पूरव दिशि तम रिपु, सुरगिरि उपर स्नात. ३

तनु शत पंच धनुष तणा, रमणीय रूप मणिकंत,
दक्षिण पयतणे जांघ वृषांक कनक छवि, कांति वीर्य अनंत. ४

सुव्रत नमि अंतर विचे, दीक्षा लीअे तजी भोग
आतम शुद्ध घाति समिध वन जवालियां, शुकल हुताशन योग. ५

अडहिय सहस सुलक्षणे, शोभित साहिब अंग;
करगत आमल विश्वने जाणे जीलतो ज्ञान जलाब्धि तरंग. ६

परषदा बारनी आगळे, देशना वरसंत शांत
दांत महांत प्रशांत केवलधणी, दश लाख केळवी संत. ७

शत एक कोडी मुनिवरा, चोराशी गणधरा;
उदय पेढाल जिनांतरमां शिव संपदा, वरशो तजीय संसार. ८

समय तणे अनुसारथी, लाधी मैं तुम भाळ;
तिणे दगतीत विण नेत्र विलक्ष उभय हुआ,
जिम सर भ्रष्ट मराळ. ९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राग द्वेष विगता तुम्हो, मुज रागांकित देह;
तुम शीतल तनु पश्य शीतल विधु जाणीये,
जिम अय पारस तेह. १०

शुभ घन दाता समपणे, गंध जलान्न दियंत;
तिम देजो शिवराज राजनगरे मळ्या, सीमंधर भगवंत. ११

मंद मति पण में थुण्या, बाळ पसारित हत्थ;
जलधिमान कहे शुभविजयजी आपजो, वीर कहे परमत्थ. १२

(६७)

क्षेत्र विदेह सोहामणो, विजय पुष्कलावती ठाम हो;
धन्य नगरी पुंडरीगिणी, जिहां सीमंधरस्वाम हो.
अवधारो० १

अवधारो जिन विनति, दरिसण दिजे जिनराज हो;
हर्ष पूरो म्हारा मन तणो, सारो जिन वंछित काज हो.
अवधारो० २

राय श्रेयांस धरे जनमीया, सत्यकी तणा मल्हार हो;
कुंथु अर वच्चे जनमीया, जीवन अभय दातार हो.
अवधारो० ३

रूपे इन्द्र हरावीया, वाधे वाधे बीज जिम चंद हो;
पूरव लाख त्यांसी लगे, भोगव्यो राज अमंद हो
अवधारो० ४

नमि मुनिसुव्रत आंतरे, मन धरो अतिहि वैराग हो;
राणी ऋक्ष्मणि जेणे तजी, प्रगट कर्यो शुभ मार्ग हो.
अवधारो० ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जप तप संजम बहु करी, पाम्या केवळनाण हो;
भविक जीव प्रतिबोधवा अभिनव ऊग्यो भाण हो.
अवधारो० ६

धन धन लोक ते देशना, तेहना पुण्य अपार हो;
सांभळे वाणी जे जिन तणी, जेहवी अमृत धार हो;
अवधारो० ७

वहालो मारो विदेहे जई रह्यो, हुं वसु भरत मोझार हो;
मन तणी वात केने कहुं, तुम समो कोण आधार हो.
अवधारो० ८

ईम मन थाय भला पंखीया, जाय मन वंछित देश हो;
बाहु ठामे होय पांखडी, हुं आवुं तिण देश हो.
अवधारो० ९

आडा डुंगर नदी घणी, आडा घणा खेत्रना वास हो;
किम मिले स्वामी सोहामणा, जे गुण तणा निवास हो.
अवधारो० १०

सेवक सामुं, जिन जोईए दूर वसंतडां वास हो;
मत जाणो जिन तुमे विसर्या, मन मारुं जिनजीनी पास हो.
अवधारो० ११

विनति अेह अवधारजो, जिम सरे सेवक काज हो;
दरिसण देजो मया करी, विनवे मुनि मेघराज हो.
अवधारो० १२

ॐ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(६८)

(साहिब अजित जिणंद जुहारिये–ए देशी)

साहिबा श्री सीमंधर साहिबा,
साहिबा तुमे प्रभु देवाधिदेव;
सन्मुख जुओने म्हारा साहिबा,
साहिब मन शुद्धे करुं तुम सेव.
एक वार मळोने म्हारा साहिबा–ए आंकणी० १
साहिबा सुखदुःख वातो म्हारा अतिघणी,
साहिबा कोण आगळ कहुं नाथ !
साहिबा केवळज्ञानी प्रभु जो मिले,
साहिबा तो थाउं हुं रे सनाथ. एक वार० २
साहिबा भरतक्षेत्रमां हुं अवतर्यो,
साहिबा ओछुं एटलुं पुण्य;
साहिबा ज्ञानी विरह पडयो आकरो
साहिबा ज्ञान रह्युं अति न्यून. एक वार० ३
साहिबा दश दृष्टांते दोहिलो,
साहिबा उत्तम कुल सोभाग;
साहिबा पाम्यो पण हारी गयो,
साहिबा जिम रत्ने ऊडाडयो काग. एक वार० ४
साहिबा षड्रस भोजन बहु कर्या,
साहिबा तृप्ति न पाम्यो लगार,
साहिबा हुं रे अनादिनी भूलमां
साहिबा रझळयो घणो संसार. एक वार० ५
साहिबा स्वजन कुटुंब मळयां घणां,
साहिबा तेहथी दुःखे दुःखी थाय,
साहिबा जीव अेकने कर्म जुजुआ,
साहिबा तेहने दुर्गति जाय. एक वार० ६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साहिबा धन मेळववा हुं धसमस्यो,
साहिबा तृष्णानो नाव्यो पार.
साहिबा लोभे लटपट बहु करी,
साहिबा न जोयो पाप व्यापार. एक वार० ७

साहिबा जिम शुद्धाशुद्ध वस्तु छे;
साहिबा रवि करे तेह प्रकाश.
साहिबा तिम्ही ज ज्ञानी मळ्ये थके,
ते तो आपे रे समकित वास. एक वार० ८

साहिबा मेघ वरसे छे वाटमां,
साहिबा वरसे छे गामोगाम.
साहिबा ठाम कुठाम जुए नहीं,
साहिबा एहवा म्होटानां काम. एक वार० ९

साहिबा हुं वस्यो भरतने छेडले,
साहिबा तुमे वस्या महाविदेह मोझार;
साहिबा दूर रही करुं वंदना,
साहिबा भवसमुद्र उतारो पार. एक वार० १०

साहिबा तुम पास देव घणा वसे,
साहिबा मोकलजो एक महाराज !
साहिबा मुखनो संदेशो सांभळो,
साहिबा तो सहेजे सरे मुज काज. एक वार० ११

साहिबा हुं तुम पगनी मोजडी.
साहिबा हुं तुम दासनो दास.
साहिबा ज्ञानविमलसूरि ईम भणे,
साहिबा मने राखो तुम्हारी पास. एक वार० १२

ॐ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(६९)

(ढाळ : वीर वखाणी राणी चेलणाजी)

स्वामी सीमंधर मारे मन वस्याजी, सुंदर सुगुण सुजाण;
अंतरजामी अंतर लहेजी, त्रिभुवन भासतो भाण. स्वामि० १

कनक सतेज कसवट कस्योजी, तेहवो वर्ण शरीर;
जीवतां पाप भवभव तणांजी, जाय जिम थल थकी नीर. स्वा० २

धन्य ते नयण चकोरडाजी, पेखे प्रभु मुख चंद;
जन्म सफळ निज कीजियेजी, रोपीये पुण्य तरुकंद. स्वा० ३

स्वामिगुण वागुरा विस्तरीजी भविक मनमृग पडे पास
जन्म मरण तथा पाशथीजी, निसरे ताहरा दास. स्वा० ४

समवसरण मध्ये बेसीनेजी मालवकौशिक राग;
देशना मधुर स्वरे उपदिशेजी, जे सुणे तेहना भाग. स्वा० ५

दुःख लहुं चार गतिमां भमुंजी, सेवतो काज अकाज;
जो जो हृदय विचारीनेजी, ते प्रभु ! कहेजो लाज. स्वा० ६

साहिब लोभ न कीयो तदाजो, सहु भणी आपतां दान;
नाथ अनाथ तुम्हारे नथीजी, हो मुज निर्मळ ज्ञान. स्वा० ७

कारमा सुख तणे कारणेजी, राची रह्यो मन मूढ;
तारी भगति नवि आदरीजी, पड्या अज्ञानथी रूढ. स्वा० ८

पंचम काळे इण भरतमांजी, नव मिले केवली कोई;
स्वामि ! तुम्हे पण वेगळाजी, किम मन धीरज होई. स्वा० ९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन तणी वात किणने कहुंजी, तेहवो को नहि जाण;
जिण तिण आगळ दाखताजी, लोकहांसी घर हाण. स्वा० १०

भव भव मांहि भमतां थकांजी, कीधला कर्म कठोर;
दाखवुं शा तुम आगळेजी, पग पग ताहरो चोर. स्वा० ११

निर्गुण तो पण ताहरोजी, मेलजो मत विसार;
अवर आधार भुजको नथीजी, ताहरो एक आधार स्वा० १२

स्वामि ! थोडा घणा मानजोजी, चरण कमळ तणी सेव;
कहे 'जिनहर्ष' मुज आपजोजी, विनति करुं नित मेव. स्वा० १३

(७०)

(ढाळ : उलालानी)

आज मनोरथ फळीया, सुपने साहिब मळिया;
भाग्य संयोगे ए दीठा, भवभवनां दुःख नीठा. १

पाप गया सहु दूरे, जिम कमल नहि पूरे;
पुण्य दशा हवे जागी, प्रभुजीशुं लय लागी. २

निरंजन निर्मोही, निर्मल तुज काया सोही;
कंचन वर्ण शरीर, सायर जेम गंभीर. ३

मेरुतणी परे धीर, कर्म विदारण वीर;
समता रसनो तुं दरियो, अनंत गुणे करी भरियो. ४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रभुजीनी सूरति सोहे, सुर नरना मन मोहे;
अपच्छरा प्रभुजी आगे, नाटक करे मन रागे. ५

त्रिगडा मांहि विराजे, कनक सिंहासन छाजे,
सुरपति चामर ढाळे, मोह मिथ्या मति टाळे. ६

बारह पर्षदा आवे, निज निज ठाम सुहावे;
चउमुख धर्म प्रकाशे, सहु कोने प्रति भासे. ७

कुमतिना मद गंजे, कुमति सदा ग्रह भंजे;
धर्मिना मन ठारे, संशय दूर निवारे. ८

नयणे जेह निहाळे, ते निज पातक गाळे;
धन धन ते नरनारी, जे भेटे गुण धारी. ९

नामे नवनिधि लहीये, दर्शन देखी गह गहीये;
जनम सफळ निज करी, मुगति तणा फळ लीजे. १०

ईम प्रभुना गुण गाया, सुपनामां सुख पाया;
दर्शन द्यो प्रभु मुजने, परतिख कहुं तुजने. ११

'सीमंधर' जिनराया, प्रणमुं ग्रह समे पाया;
मुजने सेवक थापो, प्रभुजी ! निज पद आपो. १२

श्रेयांस राय मल्हार, सत्यकी उदर अवतार;
लंछन वृषभ सुहावे गुण जिनहर्ष शुं गावे. १३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(७१)

जिनवर मुजने कोई मिलावो, सीमंधर शिवनामी रे;
चरण कमळ तारा वांछुं हुं, तुं छे मारो स्वामि रे. जिन० १

सासरडानुं कोड घणेरु, पियरडे नवि रहिये रे;
चउगईमांही दुःख घणेरूं, मुक्ति सासरडे जईए रे. जिन० २

मृत्यु लोकमां रे पियर मोटुं, माया जंजाळे खोटुं रे;
स्वर्ग मोसाळे क्यारेक जावुं, भातुं पोतानुं खावुं रे. जिन० ३

पाताळमांही घणां कुटुंबी, राढ वेढ दुःख खाणी रे;
छेदाणो भेदाणो बहु परे, सुखि नवि पाम्यो प्राणी रे जिन० ४

लाख चोराशी योनि नगरमां, पेसी निसरीयो एकाकी रे;
कोडी अनन्तमे भोगे वहेंचाणो, आठ खाण रह्यो थाकी रे. जिन० ५

अंडज पोतज जर रस जात, प्रस्वेद जात समूर्च्छिम रे
उद्भिज्ज भूमिमांही उत्पात रोप्या, आठ खाणी भयो तिम रे. जिन० ६

काळ अनंता फरी फरी आव्यो, सद्गुरु आव्यो आरो रे;
मुक्ति सासरडो एहज मारो, आपणो आतम तारो रे. जिन० ७

केहना सगां ने केहनी सगाई, वैरी थाये बहेनभाई रे,
पांचेय इंद्रिय चोर अन्यायी, परभवे सही दुःखदाई रे. जिन० ८

मात पितानुं कांई न चाले, बहेन भाई सौ भोळा रे,
पुत्र कलत्र सहु पाप करावे, खावा मळे सहु टोळा रे. जिन० ९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भूख तृष्णा छे घणीय पियरमां, तृष्णा ए तृप्ति न आवे रे,
घोर निद्रामां घोर्या रहेवुं तिणे पियर नवि भावे रे. जिन० १०

मुगति सासरडे भूख न लागे, कोई कांई नवि मागे रे.
रोग नहीं ने उंघ न आवे, सुखमां दहाडा जावे रे. जिन० ११

पियरमां आदि अंत न लागे, तेणे पियर केम रही रे,
मुगति गयाथी छेहडे आव्यो, सासरडे सुख लहिये रे जिन० १२

आणे आवे ना न कहेवाये आणापत खोटी थाय रे.
आणु पाछु वाळ्युं न जावे, पुण्य विना पस्ताय रे. जिन० १३

सीमंधर मुज आश पहोंचाडो, मुगति रमणी वर काजे रे,
शुभविजय शिष्य लालविजय कहे, मुजनें एटलुं
दीजे रे. जिन० १४

(७२)

चांदलिया संदेशो जिनवरने कहे रे,
एटलो काम करे अविसार रे;
बार परषदा जिनवर आगले रे,
'श्री सीमंधर' जग आधार रे. १

सोवन वर्ण शरीर सोहामणो रे;
मोहन मूर्ति महिमावन्त रे.
जगमें सुजश घणो सहुको जपे रे,
भेटीश दिन ते धन्य भगवन्त रे. २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साहिब दुःख अनन्तां में सह्यां रे,
हुं भमियो, गमियो छुं भव आळ रे;
शरणे राखजो निज सेवका रे,
तुम विण कोई न दीनदयाळ रे. ३
इतरा दिवस लगे भूले थके रे,
सेव्या तो होशे सुर केई एक रे;
ते अपराध खमजो माहरो रे,
मोटा तो बक्षे खून अनेक रे. ४
हवे एकताळी कींधी एहवी रे,
तुम विण अवर न नमवा सूंस रे;
सुर तरु फळ छोडी तूसने रे,
खावानी केम आवे हूंस रे. ५
हियडे तो नेह घणो हेजाळवो रे,
जावे आवे करवा प्रीत रे;
सम विषम पण न गणे वातडी रे,
नवल सनेही नवली रीत रे. ६
मनडो चंचळ मुज तानु आळसी रे,
कर्म कठिन सबळा अन्तराय रे;
पाप किया कोई भव पाछला रे,
मनमेलुं केम भेळो थाय रे. ७
वालेसर सांभळे मुज विनति रे,
मारे तो तुंहि ज साजन स्त्रैण रे;
हियडा भीतर तुं वासे वसे रे,
ध्यान धरुं समरु दिन रौण रे. ८
कोई केहने मनमां वसे रे,
कोई केहने जीवन प्राण;
मारे तो तुम विण को नहीं रे,
जिनजी ! भावे जाण म जाण रे. ९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नयणे निरखीश मूरति ताहरी रे,
ते दिन सफळ गणीश महाराज रे;
सन्मुख करशुं प्रभुजी वातडी रे,
छोडी पर निज मनची लाज रे. १०

दैव न दीधो मुजने पांखडी रे;
ऊडी मळुं जिनजी! तुज आयरे;
मनरा मनोरथ मनमां रह्या रे,
किण आगळ कहुं चित्त लायरे. ११

तारे तो मुज पाखे ही सरे रे,
पण मारे तो तुज विण नहीं सरंत रे
जलघर सारे मोरा बाहिरा रे,
मेह विना मोरा केम रहंत रे. १२

चांदो गगन, सरोवर प्राहूणो रे,
दूर थकी पण करे विकास रे;
जे जाके मनमें वसे रे,
तेह सदा तेह सदा तेने पास रे. १३

दूर थकी जाणजो वंदना रे,
मारी प्रह उगमते सूर रे;
महेर करीने सेवक उपरे रे;
मुजने राखो राज हजूर रे. १४

केइक प्रपंच हो साहिब! शुं करे रे,
करतां न आवे मनमें काण रे;
श्री सीमंधर तुम जाणो सही रे,
श्री सोमगणी जिनहर्ष सुजाण रे. १५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(७३)

श्री सीमंधर स्वामिजी जीवन जगदाधार;
वहाला सुणो एक विनति, मारा प्राणना आधार;
प्रभुजी ! मानजो महाराज ! १
हियडुं तो मुज हेजाळु रे, श्वास भर्यो उभराय;
एक पलक धीरज नवि धरुं, कहुं कुण आगळ जाय. प्रभुजी० २
खिण खिण मनोरथ नवनवा, उपजे मनडा मांही
फरि तेह मनमां वीसमें, कांइ जिम कूवानी छांहि. प्रभुजी० ३
एक घडी अथवा अधघडी, जो प्रभु मिले एकांति;
तो वात सवि मननी करुं, भांजुं तो सघळी भ्रांति प्रभुजी० ४
भले सरज्यां ते पंखियां, मन चिंते तिहां जाई;
माणस न सरजी पांखडी, तिणे रहि मन अकुलाई. प्रभुजी० ५
कुण मित्र जग एहवो मिले, जे लहे मननी वात;
वेधे नहि मन जेहसुं, किम मिले तेहसुं धात; प्रभुजी० ६
नवनव रंगा जीवडां, अति विषम पंचम काल;
आप आपणा मन रंगमां, सहु को थई रह्या लाल. प्रभुजी. ७
कहुं कुण आगळ वातडी, कुण सांभळे वली तेह;
टाले कुण प्रभु तुम विना, मनडा तणा संदेह. प्रभुजी० ८
संसार सघळो जोवतां, मुज मन राचे न क्यांय
जम कमल वननो भमरलो, तेने अवर न गमे कांई. प्रभुजी० ९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धन्य महाविदेहना लोकने, जे रहे सदा प्रभु पास;
मुखचंद देखे तुम तणो, पूरे मननी आश. प्रभुजी० १०

तुम वयण अमृत सरिखा, श्रवणे सुणे नितमेव;
संदेहो पूछे मन तणां, निर्णय करे ततखेव. प्रभुजी० ११

सेंगुं नहीं अमने अतगुणी, प्रभु जई वस्या अतिदूर
शी भगति एहवी तेहनी, जे कर्यां आप हजूर. प्रभुजी० १२

जागुं नहीं लाख गमे करी, सेवक अलहंता जेह;
तो पण पोतानो त्रेवडी, साहिब न दाखे देह. प्रभुजी० १३

वळी वळी शुं कहीअे घणुं, प्रभु विनति मन मांहि;
इम भक्तने उवेखतां, नहीं भला दीसे कांई. प्रभुजी० १४

मुज सरखा कोडि गमे, सेवक तुमारे स्वाम;
पण मारे तुम विना, नहीं अवर मन विश्राम. प्रभुजी० १५

ए अरज मारी सांभळी, करुणा करी मन साथ;
कहे हंस प्रभु हेजे हवे, दर्शन देजो नाथ. प्रभुजी० १६

(७४)

(देशी–वीछीयानी)

मन मंदिर मोरे आवीए, श्री सीमंधर भगवंत रे;
करुणाकर ठाकुर माहरा, भयभंजन तुं भगवंत रे. मन० १
अकळ अरूपी जिनवरु, अविनाशी तुं अरिहंत रे;
योगीश्वर ध्याने ध्याईअे, प्रभु मोटो महिमावंत रे.
उपकारी महा संत रे. मन० २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन मंदिर छे प्रभु माहरुं, तारे वसवाने लाग रे;
तुं दीनदयाल दयाकरू, वडभागी तुं निराग रे; मन० ३

निज आशय धरती शुद्ध करी, मिथ्यामत काढ्यो साल रे;
तिम माया कंटक काढीया, शुभ रुचिधर बंध विशाळ रे. मन० ४

काढ्यो कचरो दुर्ध्याननो, तामस रज कीधो दूर रे;
शुभ ध्यानशुं लींपण लीपीओ, छांट्यो शमरस शुभनीररे. मन० ५

तिहां समकित थंभ ऊभाविया, अप्रतमपणानी भीति रे;
कडीबंध कपट रहितपणुं, क्रिया छेह पुण्य प्रकृतिनी भोतिरे. मन० ६

सुविवेक चंदननो ओरडो, तिहां संतोष सिंहासन साररे;
तिहां धूप घटो प्रगटी घणुं, जिनशासन श्रद्धा धार रे मन० ७

चन्द्रोदय चारित्र चिहुं दिशि, संयम गुण मोती माल रे
शुभ ज्ञानदीपक दीपे भला, तोरण बहु विनय रसाळ रे. मन० ८

करुणाजल पग धोवण भणी, पुष्पांजलि समता जाण रे
तुम गुणथुति सुंदर सुखडी, आगमनय वयण प्रमाण रे मन० ९

भलुं भोजन मैत्रीभाव जे, तिहां सत्यवचन तंबोळ रे,
तिहां वाजा समकित गुणतणा, शुभ किरिया केसर घोळ रे. मन०१०
अेम भगति युगति करशे घणी, मुज मनुमानिनी मनोहार रे;
मुज अंगज विनय सोहामणो, धरशे शिरछत्र उदार रे. मन०११
प्रभु महेर करी मन मंदिरे, सीमंधरजिन पाउधार रे;
मुज भाव भगति देखी घणुं, जई शकशो केम किरतार रे. मन०१२

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गिरुआ आदर भावना; रसीया होय सहज सुभाव रे,
निज सेवक भगति देखी करी, सुविशेष श्री जिनभाव रे. मन०१३

सीमंधरजिनवर आवीआ, मन मंदिर मोरे आज रे;
सहेजे सुख सघळां सरज्यां, मन वंछित सिद्धयां काज रे. मन०१४

जिन अमृतपरे घणुं वहालो, प्रभु मेरु महीधर धीर रे;
श्रेयांस नरेसर कुळतिलो, राणी ऋक्ष्मणि हीयडा हार रे. मन०१५

वृषभ लंछन कंचन सम तनु, श्री सत्यकी राणी नंद रे;
गुरु धीरविमळ कविराजनो, नय वंदे नितु श्री जिनचंद रे. मन०१६

(७५)

(पत्ररूपे)

स्वस्ति श्री महाविदेहखेत्रमां, जीहां राजे तीर्थंकर वीश,
तेने (एने नमुं शिश कागळ लखुं कोडथी० १

स्वामि ! जघन्य तीर्थंकर वीश छे, उत्कृष्टा एकसो सित्तेर,
तेमां नहि फेर. का० २

स्वामि ! बार गुणे करी युक्त छो, अंगे लक्षण एक हजार,
उपर आठ सार. का० ३

स्वामि ! चोत्रीश अतिशये शोभतां, वाणी पांत्रीश वचन रसाळ,
गुणो तणी माळ का० ४

स्वामि ! गंधहस्ती सम गाजता, त्रण लोक तणां प्रतिपाळ,
छो दीनदयाल. का० ५

स्वामि ! काया सुकोमळ शोभती, शोभे सुंदर सोवन वान,
करुं प्रणाम. का० ६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वामि ! गुण अनंत छे आपना, एक जोभे कह्या केम जाय,
लख्या न लखाय. का० ७

भरतक्षेत्रथी लिखितंग जाणजो, आप दर्शन इच्छित दास,
राखुं तुम आश. का० ८

में तो पूर्वे पाप कोधां घणां, जेथी आप दरिसण रह्या दूर,
न पहोंचुं हजूर. का० ९

मारा मनमां संदेह अति घणा, जवाब विना कह्या केम जाय,
अंतर अकळाय. का० १०

आडा पाळ परवत ने डुंगरा, जेथी नजर नाखी नव जाय,
दर्शन केम थाय. का० ११

स्वामि ! कागळ पण पहोंचे नहि, न पहोंचे संदेशो के शाही,
अमे रह्या आंही. का० १२

दैवे पांख आपी होत पोंडमें, उडी आवुं देशावर दूर,
तो पहोंचु हजूर. का० १३

स्वामि ! केवळज्ञाने करी देखजो, मारा आतमना छो आधार,
उतारो भवपार. का० १४

ओछुं अधिकुं ने विपरीत जे लख्युं, माफ करजो जरूर जिनराय !
लागुं तुम पाय. का० १५

संवत ओगणीसो त्रेपन (१९५३) सालमां,
हरखे हरखविजय गुण गाय, प्रेमे प्रणमुं पाय.
कागळ कखुं कोडथी० १६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(७६)

(अनन्तवीरज अरिहंत)

सफल संसार अवतार अे गणुं,
स्वामिसीमंधरा ! तुम्ह भगते भणुं;
भेटवा पायकमल भाव हियडे घणो,
करिय सुपसाय जे विनवुं ते सुणो. १

तुम्हशुं फूड अरिहंत शुं राखिये ?
जिस्यो अच्छे तिस्यो कर जोडी करी भांखिये;
अति सबल मुझ हिये मोह माया घणी,
एक मन भगति किम करु त्रिभुवनधणी. २

जीव अरति करे नव नवी परिगडे,
रीश चटको चढे लोभ वयरी नडे !
नयण रस वयण रस काम रस रसियो,
तेम अरिहंत तुं हियडे नवि वसीयो. ३

दिवस ने रात हियडे अनेरो धरुं,
मूढ मन रीझवा बलिय माया करुं;
तुंहि अरिहंत जाणे जिस्यो आचरुं,
निम कर जिम संसार सागर तरुं. ४

कम्म वसि सुखने दुःख जे हुं सहुं,
मन तणी बात अरिहंत ! किणने कहुं;
करी दया करी मया देव ! करुणा परा,
दुःख हरि सुख करी स्वामिसीमंधरा ! ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाण संयोग आगम वयण पिण सुणुं,
धर्म न कराय प्रभु पाप पोते घणुं;
एक अरिहंत तुं देव बीजो नहीं,
एक आधार जग जाणजो अम्ह सही. ६

धण कणय माय पिय पुत्त परिजन सहु,
हस्यो बोल्यो रम्यो रंग रातो बहु;
जयो जयो जग गुरु जीव जीवन धरा,
तुम समोवड नहि अवर वाल्हेसरा. ७

अमिय रस वाणी जाणुं सदा सांभळुं,
वारंवार परषदा मांहि आवी मिलुं;
चित्त जाणुं सदा स्वामि ! ओलगुं,
किम करुं ठाम पुंडरोगिणी वेगलुं. ८

भोलिडा भगति तुं चित्त हारे किस्ये,
पुण्य संयोग प्रभु दृष्टिगोचर हुस्ये,
जेहने नामे मन वयण तन उल्लसे,
दूरथी ढूंकडा जिम हियडे वसे. ९

भल भलो एणी संसार सहुए अच्छे,
स्वामिसीमन्धरा ! ते सहु तुम पछे;
ध्यान करतां सुपन मांहि आवी मिले,
देखिये नयण तो चित्त अरति टळे. १०

साम सोहामणा नाम मन गह गहे,
तेहशुं नेह जे वात तुम्ह जो कहे !
तुम्ह पाय भेटवा अति घणो टळवळुं,
पंख जो होय तो सहिय आवी मिलुं, ११

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेरुगिरि लेखिणी आभ कागळ करुं,
क्षीर सागर तणां दूध खडोया भरुं;
तुम्ह मिलवा तणा स्वामि ! संदेशडा,
इन्द्र पण लिखिय न शके अछे एवडा. १२

आपणे रंग भरी वात मुख जेटली,
उपजे स्वामि न कहाय मुख तेटली;
सुणो 'सीमन्धर' राज राजेसरा,
लाड ने कोड प्रभु पूर सवि माहरा. १३

पुव्व भवि मोह वसि नेह हुवे जेहने,
समरिये अेणी संसार नित तेहने;
मेहने मोर जिम कमल भमरो रमे,
तेम अरिहंत तुं चित्त मोरे गमे. १४

खरुं अरिहंतनुं ध्यान हियडे वस्युं,
बापडुं पाप हिव रहिय पूरशे किस्युं;
श्याम जिम गरुडवर पंखी आवे वही,
ततखिण सर्पनी जुति न शके रही. १५

पाप मैं कडीज सावज्ज सहु परिहरि,
'स्वामिसीमन्धरा' तुम्ह पय अणसरी;
शुद्ध चारित्र कहिये प्रभु पाळशुं,
दुःख भंडार संसार भय टाळशुं, १६

तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सहो,
एह वात में अरिहंत आगळ कही;
एवडी माहरी भगति जाणी करी,
आपजो बापजी सार केवळ सही. १७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(७७)

महीयलि महिमावंतए, मंगळ आराम वसंत ए,
केवळ कमळा कंत ए, मन मोहन रूप महंत ऐ. १

विहरमान अरिहंत ए, 'श्री सीमंधर' भगवंत ए,
तुम गुण अछे अनंत ए पण केम कहुं मन खंतए. २

जंबूद्वीप मझार ए, श्री पूर्व विदेह उदार ए,
विजयतिहां 'पुखलावती ए' राजे जन भावती ए. ३

नयरी तिहां 'पुंडरीकिणी अे,
जिणे ऋद्धे अलका अवगणीए,
राजा तिहां 'श्रेयांस' ए,
सोहे निजकुळ अवतंस ए. ४

तसु घर गजगति गामिमी ए,
'सत्यकी' नामे वर कामिनीं ए,
अवतर्या प्रभु तसु तणी ए,
कूंख मन वंछित सुरमणि ए. ५

'कुंथुनाम—अर' अंतरे ए,
जिन थया सुर ओच्छव करे ए,
धवल बीजे जिम चंदु ए,
प्रभु वाधे सोहग कंदु ए. ६

मनहर जोवन वय धरी ए,
प्रभु परणे 'रुकमणी' नारी ए,
माणे राज विलास ए,
पूरे सवि सेवक आश ए. ७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रमे लोकांतिक सुर, जणावे व्रत अवसर,
जिनवर नमि-सुव्रत अंतरे ए,
संयम कमळा आदरे, क्षय निर्मल केवळ वरे;
बहु परे सवि अतिशय महिमा धरे ए. ८

सकल सुरासुर मंडळी, समवसरण विरचे मिली,
तिहां वली सिंहासन आसन ठवे ए;
तिहां बेसे 'सीमंधर', जिनवर धरम धुरंधर,
बंधुर वयणे भवियण बूझवे ए. ९

जय जय जिन बहु वच्छल, इम जंपई सोइ 'सीमंधर'
जिनवर मच्छर माया मद दूर करणी ए,
स्वामि ! तुम मळवा भणी, मनसा मुज अति घणी;
जगधणी, पूरो ते सेवक तणीए, १०

विजयमान जिन, सांभळी थाय मुज वंदन रळी,
पण वेगळी 'पुंडरीकिणी', किम करूं ए ?
अहिंथी जाणजो सेव, मोरी ज्ञान केरी देव ?
नितमेव आण तुमारी शिर धरूं ए. ११

तुं त्रिभुवन राजेसर, परमपुरुष परमेश्वर,
वालेसर तुम सरखो जग नवि इणे ए;
तुम गुण थुणवा पडवडी, एह सफल मुज जीभडी,
आंखडी सफल करो निज दरशणे ए; १२

जिनवर रूप अनोपम गुणरळियामणोजी,
जाणे मोहन वेली,
सोहेजी, सोहेजी, मन भवियण तणोजी;
ते धन दिन जिहां प्रभु मुखकमल, निहाळशुंजी;
आणी अधिक उल्लास, ततखिणजी, ततखिणजी,
भवभय संकट टाळशुं जी; १३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किहां रयणायर किहां ससहर गयणे रहेजी,
किहां जलहर किहां मोर;
जिण परेजी, जिण परेजी,
दूर थकी ए गहगहेजी;
तिम तुम ध्याते मुज मन हरखे उल्लसेजी;
अळगो पण आसन्न,
भासेजी भासेजी, जिण तुं मुज हियडेजी, १४
तुं पीडहर पीडहर जगवच्छल धणीजी,
तुं बधव तुं तात,
जीवनजी जीवनजी तुं भुरतरु चिंतामणिजी;
तोरे नामे सुख संपत्ति संतति मिलेजी,
लाभे लील विलास,
सुंदरजी सुंदरजी मनह मनोरथ सवि फळेजी. १५

(ढाळ)

सीमंधर जिणचंद, आपे परम आनंद,
सेवे सुरनर वृंद; जास चरण अरविंद. १६
मधुकर मालती संगे, केलि करे जिम रंगे,
चाहे चंद चकोरा तिम हुं दर्शन तोरा. १७
भावी सत्तम जिणवरे, शिव पहुंते इण अवसरे;
चिरकाले शिवगामी, जयउ सीमंधर स्वामी. १८

(चोपाइ)

इम श्री सीमंधरस्वामी शाल,
थुण्यो मन भगते गुणविशाळ;
श्री पुण्यसागर उवज्झाय सीस,
गणी पद्मराज पभणे जगीश. १९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(७८)

(ढाळ : करकडुंने करुं वंदना, हुं वारि लाल)

श्री सीमंधर वंदिये हुं वारि लाल,
इण जंबूद्वीप मोझार रे हुं०
विजय भली पुखलावती हुं०
तिहां छे अति सुखकार रे. हुं० १
नगरी भली पुंडरीकिणी हुं०
श्रेयांस नामे भूप रे हुं०
तस धरणी छे सत्यकी हुं०
दीसे अति ही सुरूप रे. हुं० २
शीलगुणे करी सोहती हुं०
सतीयांमें सिरदार रे हुं०
पुण्य संयोगे उपना हुं०
जिनवर गरभ मोझार रे हुं० ३
चउद सुपन दीठा तदा हुं०
सीमंधर जिन माय रे हुं०
श्री कुंथु-अर अंतरे हुं०
जाय श्री जिनराय रे. हुं० ४
तब श्रेयांस धरापति हुं०
आपियुं दान एमंदरे हुं०
जनम महोत्सवे आविया हुं०
बहु देव देवी इंदरे हुं० ५
अनुक्रमे यौवन पामिया हुं०
परणी रुक्मिणी नार रे हुं०
सुख विलसी संसारना हुं०
संयम ले सुखकार रे हुं० ६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तजी रमणी ऋद्रि राज्यनी हुं०
पुर अंतेउर तेम रे हुं०
मोह कुंभी मद गालवा, हुं०
प्रगटयो मृगपति जेम रे हुं० ७

देई दान संवत्सरी हुं०
ओच्छव करियो इंद रे हुं०
मुनिसुव्रत-नमि अंतरे हुं०
दीक्षा लीधी जिणंदरे हुं० ८

कर्मशत्रु बल क्षय करी हुं
पाम्या केवळज्ञान रे हुं०
भवियण ने प्रतिबोधता हुं०
धरता मन शुभ ध्यान रे हुं० ९

इणि परे विचरो स्वामिची हुं०
तारक नाम धराय रे हुं०
हिव इक विनति माहरी हुं०
सुणिये श्री जिनराय रे हुं० १०

लाख चोरासी योनिमां हुं०
चउगतिमां वळी तेम रे हुं०
दुःख दीठा ईण जोवडे हुं०
अब करिये मुज खेम रे हुं० ११

हुं सेवक प्रभु ताहरो हुं०
तुं मुज स्वामि जिनेश रे हुं०
इम जाणी तुज आगळे, हुं०
कहियो मन संदेश रे हुं० १२

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इम जगमांहे ताहरो हुं०
दीसे नाम अनैस रे हुं०
इम जाणी तुज आगळे हुं०
कहियो मन संदेश रे हुं० १३
वृषभ लंछन प्रभु शोभता हुं०
समचोरस संठाण रे हुं०
काया उंची ताहरी, हुं०
पंचसय धनुष प्रमाण रे हुं० १४
लाख चोरासी पूर्वनो हुं०
आयु पाळी विशाळ रे हुं०
उदय पोढालने अंतरे हुं०
सिद्ध हुस्ये तत्काल रे हुं० १५
जगनायक सीमंधरु हुं०
जगगुरु जगदाधार रे हुं०
भव भव होजो मुजने हुं०
जिनवरनो आधार रे हुं० १६
संवत विधु युग गज मही हुं०
सुखकारी मधु मास हुं०
पूनम दिन भूगुवास रे हुं०
सफल करी मन आश रे हुं० १७
गुजराती लुका गच्छमें हुं०
गणिश्री माणिकचंद रे हुं०
सोहे मुनिपति वृंदमें हुं०
ग्रह गणमें जिम चंदरे हुं० १८
सुभट परे सेवा करे, हुं०
श्रावक शक्ति प्रमाण रे हुं०
स्तवन रच्यो तिहा एहवो, हुं०
मुनि नगराज सुजाण रे हुं० १९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंतेवासी तेहनो हुं०
गुणचंद्र ध्यावे ध्यान रे हुं०
श्री जिनराज पसायथी, हुं०
पाम्यो एह सुज्ञान रे हुं० २०
स्तवन सीमंधर स्वामिनो हुं०
भणशे गुणशें जेह रे हुं०
अजरामर सुख शाश्वता; हुं०
लहेशे निरंतर तेह रे हुं० २१

(७९)

प्रभु नाथ तु तिय लोकनो प्रत्यक्ष त्रिभुवन भाण,
सर्वज्ञ सर्वदर्शी तुमे, तुमे शुद्ध सुखनी खाण,
जिनजी विनति छे एह जिनजी १
प्रभु जीव जीवन भव्यना, प्रभु मुज जीवन प्राण;
ताहरे दर्शन सुख लहुं, तुंहि जगत स्थिति जाण, जिनजी २
तुज विना हुं बहु भव भम्यो, धर्या वेश अनेक
निज भावनो पर भावनो जाण्यो नहि सुविवेक. जिनजी ३
धन्य तेह जे नित्य प्रह समे, देखे जे जिन मुखचंद;
तुम वाणी अमृत रस लही, पामे ते परमानंद. जिनजी ४
एक वचन श्री जिनराजनो नयगम भंग प्रमाण;
जे सुणे रुचिथी ते लहे, निज तत्त्व सिद्धि अमान. जिनजी ५
जे क्षेत्र विचरो नाथजी, ते क्षेत्र अतिसुपसथ्थ;
तुज विरह जे क्षण जाय छे; ते मानीये अकयथ्य. जिनजी ६
श्री वीतराग दर्शन विना, वोल्यो जे काल अतीत;
ते अफळ मिच्छामि दुक्कडं, तिविहं तिविहंनी रीत. जिनजी ७
प्रभु वात मुज मननी सहु जाणो ज छो जिनराज;
स्थिर भाव जो तुमचो लहुं तो मीले शिवपुर सात जिनजी ८

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रभु मिले हुं स्थिता लहु तुज विरह चंचल भाव,
एकवार जो तन्मय रमुं, तो करुं अचल स्वभाव, जिनजी ९
प्रभु वसो क्षेत्र विदेहमां, हु रहुं भरत मोझार;
तो पण प्रभुना गुण विषे, राखुं स्वचेतन सार जिनजी १०
जो क्षेत्र भेद टले प्रभु, तो सरे सघळां काज;
सन्मुख भाव जभेदता, करी वरुं आतमराज. जिनजी ११
पर पुंठ इहां जेहनो, एवडी जे छे स्वाम;
हाजर हजूरी ते मोले निषजे ते केटलो काम. जिनजी १२
इन्द्र चन्द्र नरेन्द्रनो, पद न मागु तिल मात्र;
मागुं प्रभु मुज मन थकी, न विसरो क्षण मात्र; जिनजी १३
ज्यां पूर्ण सिद्ध स्वभावनी, नवि करी शकुं निजऋद्ध;
त्यां चरण शरण तुमारडो, एहि ज मुज नव निध. जिनजी १४
महारी पूर्व विराधना, योगे पडयो ए भेद;
पण वस्तु धर्म विचारतां, तुज मुज तहि छे भेद. जिनजी १५
प्रभु ध्यान रंग अभेदथी, करी आत्मभाव अभेद;
छेदी विभाव अनादिनो, अनुभवुं स्वसंवेद. जिनजी १६
विनवुं अनुभव मित्रने, तुं न करीश पर रस चाह;
शुद्धात्म रस रंगी थई, कर पूर्ण शक्ति अवाह जिनजी १७
जिनराज सीमंधर प्रभु, ते लह्यो कारण शुद्ध;
हवे आत्मसिद्धि निपजाववी, शी ढील करी ए बुद्ध जिनजी १८
कारणे कार्य सिद्धिनो करवो घटे न विलंब
साधवी पूर्णानंदता, निज कर्तृता अवलंब. जिनजी १९
निज शक्ति प्रभु गुणमां रमे, ते करे पूर्णानंद
गुण गुणी भाव अभेदथी, पीजीए शम-मकरंद, जिनजी २०
प्रभु सिद्ध बुद्ध महोदयी, ध्याने थई लयलीन;
निज 'देवचंद्र' पद आदरे, नित्यानन्द रस सुख पीन. जिनजी २१

*

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(८०)

(वेशी वीर मधुरी वाणी भाखे)

सांभळो जिनवर अर्ज हमारी; जन्म मरण दुःख वारो रे
भरत क्षेत्रथी लेख पठावुं, लखुं छुं वितक वात रे
तुमे तो स्वामी जाणो छो सारु, पण जाण आगळ वखाण रे. १

जे दिनथी प्रभु वीरजिनेश्वर मोक्षे विराजवा जाय रे
समवसरण शोभा भरतनी लई गया, अरिहंतनो पड्यो विजोगरे. २

गौतम गणधर पाट उपर राख्या, श्री संघने रखवाळा रे
ते पण थोडा दिवसनी चोकी, करी गया शिववास रे. ३

केवळज्ञान लेई जंबू पहोंच्या, साथे दश जणसेरे
तत्त्वज्ञान ते गांठे बांध्युं, लई गया प्रभु पास रे... ४

मन पज्जव अवधि लई नाठा, न रह्यो पूरवज्ञान रे
सहस तेत्रीश जोजन अधिक संशय भंजन वसो दूर रे. ५

गोवाळ आधारे गायो चरे छे, आवे निज निज ठाम रे
तिम ज्ञानाधारे जीव तरे छे, पामे भवजल पार रे. ६

जिन प्रतिमा जिनवचन आधारे, सघळो भरत ते आजे रे
जिन आणाथी प्राणी चाले, तेहनो धन्य अवतार रे. ७

भरतक्षेत्रमांहि तीरथ म्होटा, सिद्धाचल गिरनार रे
समेतशिखर अष्टापद आबु, भवजल तारण नाव रे. ८

भरतक्षेत्रमां वार्ता चल रही, कपटी हीन आचार रे
साचुं कहेतां रीस चढावे, भाखे मुख विपरीत रे. ९

वैरागे खसीयाने रोगे फसीया, चाले नहीं तुज पंथ रे
योग्य जीव ते विरला उठावे, तुज आणानी भार रे. १०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुद्ध प्ररूपक समताधारी चाले सुमने न्याय रे
तेहनां पण छीद्रने जुए छे, ऊलटां काढे छे वांक रे. ११

आप प्रशंसा आपनी करता, देखे नहीं परगुण लेश रे
परपीडा देखी हैयुं न कंपे, ए मुज मोटी खोट रे. १२

ते दिन भरतमां क्यारे होशे, जन्मशे श्री जिनराज रे
समवसरण विरचावी बिराजे, सीझशे भविओना काज रे. १३

सद्गुरु साखे व्रत में लीधा, पाल्या नहीं मनशुद्ध रे
देवगुरुनी में आणा लोपी, जिनशासननो हुं चोर रे. १४

कृष्णपक्षी जीव क्यांथी पामे, तुम चरणोनी सेव रे
पण जगतनी ठकुराई तुमारी, महिमातणो नहीं पार रे. १५

कर्मअलुंजन आकरो फरीयो, फरीयो चोर्यासीना फेरा रे
जन्म जरा मरणे करी थाक्यो, हवे तो शरण आप रे. १६

ओछुं पुण्य दीसे छे मारुं, भरतक्षेत्रे अवतार रे
तुम जेटली प्रभु रिद्धि न मांगु, पण मांगु समकित दान रे. १७

त्रिगडे बेसी धर्म प्रकाशो, सुणे पर्षदा बार रे
धन्य सुरनर धन्य नगरी वेला, तेहने करुं हुं प्रणाम रे. १८

महोटानी जो महेर होवे तो, कर्मवैरी जाये दूर रे
जग सहुनो उपकार करो छो, मुजने मूक्या ते बिसार रे. १९

ज्ञानविमळ शीख भली परे आपे, जिनवाणी हैडे राखे रे.
सत्यशीयल तुज साथे चाले, कुण करे तुज रोक रे. २०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(८१)

(सुण जिनवर शेत्रुंजा धणीजी—ए देशी)

सुण सीमंधर साहिबाजी, शरणागत प्रतिपाळ
समर्थ जग जन तारवाजी, कर म्हारी सम्भाळ.
कृपानिधि ! सुण मोरी अरदास;
हुं भवे भवे तुमचो दास. कृपानिधि०
त्हारो छे विश्वास—कृपानिधि०
पूरो अमारी आश—कृपानिधि० १

हुं अवगुणनो राशि छुं जी, तिल तुष नहि गुण लेश.
गुणिनी होड करुं सदा जी, एहि ज सबळ किलेश. कृपा० २

मत्सर भय ने लालचे जी, करतो किरिया लेश.
ते पण पर जन रंजवा जी, भलो भजाव्यो वेश. कृपा० ३

छठा गुणठाणा धणी जी, नाम धरावुं रे स्वाम.
आगम वयणे जोवतां जी, न गयो कषाय ने काम. कृपा० ४

रसना रामा ने रमा जी, ए त्रण पातिक मूळ,
तेहनी अहोनिश चिन्तना जी, करतां भव थयां स्थूल. कृपा० ५

व्रत मुख पाठे उच्चर जी, दिवस मांही बहु वार,
तेह तुरत विराधतो जी, न आणी शंक लगार, कृपा० ६

वूलि तणा देउल करी जी; जिम पाउसमां रे बाळ
खो भूला मुखे एम वदेजी, तिम व्रत में कर्या आळ. कृपा० ७

आप अशुद्ध परने करुं जी, देई आलोयण शुद्ध;
मा-साहस पंखी परे जी, पाडुं फंदे मुद्ध, कृपा० ८

अछता गुण निसुणी मने जी, हरखुं अतिसुविशेष;
दोष छतां पण सांभळीजी, तस उपरे धरुं द्वेष. कृपा० ९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिभव परपरिवादना जी, परे परे भाखुं रे आपः
निज उत्कर्ष करुं घणो जी, एहि ज मुज संताप, कृपा० १०

निश्चय पंथ न जाणीयो जी, व्यवहरियो व्यवहार;
मदन मस्ते निशंकथी जी, थाप्यो असदाचार. कृपा० ११

समय संधयणादि दोषथी जी, नावे शुकल ध्यान;
सुहणे पण नवि आवियुं जी, निराशंस धर्म ध्यान कृपा० १२

आर्त-रौद्र बेहु अहोनिशेजी, सेवाकार खवास;
मिथ्या राजा जिहां होये जी, तृष्णा लोभ विलास. कृपा० १३

जिन मत वितथ प्ररूपणा जी, कीधी स्वारथ बुद्धः
जाड्यपणाना जोरथी जी, न रही कांई शुद्ध कृपा० १४

हिंसा अलीक अदत्तशुं जो, सेव्यां त्रिविध कुशील;
ममता परिग्रह मेळवीजो, कीधी भवनी लील. कृपा० १५

अक्रिय साधेजी जे क्रियाजी, ते नावे तिल मात्र;
मद अज्ञान टळे जेहथीजी, ते नहि नाणनी यात. कृपा० १६

दर्शन पण फरस्यां घणांजी, उदर भरवाने काम;
पण तुम तत्त्व प्रतीतशुंजी, न धरूं दर्शन नाम. कृपा० १७

सुविहित गुरुबुद्ध लोकनेजी, हुं वंदावुं रे आप;
आचरणा नहि तेहवीजी, ए मोटो संताप. कृपा० १८

मिथ्यादेव प्रशंसीयाजी, कीधी तेहनीं सेव;
अहाछंदना वयणनीजी, न टळी मुजने टेव. कृपा० १९

कार चित्ते चूना परेजी, धर्मकथा में कीध;
आप वंची पर वंचियाजी, एके काज न सिद्ध. कृपा० २०

रातो रमणी देखीनेजी, जिम अणनाथ्यो रे सांढ;
भांड-भवैयानी परेजी, धर्म देखाडुं मांड. कृपा० २१

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्रोध दावानल प्रबळथीजी, उगे न समता वेल;
मान महीधर आगळेजी, न चले गुण नदी रेल. कृपा० २२
माया-सापण पापिणीजी, मन बिल मूके रे नाह;
कोमळ गुणने ते डसेजो, लोभ विलास अथाह. कृपा० २३
वस्त्र पात्र जन पुस्तकेजी, तृष्णा कीधी अनंत;
अंत न आवे लोभनोजो, कहुं के तो वृतांत ! कृपा० २४
धर्मतणे दंभे कर्याजी, पूर्या अर्थ ने काम;
तेहथी त्रण भव हारीयाजी, बोध होवे बळी वाम. कृपा० २५
कल्प्याकल्प्य विचारणाजी, राखी कांई न शंक;
अनेषणीय परिभोगथीजी, रुल्यो चउगति जिम रंक. कृपा० २६
हवे तुम ध्यान सनाथताजो, आडो वाळ्यो रे आंक;
करुणा करीने निरखीयेजी, मत गणजो मुज वांक. कृपा० २७
मुजने कहेतां न आवडेजी, नाणे जे तुज दीठ;
हुं अपराधी ताहरोजी, खमजो अविनय धीठ कृपा० २८
तुमे जिम जाणो तिम करोजी, हुं नहि जाणुं रे कांई;
द्रव्यभाव सवि रोगनाजी, जाणो सर्व उपाय. कृपा० २९
हुं एक जाणुं ताहरुंजी, नाम मात्र निरधार;
आलम्बन में ते कर्युंजो, तेहथी लहुं भवपार कृपा० ३०
तात "सत्यकी" नंदनोजी, "ऋक्ष्मणि" राणीनो कंत,
तात 'श्रेयांस' नरेसरुजी, विचरंता भगवंत. कृपा० ३१
चित्त मांहे अवधारशोजी; तोये केतीक वात;
लही सहाय तुम्हारडीजो, प्रगटे गुण अवदात. कृपा० ३२
परम पुरुष ! परमेश्वरूजी ! प्राणाधार ! पवित्र;
पुरुषोत्तम ! हितकारोजी, त्रिभुवन-जनना मित्र ! कृपा० ३३
"ज्ञानविमळ" गुणथी लहोजी, मारा मननी रे हुंस,
पूरी शिशु सुखियो करोजी, मुज मानस सरहंस. कृपा० ३४

❀

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

डभोई ग्रामे लिखितंग कांति सौभाग्येन स्ववाचनार्थं

शुभं भवतु श्रीरस्तुः श्रीः

गुणचंद्रकृत सीमन्धर लेख १

देवाः समर्चन्ति पदारविन्दं, यस्य प्रभावं सुमनोहरं च ।
सीमन्धरं प्राप्य जिनं प्रसन्नं, ब्रवीमि किंचित् स्वधियानुसारम् ॥

दूहा

स्वस्तिश्री पुखलवती, नामे विजय प्रधान,
पुंडरिगिणी नयरी प्रगट, भूतल तिलक समान. २
श्रीसीमन्धर विचरे तिहां, श्री विहरमान अरिहंत;
सकल जंतु संदेहडा, भाजे श्री भगवंत. ३

ढाल पहेली — राग जयंतसिरि

श्री सीमन्धर साहिब, विहरमान चरणां नांरे,
दक्षिण भरतथी विनवे, भविका तुज भगवान रे.
सुगुण संदेशो सांभळो, हुं लेखुं लवलेश रे,
विनतडी किंकर तणी, धरजो चित्तप्रदेशे रे. सुगु० ४
जिनजी तुम्हारा ध्यानजी, अमने अधिक कल्याण रे,
पणि तुज विरहे पापीओ, पीडई घणुं सुजाण रे. सुगु० ५
दुषमकाले तुं लह्यो, श्री सीमन्धर तात रे;
तुज विण हुं केहने कहुं, म्हारा मननी वात रे. सुगु० ६
साहिब सेवक उपरे, आंणी प्रीत विशेष रे,
चित कारण बे बोलडा, लिखजे वळते लेख रे. सुगु० ७
सेवक चित्त संभारिने, अेक आंगलनो लिखजो लेश रे;
ते पाड न राखस्युं तुम्हतणो, दस गुणो वालसुं तेहरे. सुगु० ८

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्यु परदेशे रह्यां माटे, किंकरने विसारिजे रे;
दूर थकी सेवक तणी, खबर घणेरी लिजे रे. सुगु० ९
तुम्ह लेख आव्ये उल्लसे, अम हिअडुं जगदीश रे;
प्रीति में तुमस्यु घणी, ते जाणो विसवावीश रे. सुगु० १०
उत्तम सज्जन जाणीने, तुमस्यु मांडयो नेह रे;
प्रभु निरगुण सेवक प्रते, रखे देखाडो छेह रे. सुगु० ११

दूहा २

निरगुण तोहि आपणी, सेवक जाणी चित्त,
श्री सीमंधर सज्जन तुम्हे, धरजो अधिक. प्रीति. १२
गिरुआ गुण करतां थकां, पात्र कुपात्र जोय,
महा तरुवरसे मेहलो, वली अकक धतुरां सोय. १३
तिम हुं तो निरगुण अछु, तुम्हे गिरुआ गुणवंत,
इम जाणिने अम तणो, मानजो विनति अरिहंत. १४

ढाळ बीजी—राग विछुडो

विनति सुणीजे हो मुज मनि साहिबारे, कहेतां हियडु भराय;
तुम्ह हिरदे दावानलि अंगे परजले रे, ते मई खिण न खमाय
विनति. १५
हृदय संतोषु रे ताहरा ध्यानथी रे, जीभडली गुणगांय;
कान सुणी गुण पणि अेक लोयण रे, तडफे तुम्ह देखी काय
विनति. १३
मनडु माहरुं तुम्ह चरणां तले रे, हुं लागि लागि हुं दीनराति;
ध्यान धरुपणि एक ज ताहरो रे, न गमे बीजी वात.
विनति. १७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अम्ह अेक साहिब तुं अवनी तले रे, पाय नमुं करजोडी;
अम्हने तुम्ह विन अवर न को वस्यो रे, पणि तुम्ह सेवक कोडी.
विनति. १८

सूरज उगे पश्चिम जो कदा रे, डोले मेरु गिरिंदः
ध्रुंव चले जो उत्तर दिशि थकी रे, ताप करे जगि चंद.
विनति. १९

सायर रेले सगली भोमिका रे, बोले मृषा हरचंद;
तोहि खिण अेक तुम्ह उपर थकी रे, नवि उतरे चित्त जिणुंद.
विनति. २०

तुम्ह चरणां तले मनडुं महारुं रे, थाप्यो श्री जिन भाण;
तुम्ह आगलि कहिंइ ते सवि कारिमुं रे, तु जाणे जाण सुजाण.
विनति २१

दूहा :

साहिब तुज दीदारनी, मुजने छे बहु खंति;
पणि किम उंचातरू तणां, फल वामन पामंति.
विनति. २२

प्रीति मली तुम्हस्यु घणी, अवर न कोई सुहाय.
तुं मुज खिण खिण सांभरे; श्री सीमंधर जिन राय.
विनति २३

तुम्ह सज्जन सरीखो नहि, नहि बीजासु प्रीति,
रतन अमोलिक पामिने, कांच धरे कुण चित्त.
विनति २४

तुम्हस्युं बांधी प्रीतडी, उत्तम जाणि जाण,
जो जाणो तो पालजो, नहींतर तुम्ह कल्याण.
विनति २५

उभा ने बेठा थकां, सुतां जागतां थकां,
श्री सीमंधर जिन सांभरे, खिण खिण हियडा मांहि.
विनति २६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ढाळ— बीजी राग केदारो

मान सरोवर हंसलो रे, सालरि जिम गयंद,
जिम राधा गोविंद, जिनेसर तुम्हसुं प्रीति अपार,
तुम हो जगदाधार, हवे करजो सेवक सार. जिने. आंचली

चातक जिम जगि मेहलो रे, जिम चकोर चंद,
कोयल मास वसंतने रे, चक्रवाक दिणंद. जिने. २७

म कर समरें मालतिरे, सतीय समरे निज कंत,
तिम हुं समरुं निसिदिने रे श्रीसीमंधर भगवंत. जिने. २८

मन पसरें जिम माहरो रे तिम जो कर पसरिंत,
तो हुं जिनजी ईहां थकी रे, तुम्ह चरणे लागि रहंत, जिन. २९

दिसि वंदन प्रभु हुं करु रे, नितु उठी परभाति,
ते दिन कहिइ आवसी रे, जई भेटुं श्री भगवंत. जिने. ३०

दूहा ४

सुपनंतरी प्रभु तुं मिले, तो मनि हरखे अपार;
जागंतां तुज विहर थकी, वरसें आसु धार. ३१

थोडे कहे घणुं प्रीछजो, तुम्ह पासे छे जीव;
मन जाणें उडी मिलुं, पणि दैव न दीधी पांख. ३२

वाट विषम परवत घणा, दूर विदेशे वास,
साहिब तुज मिलवा भणी, कहो किम पहोंचे आश. ३३

मनडुं माहरुं टलवलइ, तुम्ह मिलवा जिनराय,
सेवक तो परवसी थया, संग नथी मिलणांय. ३४

हुं तुज समरुं अहनिसें तुम्हो सेवक नांणो चित्त,
एक पखीई इम प्रीतडी, किम चाले भगवंत. ३५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ढाळ चोथी—राग कालहरो

सेवक साथे प्रोतडी, प्रभु पाली जे सारी रे,
संभारो अम्ह अवसरे, मम मेलो वीसारी रे. सेवक. ३६

नर उत्तम जिनजी तुम्हो, श्रीसीमंधर जिनराजो रे,
आज अम्हनें छेह आलता, स्युं प्रभु मन मई न लाजो रे, सेवक. ३७

हुं तुम्ह उपरि आवटुं, समरि गुण चित्ते रे,
पणि तुम्हो जाणो नहो, ए दुःख साले नित रे. सेवक. ३८

सुहणामांहि सुतां थकां, सांभरे तुज सनेहो रे,
उसीसे आंसु झरे रे, जाणे अषाढी मेहोरे. सेवक. ३९

ते आगलि काहिई किसुं, नर होइं जेह अजाण रे,
अम्ह आगलि कहिइं घणुं, तुं जिन त्रिभुवन भाण रे. सेवक. ४०

दूहा ५

प्रभु में तुजने ओळख्यो, शास्त्र तणो आधार,
तिण मुज उलट उपनो, देखण तुज दीदार. ४१

अवर देव जगति तले, तिहां लगें लागें चंग,
जिहां लगें तुज गुण नवि सुण्या, हैडई आणी रंग. ४२

कृपानिधि किंकर तणी, अवधारो अरदास,
साहिब तुम्ह पद पंकजे, देज्यो मुजने वास. ४३

पंख पसाइं पंखिया, जइ व्हाला भेटंति,
परवश पडिया मानवी दूर रह्या झुरंति. ४४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ढाळ पांचमी—राग मारुणी

तुं जिन पूज्यो के नवि में मन भावस्युं रे,
के लोपी तुज आंण, के कहेना रे बाल विछोह्यां मातथी रे, ४५
कें में केहनी मूकी थांपणि, ओलविरे के में कूडा कलंक;
दीधा रे दीधा रे माहोमांहि वढतां थकां रे. ४६
कें में बालादिक हेले त्रासव्या रे, तिण पापे जिनराय,
मुजने रे मुजने वियोग थयो, प्रभु तुम्ह तणो रे. ४७
दुषम काले मानव भव में लहयो रे, पणि तुज दरिसर दूर,
ते माटे रे ते माटे भवनो पार किम पामीई रे. ४८
साधुधर्म श्रावक धरम न को कर्यो रे, नहीं मुज दान ने पुण्य,
जिनवर रे जिनवर भाषित धर्म न को कर्यो रे. ४९
पंच समिति त्रिण गुपति नवि सुधि धरी रे,
नहीं बलि महाव्रत शुद्धि, पोते रे पोते केणी पर भवि हुसी रे. ५०
तिण पगि लागी, वलि वलि विनवुं रे,
श्री सीमंधर राय, राखो रे राखो सेवक शरणे आपणे रे. ५१
कृपा करीने विनति, भोरी मानजो रे,
अमने छे विश्वास, तरशुं तरशुं केवल नामे तुम्हतणे रे. ५२

दूहा ६

आज नहीं काले मिले, काले नहीं तो आज,
ईण परी दहाडा निगमुं, आस्याहि जिन राज. ५३
आस्या अेण संसारमां, विरही जिव आधार,
आस्या विलुद्धा मानवी जोवें वरस हजार. ५४
अंतर गति आलोचतां, जहिं प्रभु विरह लगार,
हृदयकमलमां तु वसे, पणि संदेसे विवहार. ५५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ढाळ छट्ठी—राग धन्यासरी ६

अधिकुं ओछुं प्रभुजी जे लिखतां लख्युं रे, प्रबल प्रीति विशेष;
चित्तमां रे चित्तमां प्रभु म आंणेस्यो अबोलडा रे. ५६

आसो पुनिम पूरण पेखी चंद्रमाहे, समरी श्री जिन लेख,
लिखिउ रे लिखिउ माजिझम राते खातिस्युं रे. ५७

श्री तपगच्छगगनगण भास दिनमणि रे श्री विजयदेवसूरि;
सोहे रे, सोहे चढते पखि जिम चंद्रमारे. ५८

तस पटधारी श्री विजयसिंहसूरीश्वरु रे, युवराजा मुनिराज रे.
राजे रे राजे रे श्री सीमंधर विनति रे. ५९

साधुपुरंदर बुध श्री लब्धिचंद्र शोभता रे, जग मांहि जसविख्यात
तेहनो रे तेहनो शिष्य गुणचंद्र हरखे भणे रे. ६०

कळश

इति संप्रति सोहे भविक मोहे विहरमान जिनेसरो,
संकट चूरे आसपूरे, नाथ सिरि सीमंधरो,
महाव्रत व्योम मुनि सोम मेळी जाणि एह संवच्छरो.
जीर्णगढ चोमासे मनह उल्लासे, थूण्या में परमेश्वरो. ६१

इति श्री सीमंधर लेख संपूर्ण शुभ भवतु. कल्याणमस्तु

ढाळ १

परम योगीसरा जाणि जझायं तिजं, परम पुण्येण मणसाविपायंति
मुणविइयदेहगेहं मिलायंतिं जं, चारु निय चित्त पुमेस ठाय तिजं
सयल मुरनायगा सदसिगायंतिजं, जोडिकरिजुयलवन्नति दायंतिजं,
मुरख परमग्ग सुहवगा जायंतिज, मिच्छादि दिग पावणे दूरि
हायंतिजं.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

असुर सुर सामिणो काम मुच्चंतिजं, भत्तिदधूण सुहणसि सच्चतिजं
भवीअणा महीअणो कहवीमुच्चंतिजं, मोहलो हाइणोणेवमुचतिजं.
जोयम चारु मायदत रुचीरजं, लध्ध संसार पाणीय नही तीरजं.
दलीयभव्वाण पुहकम्म जंजीरजं, कहीय वस्त गुहज्ज गंभीरजं.
पसमीय पाव सुयणांणसारीरजं, जिणवर सुगुण सेयास नववारजं.
थुणह तु सामी सीमंधर नीरज, तस्सणा हस्सयण मत्र पय नीरजं.

ढाळ २

(अमीज समाणी वाणी वरसती ए ढाल)

मोह महीपति वसि करी आपणई, पाम्या पंचम नांण,
त्रसनई थावर प्राणी पलाववा, वरतावी जगि आण.
सुगुण तुम्हारा हो जिनजी मई सुण्या, उपनो अधिक आणंद,
अहनिसि हइजो नयन चकोर तां, चाहिण तुझ मुख चंद.
धन जयवंतजी विजय पुष्कलावती, धन धन पूरव विदेह,
धन सा नयरीजी वर पुंडरीगिणी, धन श्रेयांस नृपगेहो.
धन धन जन निजी सताकी कूखडी जेणि जायो जग अवतंस
जग जण बंधूर पहु सीमंधरो, मुनि मन मानस-हंस.
राज रमा रुधि रस संसारनी, हय गय वरह भंडार,
क्षिण एक मांहि क्षण भंगर लही, कीधो सवि परिहार
करम निकाचीत कंद निकंदीआ, ग्रही तप कठिन ठाकुर,
पंथ मुगतिनु पर पुष्कल कर्यो, कारण विश्वोपगार.
निरमल केवलज्ञान अलंकर्या, परिहरी दोस अठार,
सपर्व सुरासुर तव आवी करई, केवल उत्सव सार.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मणि कंचणमय रचना रतनी, त्रिगडई दीपइ सार,
रचि सिंहासन सोवन मय ठव्युं, मणि गणि खचित उदार,
चुमुखि शुगय दुखु विहंडणो, तिहां वईठो बलवंत,
भेद धरमना चिहु पंखि भविक नई, भाखइ श्री भगवंत.
धन ते भवि अण जननी जाईआ, जें तुम्ह वाणी सुणंत,
सांभली जे पणि साची सदही, धन तुहवयण कुणंत,
तुह पय पंकज अहनिसि सेवना, मधुकर परितुहपासि,
चरण रजोरसि सिर पावनकरइ, धन ते मुनि गुण रासि.

ढाळ ३

(देस सोरठ द्वारापुरी ए ढाल—राग देशाख)

मई प्रसु मधुकर वंछीई, तुह्म पद पद्म पराग रे,
पणि सुभकर मधुकर विना, कहुं किम लहीई लागे रे.
चतुर चेतो दधि चंद्रमा, मुनि मन-कोकिल अंब रे,
सीमंधर सुर शेखरो, योगी दवनि वलंब रे.
रोरी जन घनपति तणी, प्रभु-तुलणा किम आवइ
तिम जन पार्यि पूरीआ, तुहम दरिसण किम पावइ
पंगु पुरुष सुरगिरि चढी, किम सुरतरु कल लेवई रे,
तिम विभगा नर किम विभो, तुहम चरणाम्बुज सेवि रे
हवइ प्रभु सुणि अेक वीनंती, मोह महीपति व्यापई रे,
त्रिभोवन मांहि घणो करई, जनन अधिकई संताप रे.
वली रे विशेषइ तुह्म तणो, नियमन मांहइ संभावाइ रे,
भरतनी भूमि मांहि रहिओ, आपणो आण चलावई रे.
नयरी अविद्या नामईवली, तेणिं वासि असराल रे,
गढ अज्ञान भोटो करिओ, तृष्णा खाडी विशाल रे,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नरय तिरिय मणु देवनी, गति रयारइ वडी पोली रे.
कामासन अयसी रयार जे, ते करी चहुटानी ओलि रे.
मंदिर मोटां तिहां लहयां, असुभासन परिणाम रे,
भूरि भवंतर सरडी, कुड कुबुद्धि कुइ ठाम रे.
विषय व्यापति आराम तो, मचता पादूनी देवी रे,
कुमत सरोवर तिहां कर्यु, ममता पालि कवेवी रे.
तिहा जन वसइ अविचारिआ, राजा महामोह नाम रे,
दूर मतिराणी तेहनी, जेठो सुत तसु काम रे,
रागद्वेष सुत लहूअठा, मिथ्या दरसन मंत्री रे.
आक कारण राणो रांणि मिली, मारि अघ्रति निंदा पुत्री रे,
क्रोध नइ मान दंभ लोभ मिली, चयार गहीधर थापइ रे,
सात व्यसन सातई अंग कर्या निर्गुण सभा तणुं व्यापरे.
दुरित सिंहासन तेहनु, अमरख धरइ सिरि छत्ररे,
रति नई अरति यामर चामर धरई, कोल कमत बाल मित्ररे.
पुरोहित छद्म सेल्होत ते, मद परमादत लाह रे,
पर परिवाद फेरा उवो, पाखंडी परिहार रे.
आलस दलपति तेहनु कीधो कुकवो सुआर रे
परिग्रह सकल भंडार भर्यो, कलि कंदल ते कोठार रे.
साल कर्यो हास सोक दो, थई धर अभिनव वेश रे,
ईम रे आरणि उलव्यो रे, तेणि पुर मोह नरेश रे.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ढाळ ४

(दवदंती पुहवि पडो-ओ ढाल—राग सिंधूउ)

मोह महाभड राजीओ, ईम त्रिभोवनि व्यापई रे,
कांई व्यापइ नइ थापइ आण जे आपणीए प्रवचन नगरी प्रभुतणी,
जन तेहनां वासी रे, कांई वासी नइ वीसासी के भोलव्याए,
निज महिं ताणी खूंपीआं केई सुत नइं भोलव्यारे भोलव्या रे,
रंकपरि भोलाव्या रे. १

केइ तहलार वसि पाडीया रे, केई महाधरइ लीधां रे
लीधा नइ दीधा के पुत्री करईरे, लोक तुमारा इम विभो,
बहु दीसइं छइं फरीया रे, फरिया नइ वसिया बहुपरि रे,
तुम्ह आगम आराधतां, के निज मति मोह्या ,
मोह्यां नइ जोया बोल नहीं खराए, आगम तणि प्रभु तणा
तिहां पहिलु ते अत्रा रे, अत्रानई अणतरा परंपराए, २

अदीठपणइ पूरव पुरुषे आचरणा भाखी रे,
भाखी नहीं साखी निज वाणी करीए, तेहनि एक मानइ नहीं,
एक दिग पट कहावइं रे कहावइं, नई भावइ तिम चालइ वरीये,
एक पल्लव करी पडिकमई, एक थापनी उथापई रे. ३

उथापी नइ थापई बोलते निज मतिए निज निज छंदि चालता,
इम माहोमांहे निंदइरे निंदइ नइ वंदइ नहीं अे मुनि प्रतिअे. ४

★

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(ढाळ ५)

(राग गूडी)

मुजनि पणि महाराजा रे, मोह महीपति स्वामी हु' नडीउ घणुंए,
नयरी अवद्या मांहि वसि करी आणीए, दीओ मिथ्थात मंत्री करइए.

कुमत सरोवर मांहि तेणि जीलाडीओ, ऊपरणाम धरिवासीओए,
निद्रा अघृति मारि बेटी मोहनी, तेह सुमन रंग पासीओए.

छद्‌म पुरोहित पासि रे नित मलतो रहुं निगुण सभाई परवर्या,
महा धरस्युं मनमेलि प्रमाद तलवरि चरण क्रियादिक धन हर्युंए.

सुत जेठो जे काम तेह नईवसि पडयो पदि पदि पातिक बांधीया रे,
प्रगट अनई प्रछन्न जे मइं बहु कीआं श्रेणि तणी परिसंधीआरे.

देखो नव नव रूप मनिसु परवसि पणई वचनि मुखरीयल कर्याए,
सेव्या शरीरइ पाप पर रमणि तणां तास वचनि निज मन ठर्याए.

करी न कारव्युं कर्म धर्म विरोधीउ, श्रावक नइ मुनिवर तणाए,
खंडया करी उच्चार महाव्रत अणुव्रत किउं विकरा काम घणो.

राग तणई रसि मूठ आरति ध्यानि ए हुं माहरो करंतो फिर्युंए.
द्वेष तणई परभावि जीव अजीवस्युं रद्‌ ध्यान मति पडयोअे.
मोहराय परिवार पार न एणी परइं मइ ते सर्व सगु कर्योए
रमुं निशदिन ते साथ बाथ ग्रहिओ जेम नाथ निरंजन विसर्याए.

१३ ★

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(ढाळ ६)

हमिरानु

(राग धन्यासी)

एणि परिं माहरी विनतिरे, अवधारो अरिहंत जिणंदा,
मोहण अत्यारे, अन्याय बलवंत जिणंदा.
करो कृपा भवि लोकनी रे, भरतनी भूमिपाओ धारुं जिणंदा.
दया करो मुज उपरी रे, मोहनी सेना निवारिं जिणंदा,
अथवा सेवक ताहरो रे, सुभट सोराय विवेक जिणंदा,
प्रभु ताहरो अंग ओलगुंरे, जीपइ एक एनेक जिणंदा.
तेहनु भय छई मोहनइरे, सुरो तस परिवार जिणंदा,
मुज पासइ सोइ मोकलो रे, करु करु सेवक सार जिणंदा.
पुन्य रंग पाटण तेहनु रे, तिहां मुज वास करावि जिणंदा,
मुज विवेक पांहि हवई, मोहनी पीडा वरावि जिणंदा.
वडसुत वयराग तेहनु रे, ते पांहि काम भेदावि जिणंदा,
सवर समरस बिहुं करी रे रागनइं दोस छेदावि जिणंदा.
सुमति राणी नाजाईया रे, ए त्रिण भेडाडी जिणंदा.
ज्ञान तुलार पांहि हविरे, रिपु परमाद छेडावि जणंदा.
ब्रह्म सरोवर तेणई पुरीए पालि भणी नववाडि जिणंदा,
जिणवणो जल पुरीओ, तिहां मुझनि झीलाडि जिणंदा
समकित महिं तु मोकली रे, मूल मिथ्यात गमाडि जिणंदा,
करुणा कुमारी विवेकनी रे, मुझनि तेहसु वधावि जिणंदा.
पुरुषाकार सेनापती रे, आलस दूरि कढावि जिणंदा,
साधु संगति शुभ परषदा रे, नेहस्युं नेह जडावि जिणंदा.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपशम विनय रसलपणुं रे, संतोष महघर रयारि जिणंदा,
तेणि क्रोधादिक कोठीइ रे जयणांइ मारि निवारि जिणंदा.

योगासन चहुटे फरुं रे शुभ...वर साथि जिणंदा,
सुगुण क्रियाणक हरतो रे, क्रिया भरु आथि जिणंदा.

समता चउकी चठीइं जाउंरे, नाटिक भावना बार जिणंदा,
मण मनरंगि करी रें, आगम अरथ भंडार जिणंदा.

सपरिवारइ मुझ कन्हई रे, मोकल्यु राय विवेक जिणंदा,
मुझनि सखायत कारणइं, जिम नासइं मोह सेष जिणंदा.

हुं अपराधी प्रभु तणो रे, पणि तु दीन दयाल जिणंदा,
मात पिता सोइ सासहि रे, करई अपराध जे बाल जिणंदा.

मधुकर जिम मुज मूठ नइं, चरण कम द्योल वास जिणंदा,
सीमंधर पुरिसोतम रे, पुरे मनकी आस जिणंदा.

कळश

ईण विगत वेदी कर्ण भेदी सामिसीमंधर जिणो,
संसार तारक मोह वारक, कवि अजिअ आणंदणो,
श्री भानुमेरु गणेन्दु सेवक विनति अवधारीइं,
कर जोडि नयसुंदर कहई, प्रभु दुक्ख महोदधि तारीइ.

दुहा

सुण सुण सरस्वती भगवती, तारी जग विख्यात.
कवि जननी कीरती वधे, तेम तुं करजे मात. १
सीमंधर स्वामी महाविदेहमां बेठा करे वखाण,
वंदना माहरी तिहां जई, कहेजो चंदाभाण. २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुज हयडुं शंसय भर्युं, कुण आगळ कहुं वात,
जेहशुं मांडी गोठडी, ते मुज न मळे घात. ३
जाणो आवुं तुम कने, विषम वाट पंथ दूर,
डुंगरने दरिया घणा, विचे वहे नदी पूर. ४
ते माटे इंहां कने रही, जे जे करुं विलाप.
ते तुमे प्रभुजी सांभळो अवगुण करज्यो माफ. ५

ढाळ—(कपूर होय अति ऊजळो रे.)

भरतक्षेत्रना मानवी रे ज्ञानी विण मुंजाय;
तिण कारण तुमने कहुं रे प्रभुजी मनमां चाहे रे स्वामि !
आवो ईणे क्षेत्र.
जो तुम दरिसण देखियेरे, तो निर्मळ कीजे मोरा नेत्र रे स्वामि !
आवो ईणे क्षेत्र. १
गाडरियो परिवार मल्यो रे, घणुं करे ते खास,
परीक्षावंत थोडा हुवे रे, शिरधारूं विसवास रे ! स्वामि ! २
धरमीनी हांसी करे रे, पक्ष विहूणो सिदाय,
लोभ घणी जग व्यापियो, तेणे साचो नवि थाय रे स्वामि ! ३
समाचारी जुई जुई रे सहु कहे माहरो धर्म;
खोटो खरो किम जाणिये रे; ते कुण भांजे भरम रे स्वामि ! ४

(ढाळ २)

वीरप्रभु ज्यारे विचरता, त्यारे वरतती शांति रे;
जे जन आवीने पूछतां, तेहनी भांजती भ्रांति रे.
है है ज्ञानिनो विरह पडयो. है० १
ते तो दहे मुज दुःख रे; स्वामिसीमन्धरा तुज विना.
ते तो कुण करे सुख रे, है० २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भूलो भमे रे वाडोलीआ; जिहां केवळी नांही रे;
विरहीने रयणी जासी रे; तीसी मुज घडी जाय रे. है० ३
वात मुखे नवनवी सांभळी, पण निरती नवि थाय रे
जे जे दुर्भागीया जीवडा, ते तो अवतरीया आंही रे, है० ४
धन्य महाविदेहना मानवी, जिहां जिनजी आरोग्य रे,
नाण दर्शन चरण आदरे, संयम लिये गुरुयोग रे, है० ५

ढाळ ३

सीमन्धरस्वामि ! तुं गुरु ने तुं देव,
तुम विणु अवर न ओळगुं रे, न करुं अवरनी सेव रे,
अहिं या कने आवजो वळी, चतुर्विध संघ रे साथ लावजो. अहि० १
ते संघ केणु किरिया करे ? किणी परे ध्यावे ध्यान,
व्रत पच्चक्खाण केम आदरे ? किणी परे देवे दान रे अहिं० २
इहां उचित कीरति घणी रे, अनुकंपा लवलेश,
अभय सुपात्र अल्प हुवा रे; एवा भरतनो देश रे. अहिं० ३
निश्चय सरसव जेटलो रे, बहु चाल्यो व्यवहार,
अभ्यंतर विरला हुवा रे, झाझो बाह्य आचार रे. अहिं० ४

ढाळ ४

सीमन्धर ! तुं माहरो साहिव, हुं सेवक तुज दास रे,
भमी भमी भव करी थाकियो, हवे आव्यो शिवराज रे. सी० १
इण वाटे वटेमारगु नावे, नावे कासीद कोई रे
कागळ कुण साथे पहोंचाडुं, हुं मुंझयो तुम मोहे रे. सी० २
चार कषाय घटमां रह्या व्यापी, रातो इन्द्रिय रसे रे,
मद कोह पण क्यारे व्यापे, मन नावे मुज वसे रे. सी० ३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुष्णानुं दुःख होत नहि मुजने, होत संतोषनुं ध्यान रे,
तो हुं ध्यान धरत प्रभु ताहरुं थिर करी राखत मन रे. सी० ४
निवड परिणामे गोठडी वांधी, ते छूटुं किम स्वामि ! रे,
ते हुं नर तुजमां छे प्रभुजी, आवो अमारी कने रे. सी० ५

ढाळ ५

सीमन्धर जिन एक कहे, पूछे तिहांना लोक रे,
भरतक्षेत्रनी वारता, सांभळे सुरनर थोक रे. १
त्रिजो आरो बेठा पछी, जाशे केटलो काळ रे.
पद्मनाभजी होशे, ज्ञानी झाकझमाळ रे. २
छठे आरे जे होशे; ते प्राणिना वहु पाप रे.
शाता नहि रे एक घडी, रविनो झाझेरो ताप रे. ३
ओछुं आयु माणस तणुं, मोटुं देवनुं आय रे.
सुख भोगता स्वर्गनां सागर पल्योपम जाय रे. ४
सरागिने एम कहे, तुम तारो भगवंत रे,
आपथी आप तरे इम सुणजो सहु संत रे. ५

ढाळ ६

एह सूत्रमां जीव ते पामे सांभळी रे म कर हवे जीव विखवाद
जे रे तें पुण्य पूरव कीधां नहि रे, तो किहांथी पहोंचे आस,
जिनजी किम मळे रे. १
कहे भोळा सुख ले रे, तुं सरागी प्रभु वैरागीमां पडो रे;
किम आवे प्रभु आंहि जिनजी० २
चोळ मजीठ सरिखो जिनजी साहिबो रे, तुं गळीनो रंग;
कट काच तणो मूळ तुजमां नहि रे, प्रभु नगीनो रंग. जि० ३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सीमन्धर सरिखो भोमियो रे, श्रीभगवंततुं, तो साखी तोल;
सरीखां सरीखे, विण केम आजे गोठडी रे, तुं हृदय विचारी बोल ४
करम साथे लपटाणो तुं जिहां लगे रे, तिहां लगे तुजने कास;
समतानो गुण ज्यारे तुजमां आवशे रे, तिहां रे जइश प्रभुनी पास
जिनजी० ५

ढाळ ७

सीमन्धरस्वामितणी गुण गाळ्या जे नर भावे भजशे रे;
तस शिर वैरी कोई नहीं व्यापे, कर्मशत्रुने हणशे रे. हमचडी०
हमचडी मारी हेल रे, सीमन्धर मोहन वेल रे;
सत्यकी राणीनो नंदन निरखी, सुख संपतनी गेल रे. हमचडी०
सीमन्धरस्वामि शिवपुर गामी, कविता कहे शिरनामी;
वंदणा माहरी हृदयमां धारी, धर्मलाभ द्यो स्वामि रे. हमचडी०
श्री तपगच्छनो नायक सुंदर श्रीविजयदेव पटोधर रे;
कीर्ति जेहनी जगमां गाजी, बोले नर ने नारी रे. हमचडी०
श्रीगुरु वयणसुणी बुद्धि सारुं, सीमन्धरजिन गायो रे.
संतोषी कहे देव गुरु धर्म, पूरव पुण्ये पायो रे. हमचडी०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री सीमन्धर जिननी पत्र रूपे बिनती

ढाळ १

(सुमतिनाथ गुणशुं मिलीजी–ए देशी)

स्वस्ति श्री पुकूखलवईजी, विजये विजय करंत;
प्रगटभरी पुंडरीगणिजी, जिहां विचरे भगवंत;
सोभागी जिनवर सांभळजो संदेश, हुं तो लेखे लखुं लववेश,
मुज तुज आधार जिनेश, साहिबजी सांभळो मुज संदेश. १

सीमन्धर जिनवर राजीयाजी, विहरमान चरणान;
भरतभूमिथी विनवि येज भाविक लोक भगवानरे. सो० २

अत्र कुशळ कल्याण छे जी, तुम प्रसादे जिनराज;
पण जे तुज विजोगडोजी, ते पीडे मुज आज. सो० ३

तुं जगजीवन जाणीयेजी, सोभागी शिरदार;
तुं वैरागी वाहलोजी, मुज चित्त चोरणहार. सो० ४

तुं त्रिभुवन भूषण भलोजी, भंजे भव भय भीड;
तुज विण कुण आगळ कहुंजी, मुज मन केरी पीड. सो० ५

तुम गुण कोडी गमे घणाजी, जिम जिम समरुं महिन;
तिम तिम विरहानव जलेजी, ज्युं घृत सिंच्यो वहिन. सो० ६

विरह व्यथा व्याकुळपणेजी, जीव पडे जंजाळ;
रति चिंता अरति करीजी, दिवस गमाया आळ. सो० ७

धन्य वेळा धन्य ते घडोजी, जिहां देखुं तुम मुख नूर;
दुःख दोहग दूरे करूंजी, प्रह उगमते सूर. सो० ८

विरह तप उपशामवाजी, अमृत सम अणमोल;
वल्लभ ! वळते कागळेजी, लखजो टाढो बोल. सो० ९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुम गुणगण गंगाजके, झीले मुज मन हंस,
पण तुज विरहे पीडीयो, जिम मधुसूदन कंस. १
गुण फीटी अंगार हुए, हियडुं डजझे तेण;
अवगुण नीर न सांभरे, ओलावी जे जेण. २
संदेशे सज्जन तणे, जीवे मास छ मास;
दूर देशातर वासीया, संदेशे सुख वास. ३

(ढाळ २)

(सुण जिनवर शत्रुंज्य धणीजी—ओ देशी)

धन्य ते दिन जिन ! जाणीये जी, जिहां तुमशुं संजोग;
संपजशे सोभागीयाजी, टळशे वेर विजोग;
करो जिन ! सेवक जन संभाळ,
तुम हो दिन दयाल, करो० तुम विण कवण कृपाल. करो० १
अण दिठे अलजो घणोजो, दीठे नयण ठरंत;
मुज मन केरी प्रीतडीजी, तुं जाणे जयवंत. करो० २
तिण कारण जिन ! दीजीयेजी, निज दरिसण एकंत;
तुम विण मुज मन टळवळजी, नयणां नीर झरंत. करो० ३
नयणे तुज दरिसण रुचेजी, श्रवणे वयण सुहाय;
मन मिलवाने टळवळेजी, कीजे कोडी उपाय. करो० ४
जिम मन पसरे माहरुंजी तिम जो कर परसंत;
तो हुं हरखी दूरथीजी, तुम चरणे विलगंत. करो० ५
पुण्यवंत ते पंखीयाजी, पग पग जेह पेखंत;
फरी फरी देता प्रदक्षिणाजी, पूरे मननी खंत करो० ६
तुज दरसिण विण जीववुंजी, ते जीवन मरण समान;
अहवा मरण थकी घणुंजी जाणुं अधिक सुजाण. करो० ७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूज्यो प्रणम्यो संथुण्योजो, तुं गायो गुणवंत;
जेणे तुं नयणे निरखीयोजी, तस जीवित फलवंत. करो० ८
ते दीन कबही आवशेजी, मुज मन ठारणहार;
तुज मुख चंद निहालताजी, सफळ करीश अवतार. करो० ९

दुहा

अंतरीया बहु डुंगरे, तह रूकखेहिं घणेहिं;
ते सज्जन किम विसरे, जे सघळा गुणेहिं. १
प्रीति भली पंखेरूआ, उडी जेह मिलंत;
माणस परवश बापडा दूर रह्या झुरंत. २
दीठा मीठा तिहां लगे, हरिहर अवर अनेक;
जिहां लगे तुम गुण नवि सुण्या, हीयडे धरीय विवेक. ३

(ढाळ ३)

(सहसु भवेगी सुंदर आतमाजी—अे देशी)

जिनजी सुणजो हो मुज मन वातडीजी, रातडी रोतां जाय;
दिवस गमीजे हो प्रभुजी झुरतां जी, तुम विरहो न खमाय. जि० १
पूरवविदेहे हो धन्य जे जनाजी, नितु सेवे तुम पाय;
अभ पुनः स्वामी हो जेह विछोहडोजी, ते अम पाय पसाय जि० २
परभव परिगल पातिक जे कर्यां जी, ते प्रगटया सवि आज;
जेणे तुंम हुं पामुं नहिजी, तुम शुं छे मुज काज.
तुम हो गरीब निवाज. जि० ३
प्रवचन वचन विराधन मे कर्युं जी, न धरी सद्गुरुशिख;
के में रमतां ऋषि संतापीयाजी, के भांजी ऋषि भिख जि० ४
चारित्र लेई हो वेष विराधीयाजी, के में छांडी दिक्ख;
के में बाळक मायथी विछोहीयाजी, के में फोंडो लीख. जि० ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के में वनमें दव धरमे दीयाजी, के में गाळ्या गाभ;
के में कूडां कामण केळव्याजी, जिणे त्रटत्रट त्रुटे आभ. जि० ६
के में फोडी सरोवर पाळ, गुहिरा द्रह शोषावियाजी;
बंभण वाळक स्त्री गोवध कीधांजी, पाडचां माछीए जाळ जि० ७
इति परेपरे पातक जे कर्यां जी, तस फळ पाम्यो आज;
जेणे तुम हमथी दूर देशांतरेजी, जइ वस्या जिनराज. जि० ८
वचन सुधारस सिंची ठारीयेजी, विरह दावानळ दाह;
अब थें हमकु दरिसण दीजयेजी, हम तुम दरिसण चाह. जि० ९

दुहा

मनह मनोरथ जे करे, ते पूरण असमत्थ;
स्वर्गे सुरद्रुम मंजरी, त्यांहि पसारे हत्थ. १
फिट हियडा फूटे नहि, हजी नहि तुजने लाज;
जीव जीवन विछोहडे, जीव्यानुं कुण काज. २
माणसथी माछा भलां, साचा नेह सुजाण;
जयु जळथी होय जुजुआ, त्युं ते छंडे प्राण. ३
सहस वहे संदेशडो, लेख लहे लख मूल;
अंगो अंग मेळावडो, सुरतरु फूल अमूल. ४

(ढाळ ४)

(सुत सिद्धारथभूपनो रे–अे देशी)

अमृत समरे अमर जय रे, जिम रति समरे काम;
माधव मन जिम राधिका रे, जिण लखमण श्रीराम रे,
जिम गुण सांभरे, सीमन्धरजिनराय रे सगुण न विसरे. जि० १
सामज समरे सल्लकी रे, सारंगी सारंग;
तारापति जेम तारिका रे, जिम मृग राग तरंग रे जि० २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिम गंगा गंगाधरो रे, विधि सावित्री रे संग;
जिम गंगाजल हंसलो रे, ईश्वर गोरी सुरंग रे. जि० ३

पृथ्वी पाणी प्रीतडी रे, जिम चंदन ने नाग
जिम रजनीकर रोहिणी रे, जिम दिन दिनकर रे जि० ४

जिम मधुकर मन मालती रे, जिम मोरा मन मेह;
जिम कोकिल कल कामिनी रे, सरस रसाल स्नेह रे. जि० ५

विरही समरे व्हाला रे, शीलवंती निज कंत;
फागणमां फाग वियोगमां रे, जिम वनराजी वसंत रे. जि० ६

जिम यदुपति राजीमती रे, जिम गौतम श्रीवीर;
नल-दमयंती नेहलो रे, सासो सास शरीर रे. जि० ७

तिम मुज मन तुजमें रमें रे, प्रीतम प्रेम प्रमाण
स्वामी नाम तुमारडुं रे, अहनिश समरीये झाण रे, जि० ८

एहवी मुज भोलातणी रे, भक्ति भलेरी रे भाव;
करुणावंत कृपा करी रे, मुज मनमंदिर आव रे, जि० ९

आवो अति उतावळा रे, आतमना रे आधार;
करशुं भक्ति भलेरडी रे, लेशुं भवजल पार रे. जि० १०

सेवक मत विसारजो रे, स्वामि ! सुख दातार;
सेवक सेवा मन धरी रे, करजो सेवक सार रे जि० ११

दुहा

मोर मेह रवि कमल जिम, चन्द्र चकोर हसंत;
तिम दूरथी अम मनह, तुम समरण विकसंत १

अणी संभार्या सांभरे, समय समय सो वार;
ते सज्जन किम विसरे, बहु गुण मणि भंडार. २

बमणी त्रिगणी सोगुणी सहस गुणी ए प्रीत;
तुम साथे त्रिभुवन धणी, राखुं रूडी रीत. ३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आंख तळे आणुं नहि, अवर अनेरा देव;
साहिब जब थे में सुण्यो, तुंहि देवाधिदेव. ४
भूतले भला भलेरडा, जे जाणी जें जाण;
ते सघळा अे तुम पछी सीमन्धर जगभाण. ६

ढाळ ५

(जिहां लगे आतम द्रव्यनुं—ए—देशी)

निःसनेही तुम ही भये, न्यायी नाथ निरीह;
नेह करी कुण निरवहे, जावज्जीव निश दिह. नि० १
साजन भाजन भोजने, युगति प्रीत जगाय;
नेह करतां सोहिलो, पण निरवाहो न थाय. नि० २
जगमां विरला जाणीये, सयल अखंड स्नेह;
संपदि आपदि सारीखा, छांडी न दीये छेह. नि० ३
तुम म्होटा हुं नानडो, युं दिल में मत आण,
सूरज पंकज प्रीतडी, उत्तम ने अहिनाण. नि० ४
वड तरुअर छाया करे, राय रंक समान;
तिम तुम हम उपर धरो, परिगल प्रेम समान.
ज्युं वाधे हम वान. नि० ५

दुहा

निःसनेही सुखीया रहे, वेलु कण ज्युं होय;
ससनेहा तिल पीलीए, दही मथे सब कोय. १
नेह न कीजे जिहां लगी, तिहां जीवते सुख होय;
नेह विरह जब उपजे, तब दुःख साले सोय. २
निरगुण नेह न कीजीये, कीजे सद्गुण संग,
सीन्मधर जिन सरीसो राखुं अधिको रंग. ३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ढाळ ६

सीमन्धर जिन विनति, अवधारो मोरी,
किंकर कर जोडी करुं हुं सेवा तोरी. सी० १

अम्ह मन प्रेम अखंड अे, तुम शुं जिनराज,
अवर भलेरा निज घरे, नहि कांई काज. सी० २

मेरु महीधर मूळथी, कंपे कोई काळे,
अंबर ग्रह गण पूरीयो, पेसे पायाले. सी० ३

सकल कुलाचल हलहले, महो मंडळ डोले,
श्री हरीश्चन्द्र नरिन्द्र ज्युं, जगे जूठुं न बोले. सी० ४

अमृत विष धारा वमे, सागर भू रेले,
सूरज पश्चिम उगमे, गंगा हर मेले. सी० ५

तोहे हुं छांडुं नहि, तुम शुं घणो नेह;
मुज मन एक तुमही हल्युं, गिरूआ गुण गेह सी० ६

अभ सरखा सेवक घणा, ताहरे भगवंत;
पण अम साहिब एक तुं, तुंही ज अरिहंत. सी० ७

दुहा

किं कागळ में लिखुं, लख लालच बहु लोभ;
मिल्या पछी मालुम थशे, चिर थापण चिर थोभ १

किं बहु मीठे बोलडे, जो मन नहि सनेह;
जो मम नेह अछेह तो, एक जीव दो देह. २

किं बहु कागळ में लिखुं, घणुं घणेरू गुज्झ;
सेवा निज पद कमलनी, देजो साहिब मुज्झ. ३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ढाळ ७

(आले आले त्रिशलानो कुंवर—ओ देशी)

जगजीवन जिन राजीयाए, सीमन्धर सुख कंद;
हरखे हियडुं उल्लसे ए, दीठे दीठे तुम मुख चंद.
सीमंधर साहिब समरीए ए, समय समय सो वार. सी० १
करशुं कोडी वधामणां ए, जपशुं जय जय कारे;
मंगल तूर वजावशुं ए, सकल करुं अवतार. सी० २
लाखेणां करुं ऊछणां ए, भरी मुगताफळ थाळ;
जब सो नयणे निरखशुं ए साहिब देव दयाळ. सी० ३
एह जो मुज मन चिंतव्युं ए सफल होशे जिणीवार;
तव हुं जाणीश मुज सारीखोए, कोई न ईणे संसार. सी० ४
अम प्रणाम अवधारजो ए; केवळ कमला कंत;
संघ सकळनी वंदनाए जिहां विचरे तुं जयवंत. सी० ५
ईम जिनवर गुण गावतां ए, जिहवा पावन कीध;
मनह मनोरथ सवि फळ्या ए, नरभव लाहो लीध. सी० ६
शिरनामे जिनवर तणे ए; साते सुख श्रीकार;
ईम सीमंधर समरणे ए, घर घर जय जयकार. सी० ७
संवत सोळसे ब्यासीए अे, सुर गुरुवार प्रसंग;
दीवाळी दिवसे लख्यो ए, कागळ मनने रंग. सी० ८

कळश

तपगच्छ गयणं गणदिणयर, सिरिविजयसेण सूरिणं;
सिसेणं संथुणीओ सहरिसं, कवि कमलविजयेण. १
चउतीसाईसय निहिअट्ठमहा, पाडिहेरपडिपुण्णो,
सुर रइअसमवसरणो, तिहुअण जण लोयणाणंदो. २
पुक्खलवइ विजये सामी, पुंडरीगिणीए नयरीए;
सीमन्धरजिणचंदो, विहरंतो देहि में भद्दं ३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ढाळ १

(एक दिन दासी दोडती—अे देशी)

स्वामि सीमन्धरा ! विनति, सांभळो महारी देव रे;
ताहरी आण हुं शिर धरुं, आदरुं ताहरी सेव रे.
स्वामि सीमन्धरा विनति. १

कुगुरुनी वासना पासमां, हरिण परे जे पडया लोक रे;
तेहने शरण तुज विण नहि, टलवले वापडा फोक रे. स्वा० २

ज्ञान दर्शन गुण चरण विना, जे करावे कुलाचार रे;
लूंटे तेणे जन देखतां, किहां करे लोक पोकार रे. स्वा० २

जेह नवि भव तर्या निरगुणी, तारशे केणी पेरे तेह रे;
अेम अजाण्या पडे फंदमां, पाप बंधे रह्या जेह रे. स्वा० ४

काम कुंभादिक अधिकनुं, धर्मनुं को नवि मूल रे;
दोकडे कुगुरु दाखवे, शुं थयुं अेह जग शूल रे. स्वा० ५

अर्थनी देशना जे दीए, ओलवे धर्मना ग्रंथ रे:
परम पदनो प्रगट चोरथी, तेहथी, केम वहे पंथ रे. स्वा० ६

विषयरसमां गृही माचिया, नाचिया कुगुरु मद पूर रे;
धूम धामे धमाधम चली, ज्ञान मारग रह्यो दूर रे. स्वा० ७

कलहकारी कदाग्रह भर्या, थापता आपणा बोल रे;
जिन वचन अन्यथा दाखवे, आज तो वाजते ढोल रे. स्वा० ८

केई निज दोषने गोपवा, रोपवा केई मत कंद रे,
धर्मनो देशना पालटे, सत्य भाषे नहि मंद रे. स्वा० ९

बहु मुखे बोले ऐम सांभळी, नवि धरें लोक विश्वास रे,
ढुंढता धर्मने ते थया, भ्रमर जिम कमल निवास रे. स्वा० १०

ॐ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ढाळ २

(राग गौडी — अरणिक मुनि चाल्या गोचरी)

अेम ढुंढतां रे धर्म सोहामणो, मिलिओ सद्गुरु एक
तेहने साचो रे मारग दाखवे, आणी हृदय विवेक;
श्री सीमन्धर साहेब सांभळो. ११

परघरे जोतां रे धर्म तुमे फरो, निज घर न लहो रे धर्म;
जिम नवि जाणे रे मृग कस्तूरिओ, मृगमद परिमलमर्म श्री० १२

जिम ते भूलो रे मृग दश दिशि फरे, लेवा मृगमद गंध;
तिम जगे ढुंढे रे बाहिर धर्मने, मिथ्यादृष्टि रे अंध श्री० १३

जाति अंधनो रे दोष न आकरो, जे नवि देखे रे अर्थ;
मिथ्यादृष्टि रे तेहथी आकरो, माने अर्थ अनर्थ. श्री० १४

आप प्रशंसे रे परगुण ओलवे, न धरे गुणनो रे लेश;
ते जिनवाणी रे श्रवणे नवि सुणे दिए मिथ्या उपदेश श्री० १५

ज्ञान प्रकाशे रे मोह तिमिर हरे, जेहने सद्गुरु सूर;
ते निज देखे रे सत्ता धर्मनी, चिदानंद भरपूर श्री० १६

जिम निर्मलता रे रतन स्फटिक तणी, तिम जे जीव स्वभाव;
ते जिन वीरे रे धर्म प्रकाशीओ, प्रबल कषाय अभाव, श्री० १७

जिम ते राते रे फूले रातडुं, श्याम फूलथी रे श्याम;
पाप पुण्यथी रे तेम जग जीवने, राग द्वेष परिणाम. श्री० १८

धर्म न कहिए रे निश्चे तेहने जिम विभाव वड व्याधि;
पहेले अंगे रे एणीपेरे भाखियुं, करमे होए उपाधि. श्री० १९

जे जे अंशे रे निरुपाधिकपणुं, ते ते जाणो रे धर्म;
सम्यग्दृष्टि रे गुणठाणाथकी, जाव लहे शिवशर्म. श्री० २०

एम जाणीने रे ज्ञान दशा भजी, रहीए आप स्वरूप.
पर परिणतिथी रे धर्म न छांडिए, नवि पडिए भव कूप. श्री० २१

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ढाळ ३

(रे जीव न मान कीजीये-ओ राग)

जिहां लगे आतमद्रव्यनुं, लक्षण नवि जाण्युं,
तिहां लगे गुणठाणुं भलुं, किम आवे ताण्युं,
आतमतत्त्व विचारीए० २२

आतम अज्ञाने करी, जे भव दुःख लहीए;
आतमज्ञाने ते टले एम मन सद्दहीए. आतम० २३

ज्ञानदशा जे आकरी, तेह चरण विचारो;
निर्विकल्प उपयोगमां, नहि कर्मनो चारो. आतम० २४

भगवई अंगे भाखिओ, सामायिक अर्थ;
सामायिक पण आतमा; धरो सुधो अर्थ. आतम० २५

लोकसार अध्ययनमां, समकित मुनि भावे;
मुनिभाव ज समकित कह्युं, निज शुद्ध स्वभावे. आतम० २६

कष्ट करो संजम धरो, गालो निज देह;
ज्ञानदशा विण जीवने, नहि दुःखनो छेह. आतम० २७

बाहिर यतना बापडा, करतां दुहवाअे;
अंतर यतना ज्ञाननी, नवि तेणे थाअे. आतम० २८

राग द्वेष मल गाळवा, उपशम जल झीलो;
आतम परिणति आदरी, पर परिणामने पीलो. आतम० २९

हुं एहनो ए माहरो, ए हुं एणि बुद्धि,
चेतन जडता अनुभवे, नवि भासे शुद्धि. आतम० ३०

बाहिर दृष्टि देखतां, बाहिर मन धावे;
अंतर दृष्टि देखतां, अक्षय पद पावे. आतम० ३१

चरण होय लज्जादिके, नवि मनने भंगे;
त्रीजे अध्ययने कह्युं, एम पहेले अंगे. आतम० ३२

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अध्यातम विण जे क्रिया, ते तनु मन तोले;
ममकारादिक योगथी, एम ज्ञानी बोले. आतम० ३३

हुं कर्ता परभावनो, ईम जिम जिम जाणे;
तिम तिम अज्ञानी पडे, निज कर्मने घाणे. आतम० ३४

पुद्गल कर्मादिकतणो, कर्ता व्यवहारे;
कर्ता चेतन करमनो, निश्चय सुविचारे. आतम० ३५

कर्ता शुद्ध स्वभावनो, नय शुद्धे कहीए;
कर्ता पर परिणामनो, बेउ किरिया ग्रहीए. आतम० ३६

ढाळ ४

(वीरमती प्रीति कारणी—ए देशी)

शिष्य कहे जो परभावनो, अकर्ता कह्यो प्राणी;
दान हरणादिक केम घटे, कहे सद्गुरु वाणी.
शुद्ध नय अर्थ मन धारीए—ए आंकणी० ३७

धर्म नवि दिए नवा सुख दिए, पर जंतुने देतो;
आप सत्ता रहे आपमां, अेम हृदयमां चेतो. शु० ३८

जोग वशे जे पुद्गळ ग्रह्या, नवि जीवनां तेह;
तेहथी जीव छे जूजूए, वळी जूजूओ देह. शु० ३९

भक्त पानादि पुद्गल प्रते, न दिए छति विना;
पोते दान हरणादि परजंतुने, एम नवि घटे जोते. शु० ४०

दान हरणादिक अवसरे, शुभ अशुभ संकल्पे;
दिए हरे तुं निज रूपने, मुखे अन्यथा जल्पे. शु० ४१

अन्यथा वचन अभिमानथी फरी कर्म तुं बांधे;
ज्ञायक भाव जे एकलो, ग्राहो ते सुख साधे. शु० ४२

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुभ अशुभ वस्तु संकल्पथी, धरे जे नट माया;
तेटले सहज सुख अनुभवे, प्रभु आतमराया. शु० ४३
पर तणी आस विष वेलडी, फले कर्म बहु भांति;
ज्ञान दहने करी ते दहे, होए एक जे जाति. शु० ४४
राग दोष रहित एक जे, दया शुद्ध ते पाळे;
प्रथम अंगे एम भाखियुं, निज शक्ति अजुआले. शु० ४५
एकता ज्ञान निश्चय दया सुगुरु तेहने भाखे;
जेह अविकल्प उपयोगमां, निज प्राणने राखे. शु० ४६
जेह राखे पर प्राणने, दया तास व्यवहारे;
निजदया विण कहो परदया, होए कवण प्रकारे. शु० ४७
लोकविण जेम विण नगर मेदनी, जेम जीव विण काया;
फोक तेम ज्ञान विण परदया, जिसी नटी तणी माया. शु० ४८
सर्व आचारमय प्रवचने, भण्यो अनुभव योग;
तेहथी मुनि वमे मोहने, वली अरति रति शोग. शु० ४९
सूत्र अक्षर परावर्त्तना सरस शेलडी दाखी;
तास रस अनुभव चाखीए, जिहां एक छे साची. शु० ५०
आतमराम अनुभव भजो, तजो परतणी माया;
एह छे सार जिन वचननो, वळी एह शिवछाया. शु० ५१

ढाळ ५

(सुण सोमन्धर साहिबजी ओ देशी)

अेम निश्चय नय सांभळीजी, बोले एक अजाण;
आदरशुं अमे ज्ञाननेजी, शुं कीजे पच्चक्खाण,
सोभागी जिन सीमन्धर सुणो वात० ५२
किरिया उथापी करीजी, छांडी तेणे लाज;
नवि जाणे ते उपजेजी, कारण विण नवि काज. सो० ५३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निश्चय नय अवलंबताजी, नवि जाणे तस मर्म;
छोडे जे व्यवहारनेजी, लोपे ते जिन धर्म. सो० ५४

निश्चय दृष्टि हृदय धरीजी, पाले जे व्यवहार,
पुण्यवंत ते पामशेजी, भवसमुद्रनो पार. सो० ५५

तुरंग चढो जेम पामशेजी, वेळे पुरनो पंथ;
मार्ग तेम शिवनो लहेजी, व्यवहारे निर्ग्रन्थ. सो० ५६

महेल चढंतां जिम नहिजी, तेह तुरंगनुं काज;
सकल नहि निश्चय लहेजी, तेम तनु किरिया साज. सो० ५७

निश्चय नवि पामी शकेजी, पाले नवि व्यवहार;
पुण्यरहित जे एहवाजी, तेहनो कुण आधार. सो० ५८

हेम परीक्षा जेम हुएजी, सहत हुताशन ताप;
ज्ञान दशा तेम परखीए, जिहां बहु किरिया व्याप. सो० ५९

आलंबन विण जिम पडेजी, पामी विषमी वाट;
मुग्ध पडे भवकूपमांजी, तिम विण किरिया घाट. सो० ६०

चरित भणी बहु लोकमांजी, भरतादिकनां जेह;
लोपे शुभ व्यवहारनेजी; बोधि हणे निज तेह. सो० ६१

बहु दल दीसे जीवनांजी, व्यवहारे शिवयोग;
छोंडो ताके पधारोजी, छोडी पंथ अयोग. सो० ६२

आवश्यक मांहे भाखिओजी, अह ज अर्थ विचार
फळ संशय पण जाणतांजी, जाणोजे संसार. सो० ६३

ॐ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ढाळ ६

(मुनिगन सरोवर हंसलो अथवा ऋषभनो वंत रयणायरु-ओ देशी)

अवर ईस्यो नय सांभली, एक ग्रहे व्यवहारो रे;
मर्म द्विविध तस नवि लहे, शुद्ध अशुद्ध विचारो रे. ६५

तुज विण गति नहि जंतुने, तुं जग जंतुनो दीवो रे,
जीवीए तुज अवलंबने, तुं साहिब चिरं जीवो रे. तु० ६५

जेह न आगम वारीओ, दीसे अशठ आचारो रे;
तेहज बुध बहु मानीओ, शुद्ध कह्यो व्यवहारो रे. तु० ६६

जेहमां निज मति कल्पना, जेहथी नवि भव पारो रे;
अंध परंपरा बांधिओ, तेह अशुद्ध आचरो रे. तु० ६७

शिथिल विहारीए आचरियां, आलंबन जे कुडा रे;
नियत वासादिक साधुने, ते नवि जाणीए रूडां रे. तु० ६८

आज न चरण छे आकरुं, संहननादिक दोषे रे;
एम निज अवगुण ओळवी, कुमति कदाग्रह पोषे रे. तु० ६९

उत्तर गुणमांहे हीणडा, गुरु कालादिक पाखे रे;
मूल गुणे नही हीणडा, एम पंचाशक भाखे रे. तु० ७०

परिग्रह ग्रह वश लिंगीया, लेइ कुमति रज माथे रे,
निज गुण पर अवगुण लवे, इन्द्रिय वृषभ नवि नाथे रे. तु० ७१

नाणरहित हित परिहरी, निजदंसण गुण लूसे रे;
मुनिजनना गुण सांभळी, तेह अनारज रूसे रे. तु० ७२

अणुसमदोष जे परतणो, मेरु समान ते बोले रे;
जेहसुं पापनी गोठडी, तेहसुं हियडलुं खोले रे. तु० ७३

सूत्र विरुद्ध जे आचरे, थापे अविधिना चाळा रे;
ते अति निविड मिथ्यामति, बोले उपदेशमाळा रे. तु० ७४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पामर जन पण नवि कहे, सहसा जूठ सशूको रे;
जूठ कहे मुनि वेष जे, ते परमारथ चूको रे; तु० ७५

निर्दय हृदय छे कायमां, जे मुनिवेषे प्रवर्ते रे:
गृही यति धर्मथी बाहेरा, ते निर्धन गति वर्ते रे. तु० ७६

साधुभगति जिनपूजना, दानदिक शुभ कर्म रे;
श्रावक जन कह्यो अति भलो, नहि मुनिवेषे अधर्म रे तु० ७७

केवल लिंगधारी तणो, जे व्यवहार अशुद्धो रे;
आदरीए नवि सर्वथा, जाणी धर्म विरुद्धो रे. तु० ७८

ढाळ ७

(आगे पूरव वार नवाणु--अे देशी)

जे मुनिवेश शके नवि छंडी, चरण करण गुणहीणाजी,
ते पण मारग मांहे दाख्या, मुनिगुण पक्षे लीणाजी;
मृषावाद भवकारण जाणी, मारग शुद्ध प्ररूपेजी,
वंदे, नवि वंदावे मुनिने, आप थई निज रूपेजी, ७९

मुनि गुण रागे पूरा शूरा, जे जे जयणां पाळेजी,
ते तेहथी शुभ भाव लहीने, कर्म आपणां टाळेजी;
आप हीनता जे मुनि भाखे, मान सांकडे लोकेजी,
ए दुर्द्धर व्रत एहनुं दाख्युं, जे नवि फूले फोकेजी. ८०

प्रथम साधु बीजो वर श्रावक त्रीजो संवेग पाखीजी,
ए त्रणे शिव मारग कहीए, जिहां छे प्रवचन साखीजी,
शेष त्रण भव मारग कहीए, कुमत कदाग्रह भरियाजी,
गृहि यति लिंग कुलिंगे लखीए, सकल दोषना दरियाजी. ८१

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जे व्यवहार मुगति मारगमां, गुणठाणाने लेखेजी,
अनुक्रमे गुणश्रेणिनुं चढवुं, तेह ज जिनवर देखेजी,
जे पण द्रव्यक्रिया प्रतिपाले, ते पण सन्मुख भावेजी,
शुक्लबीजनी चंद्रकला जेम, पूर्ण भावमां आवेजी, ८२

ते कारण लज्जादिकथी पण, शील धरे जे प्राणीजी,
धन्य तेह कृतपुण्यकृतारथ महानिशीथे वाणीजी:
ए व्यवहारने मन धारो, निश्चयनय मत दाख्युंजी,
प्रथम अंगमां वितिगिच्छाए, भावचरण नवि भाख्युंजी. ८३

ढाळ ८

(चोपाईनी देशी छे.)

अवर एक भाखे आचार, दया मात्र शुद्ध ज व्यवहार;
ने बोले तेहज उत्थापे, शुद्ध करुं हुं मुख इम जपे. ८४

जिनपूजादिक शुभ व्यापार, ते माने आरंभ अपार;
नवि जाणे उतरतां नई, मुनिने जीयदया कयां गई. ८५

जो उतरतां मुनिने नदी, विधि जोगे नवि हिंसा बदी;
तो विधि जोगे जिन पूजना, शिव कारण मत भूलोजना ८६

विषयारंभतणो ज्यां त्याग. तेहथी लहिए भवजलताग;
जिनपूजामां शुभ भावथी विषयारंभ तणो भय नथी. ८७

सामायिक प्रमुखे शुभ भाव, यद्यपि लहिए भयजल नाव;
तो पण जिनपूजाअे सार, जिननो विनय कह्यो उपचार. ८८

आरंभादिक शंका धरी, जो जिनराज भक्ति परिहरी;
दान मान वंदन आदेश तो तुज सवलो पड्यो क्लेश. ८९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वरूपथी दीसे सावद्य, अनुबंधे पूजा निर्वद्य;
जे कारण जिनगुण बहुमान, जे अवसरे वरते शुभ ध्यान ९०

जिनवर पूजा देखो करो, भवियण भावे भवजल तरी;
छकायना रक्षक हो वली, एह भाव जाणे केवली. ९१

जल तरतां जल उपर यथा, मुनिने दया न होए वृथा;
पुष्पादिक उपर तिम जाण पुष्पादिक पूजाने ठाण. ९२

तो मुनिने नहि किम पूजना, एम तुं शुं चिंते शुभ मना,
रोगीने औषध एह सण, निरोगी छे मुनिवर देह. ९३

ढाळ ९

(सुण सीमन्धर साहिबाजी ओ देशी)

भावस्तव मुनिने भलोजी, बेउ भेदे गृही धार;
त्रीजे अध्ययने कह्योजी, महानिशीथ मझार.
सुणो जिन तुज विण कवण आधार–ए आंकणी ९४

वळी तिहां फल दाखियुंजी, द्रव्यस्तवनुं रे सार;
स्वर्ग बारमुं गेहिनेजी, एम दानादिक चार. सुणो० ९५

छठे अंगे द्रौपदीजी, जिन प्रतिमा पूजेय;
सूरियाभपरे भावथीजी, एम जिनवर कहेय. सुणो० ९६

नारद आव्ये नवि थईजी ऊभी तेह सुजाण;
ते कारण ते श्राविकाजी, भाखे आळ अजाण. सुणो० ९७

जिनप्रतिमा आगळ कह्योजी, शक्रस्तव तेणे नार;
जाणे कुण विण श्राविकाजी, एह विध हृदयविचार. सुणो० ९८

पूजे जिन प्रतिमा प्रीतेजी, सूरियाभ सुरराय;
वांची पुस्तक रत्ननांजी, लेई धर्म व्यवसाय. सुणो० ९९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रायपसेणी सूत्रमांजी, म्होटो एह प्रबन्ध:
एह वचन अणमानतांजी, करे करमनो बंध सुणो० १००
विजयदेव वक्तव्याताजी, जीवभिगमे रे अेम;
जो थिति छे ए सुरतणीजी, तो जिनगुणथुति केम. सुणो १०१
सिद्धार्थ राये कर्याजी, याग अनेक प्रकार;
कल्पसूत्रे एम भाखियुंजी, ते जिनपूजा सार. सुणो० १०२
श्रमणोपासक ते कह्याजी पहेला अंग मझार;
याग अनेरा नवि करेजी, ते जाणो निरधार. सुणो० १०३
एम अनेकसूत्रे भण्युंजी जिनपूजा गृहिकृत्य:
जे नवि माने ते सहीजो, करशे बहु भव नृत्य. सुणो० १०४

ढाळ १०

(जंसुरंसधा सा सुरसंधा–ए देशी)

अवर कहे पूजादिक ठामे, पुण्यबन्ध छे शुभ परिणामे;
धर्म इहां नवि कोई दीसे, जेम व्रत परिणामे मनहीसे. १०५
निःश्चय धर्म न तेणे जाण्यो, जे शैलेशी अंत वखाण्यो;
धर्म अधर्म तणो क्षय कारी, शिव सुख देजे भव जल तारी. १०६
तस साधन तुं जे जे देखे, निज निज गुणठाणाने लेखे;
तेह धरम व्यवहारे जाणो, कारज कारण एक प्रमाणो. १०७
एवंभूत तणो मत भाख्यो, शुद्ध द्रव्य नय एम वळी दाख्यो;
निज स्वभाव परणति ते धर्म, जे विभाव ते भावज कर्म. १०८
धर्म शुद्ध उपयोग स्वभावे, पुण्य पाप शुभ अशुभ विभावे;
धर्म हेतु व्यवहार ज धर्म. निज स्वभाव परिणतिनो मर्म. १०९
शुभयोगे द्रव्याश्रव थाय, निज परिणामे न धर्म हणाय;
यावत् योग क्रिया नहि थंभी तावत् जीव, छे योगारंभी. ११०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मलिनारंभ करे जे किरिया, असदारंभ तजीने तरिया;
विषय कषायादिकने त्यागे, धर्म मति रहीए शुभ मागे. १११
स्वर्ग हेतु जो पुण्य कहीजे, तो सराग संयम पण लहीजे;
बहु रागे जे जिनवर पूजे, तस मुनीनि परे पातक धुजे. ११२
भावस्तव एहथी पामीजे, द्रव्यस्तव अे तेणे कहीजे;
द्रव्य शब्द छे कारण वाची, भमे म मूलो कर्मनिकाची. ११३

ढाळ ११

(दान उलट धरी दीजीअे अे देशी)

कुमति एम सकल दूरे करी, धारीए धर्मनी रीत रे;
हारीए नवि प्रभु बळ थकी, पामीए जगतमां जित रे
स्वामिसीमंधर तुं जयो-ए आंकणी० ११४

भाव जाणे सकल जंतुना, भुव थकी दासने राख रे;
बोलिया बोल जे ते गणुं, सकल जो छे तुज साखरे स्वा०
एक छे राग तुज उपरे, तेह मुज शिवतरु कंद रे;
नवि गणुं तुज परे अवरने, जो मिले सुर नर वृंद रे. स्वा०
तुज विना में बहु दुःख सह्यां, तुज मिल्ये ते केम होयरे
मेह विण मोर माचे नहि, मेह देखी नाचे सोय रे. स्वा०
मनथकी मिलन में तुज कियो, चरण तुज भेटवा सांई रे;
कीजिए जतन जिन ए विना, अवर न वांछिए कांई रे स्वा०
तुज वचन राग सुख आगळे नवि गणुं सुर नर शर्म रे;
कोडी जो कपट कोई दाखवे, नवि तजुं तोए तुज धर्म रे स्वा०
तुं मुज हृदयगिरिमां वसे, सिंह जो परम निरीह रे;
कुमत मातंगनां जूथथी, तो कशी प्रभु मुज बीह रे ? स्वा०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कोडी छे दास प्रभु ताह रे, माहरे देव तुं एक रे;
कीजिए मार सेवक तणी, ए तुज उचित विवेक रे. स्वा०
भक्ति भावे इस्युं भाखीए, राखीए अेह मनमांही रे;
दासनां भव दुःख वारिए; तारिए सो ग्रही बांही रे. स्वा०
बाळ जिम तात आगळ कहे, विनवुं हुं तिम तुज रे;
उचित जाणो तिम आचरुं, नवि रह्यो तुज किस्युं गुज्जरे. स्वा०
मुज होजो चित्त शुभ भावथी, भवोभव ताहरी सेव रे;
याचीए कोडी यतने करी, एह तुज आगले देव रे. स्वा०

कळश

ईम सकळ सुखकर दुरित सयहर, विमळ लक्षण गुणधरो;
प्रभु अजर अमर नरिंद वंदित, विनव्यो सीमंधरो
निज नाद तर्जित मेघ गर्जित, धैर्य निर्जित मंदरो;
श्री नयविजय बुध चरण सेवक, जशविजय बुध जय करो.

श्री युगमन्धर जिन स्तवन

(१)

वप्रा विजय विजयापुरी माता सुतारा नंद लाल रे;
तारक त्रिभुवन लोकनो अवतर्यो करुणा कंद लाल रे
अकल अरूपी मन वस्यो० १
सुदृढ कर्मोने हणे, रोपी चरण-रणथंभ लाल रे;
प्रिय मंगल प्रिय लोफने, प्रिय मंगल वई अचंभ लाल रे
ऋद्धि अनंती भोगवे, भोगरहित भगवान लाल रे;
वरण गंधादिक गुण विना, गुणवंत तनु
कंचनवान लाल रे. अकल० ३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काम दहे कामित भरे, धरे योग अयोगी थाय लाल रे;
करे क्रिया अक्रिय वरे, अक्षर पण लिपि वडे न लखाय लाल रे
अकल० ४

गज लंछन दुःख भंजनो, श्री युगमन्धर नाह लाल रे;
क्षमाविजय जिन सेवना, शिव सुंदरी विवाह लाल रे. अकल० ५

(२)

काया पामी अति कूडी, पांख नहीं आवुं उडी, लब्धि नहीं कोई रूडी रे;
श्री युगमन्धरने कहेजो के, दधिसुत विनतडी सुणजो रे श्री० युग १
तुम सेवा मांहे सुर कोडी, ते ईहां आवे एक दोडी;
आश फले पातिक मोडी रे श्री युग० २
दुषम समयमां एणे भरते, अतिशय नाणी नवि वरते;
कहीये कहो कोण सांभलते रे; श्री युग० ३
श्रवणे सुखीया तुम नामे, नयणां दरिसण नवि पामे
ए तो झगडाने ठामे रे. श्री युग० ४
चार आंगल अंतर रहेवुं, शोकलडीनी परे दुःख सहेवुं;
प्रभु विना कोण आगळ कहेवुं रे. श्री युग० ५
म्होटा मेळ करी आपे, बेहुने तोल करी थापे;
सज्जन जस जगमां व्यापे रे. श्री युग० ६
बेहुनो अेक मतो थावे, केवळनाण युगल पावे;
तो सवि वात बनी आवे रे. श्री युग० ७
गजलंछन गजगति गामी, विचरे वप्रविजयस्वामी;
नयरी विजया गुण धामी रे. श्री युग० ८
मात सुताराए जायो, सुदृढ नरपति कुल आयो;
पंडित जिनविजये गायो रे. श्री युग० ९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री अनंतवीर्यस्वामिजीनुं स्तवन

(१)

अनंतवीरज अरदास सुणोने माहरी,
मीठडी सूरती खास चाहुं छुं ताहरी;
ऐरावत गति अेक अछे गज साहरी,
दिजे दरिशण तुरत ज देव दया करी. १
समरुं ताहरुं नाम सरागे फरी फरी,
जाणे लहुं जगदीश वडारी चाकरी;
निर्गमीये दु:खकाळ ईस्यो एह किण परी,
धार न खंचे जेह थयो जन आतुरी. २
धन्य जळचरनी रीत बनी जें आकरी,
जळ विरहो न खमाय जे जाये ते मरी;
ग्रारथीया संभाळ न कीधी को खरी,
जाणीसा ते प्रीत हमाशुं ऊतरी. ३
निवसो तुमची सेव कृपाने अनुसरी,
पाळो प्रीतम प्रीत मयूरा घन परी,
लेखे ते बहुं मोल गणुं एका-धरी,
जब प्रीतमनो संग भजुं हइडे ठरी. ४
मुंह टाळो दे जाय धरामां ते ठरी,
न हुवे तसु धरि आपी प्रगोढी हाथरी:
नयण कटोरी प्रेम सुधारसशुं भरी,
कान्ति मिल्यो प्राणेश रूडो धंरी चातुरी. ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२)

अनन्तवीरज अरिहंत ! सुणो मुज विनति,
अवसर पामी आज हुं आव्यो दिल छांति;
आतमसत्ता हारी संसारे हुं भम्यो,
मिथ्या अविरति रंग कषाये बहु दम्यो. १

क्रोध दावानळ दग्ध मान विषधर डस्यो,
माया जाळे बद्ध लोभ अजगर ग्रस्यो;
मन वच कायाना, योग चपळ थया परवशा,
पुद्गळ परिचय पापतणी अहनिश दशा. २

कामरागे अणनाथ्या, सांढ परे धस्यो,
स्नेहरागनी राचे, भव पिंजर वस्यो;
दृष्टिराग रुचि काम, पास समकित गणुं,
आगम रीति नाथ ! न निरखुं निजपणुं. ३

धर्म देखाडुं मांड, भांड परे अति लपुं,
'अचरे अचरे राम' शुक्र परे जपुं
कपट पटु नटुआ परे मुनिमुद्रा धरुं,
पंच विषय सुख पोष सदोष वृत्ति भरुं. ४

एक दिनमां नव वार 'करेमि भंते' करुं,
त्रिविध त्रिविध पच्चखाणे क्षण एक नवि ठरुं.
मा साहस खग रीति नीति घणी कहुं,
उत्तम कुलवट वाट, नते पण निरवहुं. ५

दीनदयाळ ! कृपाळ ! प्रभु महाराज छो,
जाण आगळ शुं कहेवुं ? गरीब निवाज छो;
पूरव घातकी खंड विजय नलिनावती;
नयरी अयोध्या नायक लायक यतिपति. ६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेघ महीप मंगलावती सुत विजयापति,
आनन्द गज लंछन जगजनता रति;
क्षमाविजय जिनराज ! अपाय निवारजो,
विहरमान भगवान ! सुनजरे तारजो. ७

श्री विंशविहरमान स्तवन

सीमन्धर युगमन्धर बाहु ! चोथा स्वामि सुबाहु;
जंबूद्वीप विदेहे विचरे, केवळ कमला नाउरे भविका,
विहरमान जिनवंदो.
आतम पाप निकंदो रे, भविका विहरमान जिनवंदो. १
सुजात स्वयंप्रभ श्री ऋषभानन अनंतवीरज चित्त वरीये;
सुरप्रभ श्री विशाळ वज्रधर चंद्रानन घातकीये रे भविका
विहरमान जिन० २
चंद्रबाहु भुजंग ने ईश्वर, नेमिनाथ वीरसेनः
देवजसा चंद्रजसा जितवीर्य पुक्खरद्वीप प्रसन्न रे भविका
विहरमान जन० ३
आठमी नवमो चोविश पचविशमी, विदेह विजय जयवंता;
दशलाख केवळी सो क्रोड साधु, परिवारे गहगहंता रे भविका
विहरमान जिन० ४
धनुष पांचसे ऊंची सोहे, सोवन वरणी काय;
दोष रहित सुर मही महीतल, विचरे पावन पाया रे भविका
विहरमान जिन० ५
चोराशी लाख पूरव जिन जीवित, चोत्रिश अतिशय वारी;
समवसरण बेठा परमेसर, पठिवोहे नरनारी रे भविका;
विहरमान जिन० ६
खिमाविजय जिन करुणासागर, आप तर्या पर तारे;
धर्मनायक शिव मारग दायक, जन्म जरा दुःख वारे रे भविका
विहरमान जिन० ७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ श्री सीमंधरजीनो वृद्धस्तवनं ॥

मारी विनतडी अवधारो साहिब सीमंधर महाराज ।
त्रिभुवन साहिब अरज सुणीजो अरज सुणीजो महिर करीजो
दरसण दीजो राज मारी वि० ॥१॥

आप वस्या महाविदेह खेतरमें । हुइण भरत मोजार ।
ओमेलो किम होवे साहिब । एही सबल विचार मा०वि० ॥२॥

भरत विचाले परवत आमो । नामे वैताढय सार ।
पचीश जोजनको उंचो बे प्रभु । पचास जोजन विस्तार ।
मा०वि० ॥३॥

गंगा सिंधु देानुं नदीयां । आमीबे किरतार ।
सहस अवावीसबो नदीयां । एवे उंचो विस्तार । मा०वि० ॥४॥

इणी आगळ परवत आमो । नानो हिमवंत नाम ।
अेक सहस्र बलिबावन जोजन बार कला अभिराम मा०वि० ॥५॥

खेत रहेमवंतवलि प्रभु आवो । जुग ज्यां केरो वास ।
ईकवीस सै वलि पांच योजन । पाच कलासु विलास मा०वि० ॥६॥

रोहितारोहितांसानाम । नदियाबे असराल ।
बप्पन सहसवलि बीजी नदियां । आव्युं केम दयाल । मा०वि० ॥७॥

महाहिमवंत परवत आमो । मोटो अतिविस्तार ।
प्यार सहसदोय सैदसजोजन । दसकला मनुहार । मा०वि० ॥८॥

आव सहस सतच्यार अनोपम । इकवीस जोजन तास ।
एककला बलिरूप आनोपम । खेतरवे हरीवास । मा०वि० ॥९॥

हरिकंतानेहरिसलीला नदीयाबे परतक्ख
बीजी नदीयां आमी को प्रभु । सहसबार एकलम्ब मा०वि० ॥१०॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परवतनिबधको वलि आमो । जोयणबलिविसतार ।
सोलसहस सतआवयालीस । दोयकलामनुहार मा०वि० ॥११॥
खेतरबे वलि जुगत्यां केरो । देवकुरु इणनाम ।
ते विण जोयण बहुविस्तारे । पोलोबे सुणो स्वाम मा०वि० ॥१२॥
सीतानामे नदीवमेरी । सब नदीयां सोरदार ।
पांच लाख बलि बीजी नदीयां । अने बतोस हजार मा०वि०॥ १३॥
लाख जोजनको मेरु परवत । नाम सुदर सणसार ।
गजदंता बलि च्यार बीचमे । आउं केम कृपाल मा०वि० ॥१४॥
वनगिरीने परवत बहुला । नदीयां ओघटघाट ।
किण विधि आवुं सुगुणा साहिब । मारग विषमी वाट मा०वि०॥१५॥
कंचन गिरि वखारा परवत, गजदंता गिरिराय !
भद्रसालबन मारग विचमे । लागे के मलपाय मा०वि० ॥१६॥
क्यां मुज देश वे भारतखेतर । क्यां पुखलावती जिनराज ।
ओमेलो किम ठोसी साहिब । तारणतरण जिहाज मा०वि०॥१७॥
निस दिन मारे तुंही आलंबन । वासीयो हृदय मोजार ।
भवमुख भंजन तुंही निरंजण । करूणा कला भंकार मा०वि०॥१८॥
मन वंबित सुख संपत्ति दाता, प्रभु शाहेब को खास ।
मुजने सेवक साचो जाणी, पुरोमननी आस माप दीत मा०वि०॥१९॥
खरतर हरख गुरु सुप साये । रूपचंद गुणगाय ।
अगरचंदको श्री जिनवरजी । तारो दीन दयालाय मा०वि॥२०॥
संवत् अढार से इकवीसे । पोस वदी शुभ मास ।
बीज मइ बुधवार अनोपम, जिनपद वंदन मास मा०वि०॥२१॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री वीमागाय नं ३

पूरव देशई साण कुंण, पउ चलवइ वजीया ।
नयरी पंडर गुण हृदति, श्रीमंधर सूणीया ॥
चउरासी लख पूरव आवि, सउ वमइ काया ।
उंच पण उंचइ धनक पांच, सेवइ श्रीराया ॥
जयवंता जग वीचरताए केवल दीपक देव ।
श्री श्रीमंधर स्वामीया, दीज्यउ तम्ह पाय सेव ॥१॥
वीस पुरव कुअरवास, भगवीय जिणेसर ।
चउसठ पूख राज रीध, पाली अलवेसर ॥
मनसो वृत जिह श्री वहरमांन महीपहाइ सिख्या ।
उमाहइ ओलग करउंए सुणज्यो बीआचंद ।
वंदण म्हारी वीनमऊं, श्रीमंधर जय चंद ॥२॥
आठ क्रम नइ च्यारइ कषा, अढारइ दोसा ।
हेलइं छांडी लहयउ न्याय, चोगीसइ अंतसा ॥
समोसरण जणवर नंदइ, उवेखइ धर्म ।
भवीयण नउं सुणउ हेवइं सवि क्रम ॥३
भरह खेत्रनी संग सवीए वांदुं तम्ह असीस ।
रीखभणइ धर्म लाभहाउ, पुरउ संघ जमीस ।
पगे पया मांणसे लोई, संवांयेत वांय वंदामइ ।
१६५८ वरसे श्रावण सुद १० वार आदीत ।
इंगणोद लखतं सीमा जगा जइवंत ॥४

(पत्र १, भा. ३ प्रति सं. १०८१२ श्री अभयजैन ग्रंथालय)

★

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ढाळ १

चंदाजी हो म्हे अरिहंत जीरा, ओलगू हो राज
थे छो परमदयाल नाम कोनी राज
अरें हांजी हांजी कोनो राज, सीमंधर जी नै कोहनी राज
वैर मान जिणद नै को नी रा, मन मोहन प्रभु नै कीनो राज
इण ग्यानी गुरु नै कोनै राज, अब कौंड्यू नर भव सफलौ
याद जायकौनी राज ॥१

आंकणी

चंदाजी हौ सूतां सुपनै संभरै हौ राज जीव पडैरै जंजाल जाय कौनी राज अरे हांजी हांजी चंदा जी हो राति दिवस जपतौ रहुं होरा मेहां चात्रक मोर जाय कौ. अरे हो ॥२॥

चंदाजी हो सममुख दरसण दाखवां हौ राज,
नयणे दोइ करै रे निहोर जाय. अरे हा. ॥३

चंदाजी हो मनसुध माहरे मने हो राज ।
कदेइ न लोपुं कार जाइ. को अरेहा ॥ ४

चंदाजी हो सेवक जगरूप वीनवै हो राज
आवगमन निवारजाइ को अरेहा ॥५ इति श्री सीमंधर

भा. ६ पत्र–१ प्रति सं. १०८०६ श्री अभयजैन ग्रंथालय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ढाळ–पंछीडा री

चंदलिवा जिण जो सूं कहे मोरी वंदना रे
जिणवर जंगम सोमंधर सामी रे चितथी यउ एक ॥

अथ श्रीसीमन्धरयुगन्धरस्तवः ।

भवपङ्कपतज्जन्तु–जातोद्धारधुरन्धरौ ।
स्तुवे जिनौ विदेहस्थौ, सीमन्धरयुगन्धरौ ॥१

स्वामिताङ्कितयूयं याः, प्रजास्ता भाग्य भाजनम् ।
भावेनोपासितयुवान्, स्तुवे सेवकपुङ्गवान ॥२

प्रथमं शिबिकारूढव्यूढयुवाभिर्नृभिस्तपस्यायाम् ।
इन्द्रेभ्योऽप्यखिलेभ्यः प्राधान्यं प्राप्यते स्म खलु ॥३

अव०—स्वामितयाङ्कितौ—चिह्नितौ युवां यासां ताः, परत्वाद् युवादेशं बाधित्वा यूयमादेशः । उपासितौ युवां यैस्तान् 'शसो नः' ।२।१।१७। 'युष्मदस्मदोः' ।२।१।१०। इत्याः भहुव्रीहिबहुत्वेपि युष्मच्छब्दन्य द्वित्वेषि वृतेः 'मन्तस्यः' ।२।१।१०। इति युवादेशः । एवमग्रेतनेष्वपि प्रयोगेषु ॥२ प्रथ. शिबिकायाप्ययानं, तत्रारूढौ व्यूढौ युवां यैस्तैः । न च व्यूढेत्यत्र विपूर्लो वहतिर्विवाहार्थ एव, 'वूढो गणहरसद्दो' तथा 'मुणिवूढो सीलभरो' व्यूढशब्दस्य वहनार्थस्यापि प्रयोगाणां दर्शनात् । इन्द्रा अपि हि 'मनुष्योद्भवाः जिना' इति मनुष्याणामेव प्रथमं याप्ययानवहनानुमति ददति ॥३

याचकेभ्योऽपि भद्रं स्ताद्, वार्षिकत्यागपर्वणि ।
स्वहस्तदायकीभूत–युवभ्यं वाञ्छितावधि ॥४

अव०—याच०–'तभ्दद्रायुष्य०' ।२।२।६६। इति चतुर्थी ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

याचकानामाशीर्दानहेतुरूपं विशेषणमाह–स्वहस्तेन दायकीभूतौ युवां येषां तेभ्यः । वाञ्छितमवधिर्यस्मिन् स्वहस्तदाने तत् । गङ्गायां बहुमानातिशयातन्मृत्तिकापि यथा बहुमान्या तथा स्वहस्तदायकीभूत-यूयं याचका अपीतिभावः ॥४

प्रदक्षिणीकृतयुवत्, केवलिभ्यो भवत्सभाम् ।
संश्रितेभ्यो विदुः स्पष्टं, के न वैनयिकक्रमम् ॥५

अव०—दक्षिणां प्रगतौ प्रदक्षिणौ, 'प्रात्यवपरि०' ।३।१।४७। इति समासः । अतौ तौ क्रियेथे स्मेति प्रदक्षिणी–कृतौ, प्रदक्षिणी-कृतौ युवां यैस्तेभ्यः, 'गम्ययपः कर्म.' ।२।२।७४। इति पञ्चमी, भ्यसो 'ङसेश्चाद्' इति अद् । विनय एव वैनयिकं 'विनया-देरिकण' ॥५

स्वविहारक्रमपावकयुवाकमुर्वी महाविदेहानाम् ।
स्पृहयेद् बुधो न कस्कः सदावहन्मोक्षनगरपथाम् ॥६

अव०—स्वविहारस्य क्रमेण–परिपाटया, पावकौ–पावित्र्यकारकौ युवां येषां विदेहानां तेषां, भरतैरावतेभ्यो महत्त्वात् महान्तश्च ते विदेहाश्च महाविदेहाः । एकपदव्यभिचारेऽपि विशेषणसमासो दृश्यते । यथा शेषाहिः, अब् द्रव्यं पृथिवी द्रव्यमित्यादि । बहु-वचनं चात्र सीमंधराधर्हच्चतुष्टयविहारकल्याणकादियोगहेतुकान् अन्यक्षेत्रातिशायिनः स्याद्वादनीत्या कथञ्चिदभिन्नान् महाविदेहानां बहून गुणान् सूचयति । सदा वहन् मोक्षनत्ररष्य पथो यस्यां तां, वहति सार्थ इत्यादिष्विवअत्र वहिरकर्मकः सातत्यगमनार्थः, अविच्छन्नमुक्तिगच्छलैकजनाश्रितत्वेन उपचारात् मुक्तिमार्गोपि वहलुच्यते, मञ्चाः क्रोशन्तीत्यादिवत् ॥६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवतीर्णतरूणतरणिप्रभास्वरथुवासु भूमीषु ।
तिमिरं न संशयमयं तिष्ठति भव्याङ्गिहृदयगतम् ॥७

अ०—तवतीर्णौ तरुणतरणिप्रभो प्रभास्वरौ युवां यासु विदेह-भूषु तासु । अत्रापि प्राग्वत् गुणबहुत्वसूचनार्थं बहुवचनम् ।७।

अन्योऽन्यापमित युवां, युवां जिनाधीश्वरौ ? विजेज्याथाम् ।
आव्योमसोमसूर्य महाविदेहाभरणभूतौ ।८।

अव०—अन्योऽन्येन कृर्त्नभूतेन उपमितौ युवां ययोस्तौ सम्बोधने, विपूर्वाज्जिज्जधातोर्यङ्लुपि 'प्रकृतिग्रहणे पङ्लुबन्तस्यापि ग्रहण' मिति न्यायात् पञ्चम्या आत्मनेपदीययुष्मदर्थे द्विवचनं । आ व्योमसोमसूर्येभ्यः आ० 'पर्यपाङ्बहिरच पञ्चम्या' इत्यव्ययीभावः' ।३।१।३२।

सीमन्धरप्रभुयुगन्धरनामधेयौ,
भक्त्या स्तुतौ जिनवरो युगपन्मयेति ।
अत्राप्यवाप्तजनुषः सुकृताऽऽशिषं त्वां,
दत्तां मम प्रमदतो नमतोऽनुवेलमः ॥९

इति युष्मच्छब्द द्विवचन बहुव्रीहि बहु व प्रयोगगर्भः श्रीसीमन्धर-युगन्धरस्तवोऽष्टमः ॥९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री सीमन्धर जिनवर स्तवनं

(१)

श्री सीमन्धर गुणमणिआकर, नमिये निज शिर नामीरे;
भवभय भंजन मनमथगंजन, जग जीवन शिवगामी रे. ॥१

दयालराय त्रिभुवनतारक जाण्यो रे,
भव भव चरण शरण मोहितो रे. अैसो माये मन मान्यो रे.
॥दया० ॥२

क्षेत्र विदेहं विजय पुखलावती, पुंमुरीकनि पुरी रायारे;
श्रेयांश घरे सत्यकी पटराणी, तासनुयरे प्रभु आयारे ॥दया ॥३

वृषभलंबन मिशि सेवतो जिनपाय, तजि कटि मनको मानरे;
सहस अढार शीलंगर पधारक, केवलज्ञान जगे भानुरे ॥दया० ॥४

विहर मानतीत्थंकार पेखे, सोवन वन्न शरीर रे;
चंमतीरथे ठवणा आकारे, मंदरगिरि जिम धीर रे. ॥दया० ॥५

धनधन ते नरनारी जाणो, जे तुम सेवे याय रे;
देशना सुणे निरंतर अहनिशि, आणी मनशुं भाय रे. ॥दया० ॥६

निशिदिन नाम जपुं तुम जो, आणी मन आणंदरे
श्री समरचंइ पभणे इम साहिब, मधुकर जिम अरविंदरे.
॥दया० ॥७ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२)

(देशी की चाल)

सीमन्धरजी से वंदना, नित हो तो जो हमारी रे ।
परम पुरुष जी से वन्दना, नित हो हमारी रे ।
मन वच काय त्रिके करो, सेवा चाहूं तुम्हारी रे । सी० १

तुम तो महाविदेह मां वसो भरत मां बैठा रे,
मनडो चाहे ऊडी मिलूं जायके पद भेटूं रे । सी० २

यहां तो आरो पांचमेां, तिहां चौथो आरो रे,
तुमे तिहां सुख भोगवो, हमको न संभारो रे । सी० ३

विद्या जंघाचारिणी, कोई लब्धि न दीसे रे जेहथी,
प्रभु पद भेटिये, मनडो घणो हींसे रे । सी० ४

बीज तणो जे चाँदलो, तेनी साथे हमारी रे ।
जाई पोंचेगी वंदना सुन लिजो संभारी रे । सी० ५

नंदन श्री श्रेयांसनो, अंगज सतकीनो रे,
रूकमणी राणीनो बालमो इजो ऋषभ नगीनो रे । सी० ६

स्वपनान्तर प्रभुजी मिल्या भयो परम आनन्दोरे बुध,
जसवंतसागर तणो जाई नीक सु नोंको रे ।।सी० ७ ।।इति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३)

(उत्तराध्ययने बोल्या सोळेमजी ए राह)

श्री सीमन्धर तमशुं प्रीतमीजी, में कीधी चित्तलाय;
दूरि रह्यां ते नवि विसरे जी, नेहवीयो वाधे रे सवाय, ॥१॥
ए मनमुंने मोह्युं रे जिनजी तें माहरू जी, जिम चकोर चित्त चंद,
मानने लीधे रे हिममुं उल्लसेजी,
पेख्ये पर मावंद. ए मनमुं ॥२॥
अलजोने आवे रे अंगे अति घणुंजी, इट वसंते रे वात;
दर्शनीनु देखमो रे एकवार आवीनेजी,
पूरो मारा मननी रे आश. ए मनमुं. ॥३॥
संदेशा कहावुं रे दिन सास लगनेजी, जो चाले रे कोइ साथ;
विसमीने वाटे रे पंथि कोइ नवि वहेजी,
ते जाणे जगनाथ. ए मनमुं. ॥४॥
मन तन वचने रे साजन तुं सहीजी, निश्चय ने व्यवहाद;
जीवन जीवथी रे प्राही वालहो जी,
तुं मुज प्राणाणार. ए मनमुं ॥५॥
साजन तुमारे रे जिनजी बे घणाजी, मुज मनि तुं जगदीश;
रागी ने कुरागी रे सरीखा लेखवोजी,
ते देखी चढे मुज रीश. ए मनमुं ॥६॥
आकी दोने राखी रे प्रीतमी पालशुंजी, ते जाणे विशवा रे वीश;
हीये ने तुमारारे रूसा गुण वश्याजो,
ते समरूं निशदिश. ए मनमुं ॥७॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुणने तुमारा रे दीसे बे घणाजी, ते कहेतां नावे रे पार;
व्हालेसर विरहो रे सहेतां दोहिलीजी,
हिवे करजो सेवकनो सार. ए मनडुं. ॥८
सुरतरू सरीखा रे जाणो सेवियेजी, वंछित फल दातार;
ए चितडुंने लागे रे ताहरा नाम शुं जी,
ते रहिये संभारि संभारि. ए मनडुं ॥९
कह्यो न लागे रे सघलो कारिमोजी, साहिब तुं रे सुजाण;
तुंलग हमारी रे किम मानो नहींजी,
तुमे अवो गुण जाण. ए मनडुं ॥१०
ए प्रीतमीने कीधी रे गुण तारा सांभलीजी, श्री गुरुजी पास;
रंगभर रातो रे ठाकुर इणिपरे कहेजो,
हिये होशेलील विलास. ए मनडुं ॥११

(४)

(राग भैरव)

सुणो सुणो रे सीमन्धर सुखदातार, माहरा जीवन प्राणाधार सुणो. ॥१
तुम नाम निरंतर हृदय मोजार, मुखें जपतां हुवे हरख अपार सुणो.॥२
तुम वदन पूनम चंहाकार, गति जित्या गज रहे वन ममार. सुणो. ॥३
तुं नृपकारी दातारी अपार, तुं डुखतरूकप्पग कहिये कुगर. सुणो. ॥४
तुं ज्ञानी ध्यानी धरमधार, तुं मनमोहन महिमा भंमार. सुणो. ॥५
हुं निशिदिन समरूं वारंवार, गुण कहेतां कि महि न आवे पारे. सुणो.॥६
ऋषि गकुर एहवो कहे विचार, शिवसुख आपो म लावो वार. सुणो. ॥७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(६)

(श्री श्री सीमन्धर स्वामिजी ए देशी)

प्रभुनाम तु तीय लोक नो, प्रत्यक्ष त्रिभुवन भाण ।
सर्वज्ञ सर्व दर्शी तुम्हे, तुम्हे शुद्ध सुख नी खांणि ॥१
जिनजी वीनती छै एह ॥आंकणी॥
प्रतु जीव जीवन भव्यना, प्रभु मुक्त जीवन प्राण ।
ताहरे दरसन सुख बहुं, तुं ही जगति थिति त्राण ॥२ ॥जि०
तुझ विना हुं चउगति भम्यो, धरयां वेब अनेक ।
निज भाव में परभाव नौ, जाण्यौ नहीं सुविवेक ॥३ ॥जि०
धन तेह जे जितु प्रह समै; देखैं ज जिन मुख चंद ।
तुझ वाणि अमृत रस लही, पामैं ते परमाणंद ॥४ ॥जि०
इक वचन श्री जिनराजनो, नय गमा भंग प्रधान ।
जे सुणै रुचि थी ते लहै, निज तत्व सिद्ध अमान ॥५ ॥जि०
जे खेत्र विचरो नाथजी, ते खेत्र अति सुपसत्थ[1] ।
तुझ विरह जे क्षण जाय छे, ते मानीयैं अकयत्थ[2] ॥६ जि०
श्री वीतराग दंसण विना, वीतोज काल अतीत ।
ते अफल मिच्छा डुक्कडं, तिविहं तिविह नी रीति ॥७ जि०
प्रभु वात मुझ मननो सहू, जागो अछो जगनाथ ।
थिर भाव जो तुमचो लहूँ, तो मिलैं शिवपुर साथ ॥८ जि०
प्रभु मिल्यैं हुं थिरता लहू, तुझ विरह चंचल भाव ।
इक वार जो तन्मय रमूं, तो करू अकल स्वभाव ॥९ जि०
प्रभु अछो क्षेत्र विदेह में, हुं रहुं भरत मझार ।
तो पण प्रभुना गुण विशै, राखूं चेतना[3] सार ॥१० जि०

१. जिस क्षेत्रमें आप विचरते हो, वह क्षेत्र ही सफल हैं। २. अकृतार्थ ।
३ यद्यपि. मैं दूर हूँ, फिर भी प्रभु के गुणों के प्रति मेरी सतत् दृष्टि है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो क्षेत्र भेद टलै प्रभु, तो सरै सगलां काज ।
सनमुखै भाव अभेदता, करि करूं आतम राज ॥११ जि०
पर पूढि ईहा जेहनी, एवडी छई स्वाम ।
हाजर हजूरी ते मिल्यै, नीपजै कितलो काम ॥१२ जि०
इन्द्र चंद्र नरिंद नौ, पद न मागू तिल मात्र ।
मांगू प्रभु मुझ मन थकी, नवि विसरो खिण मात्र ॥१३ जि०
जां[1] पूर्ण सिद्ध स्वभावनी, नविकरि सकूं निज ऋद्धि ।
तां[2] चरण सरण तुम्हारडां, एहीज मुझ नव निद्धि ॥१४ जि०
माहरी पूर्व विराधना, योगे पडयो ए भेद ।
पिण वस्युं धरम विचारतां, तुझ नहीं छे भेद ॥१५ ॥जि०
प्रभु ध्यान रंग अभेद थी, करि आत्म भाव अभेद ।
छेदी विभाग अनादि नो, अनुभवूं स्वसवेद्य ॥१६ ॥जि७
वीनवू[3] अनुभव मीत ने, तूं न करि पर रस चाह ।
शुद्धात्म रस रंगी थयो, कटि पूर्ण शक्ति अबाह ॥१७ ॥जि०
जिनराज[4] सीमन्धर प्रभु, तें लह्यो कारण शुद्ध ।
हिव आत्म सिद्धि निपायवा, सी ढील करीये बुद्ध ॥१८ ॥जि०
कारणे[5] कारज सिद्ध नो, करवो घटे न विलंब ।
साधवी पूर्णानंदता, निज कर्तृ अवलंबि ॥१९ जि०
निज शक्ति प्रभु गुण मै रमै, ते करै पूण.नंद ।
गुण गुणी भाव अभेद थी, पीजीयै सम मकरंद ॥२० ॥जि०
प्रभु सिद्ध बुद्ध महोदयी, ध्याने थई लयलीन ।
निज देवचंद पद आदरै, निव्यात्म रस सुख पीन ॥२१ ॥जि०

१. यब तक । २. तब तक । ३. मैं अपने अनुभव रूपी मित्रको विनती करता हूँ कि तूं पर विषय की इच्छा न कर ।
४. सीमन्धर भगवान् आत्मसिद्धि का अद्भुत कारण है ।
५. कारण रहने पर कार्यसिद्धि करने में कोई विलम्ब नहीं करना चाहिये । अपनी कर्तृत्व शक्ति का अवलंबन कर पूर्णानंद स्वरूप को सिद्ध करना चाहिये ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री वीस विहरमान स्तोत्र

प्रणमवि सरसति पय कमल, विहरमाण जिण वीस ।
सीमंधर जिण वरस धर, युगमंधर जिण राज ॥१
बाहु सुबाहु जिणंद वर, पंचम जिण संजात ।
सयं पहु जिणवर वय नमिस्युं, रिखभाज न सुविशाल ॥२
अनंत वीर्य तिथ्थं करहां, सुरविह मुणिराज ।
वज्रधर चंद्रानन सकल, चंद्र बाहु भुजंग ॥३
ईसर नेमिप्पर्हन मुए, वीरसेन मुहमद ।
देवजस्या जग गुरु नमह, जिणवर जिन वीरिज्ज ॥४
भाषा तासु पिता श्रेयांस वरमाणउं, सुसढ सुग्रीव निसढ तिह जाणउं
देवसेन भूपालोमित्र प्रभु पहु करतिराउ मेघराज महीपलि
विक्खाऊ विजयनाम नर पालो ॥५
श्री श्री नागपदम रय सारो वालमीकि देवाणंद अपारो ।
महाबल गलसेन राय, वीर राज भूमि पाल मनोहर ।
देवराज सर्व भूति नरसेर राजपाल नर राय ॥६
विहरमाण जिण वीसइताय, हिववन्ति सुहरराई ।
जिण मार्याति सुतणा, ए नाम सत्य कि देवि सुतारा विजया ।
भूय नंदा देव सेना माय, सुमंगला अति अभिराम ॥७
वीर सेण दिण दिण जयवंती, मंगलावती महियलि गुणवंती ।
दीवई विजयावंती भद्दा सरसति पउमा राणी ।
रेणु महिमा महीपलि, जागी यशोन्वलाउदवंती ॥८
अथ अढईयउ, मेना महीपलि सार
भानमती सुविचार, उमादेवि जणणीए
गंगकनी निक मनीए ॥९

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिण वरूलंछण एह, वन्नि सुगुण मणि गेह ।
वसह गयंर वरूए, मृग मरकटु घरए ॥१०

सूरचंद वण राजु, कुंजरु हिय करु माणु ।
शंख वसुह विमल निम्मल वर कमल ॥११

कमल सुधाकर सूर धवल ॰रंधर सूर ।
गयवर हिम कारिण, सत्थिवयर रयण ॥१२

फाग-दिववन्ति सुतंसुधर घरणीस कर्मणि बहिनीय नाहि
पियंगुलतां मनुमोहिनि, माहिनि अति सुविचार
किं पुरुषा जयसेना, वीर सेना अभिराम,
जयावंती या पुक्खवंतीया नंदिसेणा गुणताम ॥१३

विमला विजयावंतीय लीलावंतीय सुगंध,
गंधसेना भद्रवंतीय मोहनिमोह प्रबंध ।
राय तणा मनुमोहई सोहइ श्रीरायसेणं,
सूरजकंत सु राजइ गाजइ गुणमतिगेह ॥१४

पउमावह पटराणीय रूपहि रे रंळलाल, रयण माला
वरुतणीय मृग नथणीया सुकुमाल ।
इण परि जग गुरुनामतापतसुमाय,
लंछण तसु धरि धरणीय लथुणीया सुहमाय ॥१५

दयवीस जिणवर सव्व मुहकर विहरमाण जिणेसरा-
जसु चरण सेवइ देव दानव जख्क रस सुकिन्नरा ।
इम भणइ निम्मल भत्रि भावइ देवतिलक मुणीसरो ॥१६

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री जिनमंदिर स्तोत्र

अमर नरराज मुनिराज कृत वंदनं, विकट भवताप संताप भर चंदनं ।
त्रिभुवनानंदनं सार गुण सागरं, भजत जिन नायकं स्वामि सीमंधरा ॥१
प्रणत जन मंडली काम हरि चंदन, सकल संशय हरं सत्यकी नंदनं
चारु चंद्रानन मयित ममता भर ॥ सी २
विपुल कल्याण कमलालिखि मंडलं भावन मंदगिनांज नित सुखमंडल ।
सकल सुख करण समजलछाजल सिंधुरं भ०॥३
दलित दुरितागम सकल भूमंडल दुःख हरणं हसित कमलदललोचनं
सिद्ध ललना ललित संग विलता वरं भ०॥४
विमल केवल तरुणे दलित वितमोभरं,
साम्य कमला विजित रम्य रजनीकरं ।
ललित गति विमल मति ललित गुण बंधुर म० ॥५
मदन मदमत्त मातंग मृग नायकं, वरत रातं शिव शर्म भर रायकं ।
भविदुरित हरण वर चरणनत किन्नरं भ० ॥६
मंगलाराम सुरभि सुयश सोज्ज्वलं, सीर निधि नीर दंडी सदशाभंल
द्यौत कलद्यौतकल कंदला संवर भ० ॥६
भविकजन किरण बौल्लासिरजनी धवं, देवपति भुवनपति भावविहितो
निवडतर कर्म्म भरत सगतरु कुंजरं भ० ॥८
वितत संततिलता मंद जल वाहनं, प्रमद मद मोहगज कुभ पंचाननं
विशद करुणा फल संपदां मंदिरं भ० ॥९
सार सुरभित नय लांछनालंकृतं मोक्षम करंद सुविलासधुपाकृतिं
प्रमेदि नवन क्षिपति मौलि धूं चामरं भ०॥१०
दास दुवीरं भावारित रूपारणं रुद्रदारिद्रय दुर्भाग्य भर वारणं
प्रचुर पुंडरीकिणी कामिनी शेषरं भ० ॥११
प्रचुर चिंता हरण चार चिंतामणि प्रणत लोकेषु निजवंश वासरमणिं
हरि धीर श्रिया जितमलय मंदिर म० ॥१२
इति विजयमान जिनराज एषो द्रुत स्वामि सीमंधरं परण हरखोत्युतः
श्री लब्धि कल्लोल गणि चरणकमलालिना गंगदासेन जिन भलि
भरमालिना ॥१३

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीसीमंधरस्वामिने नमः

(दोहा)

'श्रीसीमंधरस्वामिने नमः' यह मन्त्रः महान ।
ॐ ह्रीं अर्हं जोड दे, तो तो कतीव महान ॥१॥

(आरति)

(तर्जः ॐ जय जगदीश हरे)

श्रीसीमंधरस्वामी, जय सीमंधरस्वामी ।
सीमातीत दयाके (२), सागर गुणधामी.. श्रीसीमंधर०

मंगल के तुम दाता, स्वामी करो अमंगल नाश (२)
धर्म ही सच्चा मगल (२), अमंगल भव-वास....श्रीसीमंधर० १

रम्य मुखकमल तेरा, स्वामी प्रेम परिमल पूर्ण (२)
स्वान्त है नाचने लगता (२), देखते ही जो तूर्ण...श्रीसीमंधर २

मिले एकवार भी दुर्लभ, स्वामी तव दर्शन साक्षात (२)
नेत्र हो धन्य हमारे (२), जन्म-मरणका भी घात : श्रीसीमंधर० ३

नमन हमारा तुझको, स्वामी पल पल अनन्त वार (२)
मस्त बनूँ यों मुझमें (२), ज्यों न उठे को कौ विचार...श्रीसीमंधर०४

सीमंधर सीमंधर, स्वामी सीमंधर सीमंधर (२)
'महेन्द्रमणि' जपे जो हो (२), क्यों न वो भी सीमंधर...श्रीसीमंधर० ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अद्भुत जादूगर

(दोहा)

जादूगर अद्भुत कोई, तू मेरी नजरमें नाथ ।
सारा त्रिभुवन कर लिया, कैसे अपने हाथ ।।

स्तवन

(तर्ज—नील गगनमें उडते बादल आ आ आ)

ओ अद्भुत जादूगर ! दिलमें आ आ आ ।
ज्योतिकी ओर जीवनको ले जा जा जा ।।

मन्त्र न कोई कोई न विद्या नहीं कोई कार्मण योग,
झुकते तुजको फिर भी किस तरह तीन जगतके लोग,
तीनो जगतमें तेरा बश गया छा ... ... ज्योति. १

पशु पंछी और पेड पवन भी जब तुजको अनुकूल,
करुणासागर ! ओर कौन हो तव तुजको प्रतिकूल,
तेरा प्रतिकूल सुख सकता कहाँ पा ... ... ज्योति. २

बिल्ली-उंदर सिंह-गाय जैसे भी आपकी पास,
बन्धुवत् भगिनीवत् बनकर बैठ जाते पास पास,
दिव्य देशना सुनते वे भी दिल ला ... ... ज्योति. ३

कंचन-कमल पे चरण-कमल धर करते सदैव विहार,
सारे चौदह राज ज्योतिसे भरते पांच पांच बार,
नरक-जोव भी जब खुशीमें जाते आ ... ... ज्योति. ४

हुआ न होगा ऐसा कहीं कभी जादूगर कोइ अन्य,
जादूगरी यह क्यों न सिखाएंगे हमको भी अनन्य,
कैसे भी हम जिन गुण 'मणि' ले गा ... ... ज्योति. ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

"ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री सीमन्धर स्वामिने नमः ह्रीं स्वाहा"

For Private And Personal Use Only